खंड

2

बदलती संस्कृति एवं मानवीय मूल्य

इकाई 1

भारतीय संस्कृति एवं मानवीय मूल्य 59

इकाई 2

भारतीय दर्शन में निहित मूल्य 76

इकाई 3

भारतीय समाज में सांस्कृतिक बहुलवाद 89

इकाई 4

सतत विकास मूल्य 100

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

खंड 2 परिचय

इस खंड 2 में चार इकाइयाँ हैं।

इकाई 1 'संस्कृति' और 'मूल्य' शब्दों के अर्थ को परिभाषित करती है और भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों के बीच संबंध का अध्ययन करती है। विविधता के बावजूद भारतीय संस्कृति में मौलिक एकता है जो इसे अद्वितीय बनाती है। इसकी विविधता के बावजूद, इसमें एक 'मौलिक एकता' है जो इसे अद्वितीय बनाती है। संस्कृति के संरक्षण और प्रसारण में परिवार आवश्यक हैं। यह परिवार में है कि बच्चा सबसे पहले साझा करने, देखभाल करने, निःस्वार्थता, सहिष्णुता जैसे मूल्यों का अनुभव करता है और उन्हें आत्मसात करता है। एकता, निष्ठा, अखंडता एक भारतीय परिवार की प्रमुख विशेषताएं हैं जिनमें परस्पर निर्भरता और दूसरों की चिंता पर जोर दिया जाता है।

इकाई 2 भारतीय दर्शन को परिभाषित करती है और इसकी मुख्य अवधारणा और उद्देश्य को विस्तृत करती है, भारतीय दर्शन के विभिन्न विद्यालयों जैसे रूढ़िवादी विद्यालयों और विधर्मी विद्यालयों पर चर्चा की जाती है।

इकाई 3 भारतीय संस्कृति में बहुलवाद के संदर्भ में मूल्यों पर चर्चा करती है। भारतीय संस्कृति बहुलवाद को संरक्षित करने की दिशा में भारतीय संविधान की भूमिका और सांस्कृतिक बहुलवाद पर वैश्वीकरण के प्रभाव का विश्लेषण किया गया है।

इकाई 4 सतत विकास के लिए आवश्यक मूल्यों के परिप्रेक्ष्य पर चर्चा करती है। सतत विकास की अवधारणा को समझना इसके लिए आवश्यक मूल्यों को विकसित करने की पूर्व शर्त है। सतत विकास के लिए मूल्यों को विकसित करने वाली प्रक्रियाओं को विस्तृत रूप से रेखांकित किया गया है। यह इकाई समावेशी शिक्षा, लैंगिक संवेदनशीलता, समुदाय के साथ जीवंत साझेदारी, विविधता को महत्व देने वाली सांस्कृतिक गतिविधियों आदि का वर्णन करती है जो स्कूल के माहौल का अभिन्न अंग होनी चाहिए।

इकाई 1 भारतीय संस्कृति एवं मानवीय मूल्य

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 संस्कृति

1.4 भारतीय संस्कृति पर भौगोलिक प्रभाव

1.5 भारतीय संस्कृति का ऐतिहासिक विकास और भारतीय मूल्यों पर इसका प्रभाव

1.6 भारतीय संस्कृति के विभिन्न घटक

1.7 भारतीय संस्कृति में अंतर्निहित मूल्य

- 1.7.1 धर्म
- 1.7.2 समाज
- 1.7.3 त्यौहार
- 1.7.4 भोजन एवं वस्त्र
- 1.7.5 जातियाँ एवं जनजातियाँ
- 1.7.6 संगीत एवं नृत्य
- 1.7.7 भारतीय कला एवं वास्तुकला
- 1.7.8 भाषा एवं साहित्य
- 1.7.9 राष्ट्रीय प्रतीक

1.8 मूल्यपरक पाठ्यक्रम

1.9 मूल्यों का अनुप्रयोग

- 1.9.1 कुछ अन्य मामलों का अध्ययन

1.10 मूल्य संघर्ष

1.11 सारांश

1.12 बोध प्रश्न के उत्तर

1.13 सन्दर्भ

1.1 प्रस्तावना

'विविधता में एकता' केवल एक वाक्यांश या उद्धरण नहीं है।ये शब्द अत्यधिक विवेकपूर्ण हैं और भारत जैसे देश पर लागू होते हैं जो संस्कृति, विरासत और मूल्यों में अविश्वसनीय रूप से समृद्ध है।इतने सारे धर्म, विश्वास एवंमान्यताएं भारत की संस्कृति की जटिल और मिश्रित संरचना बनाते हैं।5000 वर्ष से भी अधिक पुरानी सभ्यता से चली आ रही भारत की संस्कृति को प्रवासी जनसंख्या द्वारा सुशोभित किया गया है। क्या आप जानते हैं कि यह मिस्र, रोमन और मेसोपोटामिया की सभ्यताओं से भिन्न वर्षों से बची हुई कुछ प्राचीन सभ्यताओं में से एक

है?इसके जीवित रहने का एक कारण वे मूल्य हैं जो भारतीय संस्कृति में गहराई से निहित हैं।पिछले ब्लॉक की इकाइयों ने आपको नैतिकता का एक विचार प्रदान किया। इस इकाई में हम पहले 'संस्कृति' और 'मूल्यों' शब्दों के अर्थ पर चर्चा करेंगे और फिर भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों के बीच संबंध का अध्ययन करेंगे।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपसे अपेक्षा की जाती है कि आप

- मूल्यों को परिभाषित करें
- भारतीय संस्कृति के इतिहास और भारतीय मूल्यों पर इसके प्रभाव पर चर्चा करें;
- भारतीय संविधान में मूल्यों की पहचान करें, *भारतीय संस्कृति के विभिन्न घटकों और मूल्यों की पहचान करें,
- पाठ्यक्रम में मूल्यों के एकीकरण को पहचानें,
- मूल्यों एवं जीवन कौशल तथा भारतीय संस्कृति को वर्णित कर सकें,
- भारतीय संस्कृति और मूल्यों के संभावित संघर्ष क्षेत्रों की पहचान करें

1.3 संस्कृति

"संस्कृति" शब्द का क्या अर्थ है? क्या इसका तात्पर्य संगीत, नृत्य और कला से है या यह व्यापक आधार पर है? क्या यह किसी विशेष क्षेत्र को संदर्भित करता है या यह एक व्यापक भौगोलिक क्षेत्र का आवरण करता है? संस्कृति शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द 'कल्टुरा' से हुई है जो 'कोलेरे' शब्द से निकला है जिसका अर्थ है 'खेती करना'।संस्कृति की सबसे व्यापक रूप से स्वीकृत परिभाषा टायलर (1974) द्वारा दी गई परिभाषा है जिसमें उन्होंने संस्कृति को सभी मानव समाजों में होने वाली गतिविधियों के व्यापक समूह के रूप में परिभाषित किया है।इसलिए संस्कृति शब्द का अर्थ किसी विशेष समाज के विचारों, विश्वासों, मूल्यों, ज्ञान, व्यवहार, शिक्षा का एक समूह हो सकता है।नवंबर 2001 में अपनाई गई सांस्कृतिक विविधता पर यूनेस्को की सार्वभौमिक घोषणा, संस्कृति को एक समाज या सामाजिक समूह की विशिष्ट आध्यात्मिक, भौतिक, बौद्धिक और भावनात्मक विशेषताओं के समूह के रूप में परिभाषित करती है, जिसमें कला और साहित्य के अलावा, जीवन शैली, एक साथ रहने के तरीके, मूल्य प्रणाली, परंपराएं और विश्वास शामिल हैं।परिवार, शैक्षणिक संस्थानों और समुदाय जैसी सामाजिक एजेंसियों के माध्यम से संस्कृति व्यक्ति को पूर्णता और परिशोधन की स्थिति में ले जाती है।इस प्रकार सांस्कृतिक उपलब्धियाँ जन्मजात नहीं होती हैं बल्कि समाजीकरण और सीखने की प्रक्रिया के माध्यम से समय के साथ प्राप्त की जाती हैं।इसलिए संस्कृति भाषा, साहित्य, कला, संगीत, नृत्य, मूल्यों, विश्वासों, विचारों, रीति-रिवाजों, परंपराओं आदि के साथ-साथ समाज के आध्यात्मिक, भौतिक, भावनात्मक, बौद्धिक पहलुओं का गठन करती है।

1.4 भारतीय संस्कृति पर भौगोलिकप्रभाव

भारतीय संस्कृति अपनी विशिष्ट भौगोलिक विशेषताओं से प्रभावित है। भारत पांच भौगोलिक प्रभागों वाला एक प्रायद्वीप है,जो निम्नलिखित हैं:

i) उत्तरी भारत के पर्वत जो मुख्यतः हिमालय पर्वत श्रृंखला हैं।

ii) सिंधु, गंगा, ब्रह्मपुत्र नदी घाटियों में उत्तरी मैदान

iii) मध्य भारतीय पठार

iv) दक्षिण भारतीय पठार और

v) तटीय क्षेत्र

भारतीय कला, वास्तुकला, आध्यात्मिकता, संगीत, नृत्य सभी इन भौगोलिक विशेषताओं से प्रभावित हैं। विंध्य के दक्षिण में विशिष्ट द्रविड़ संस्कृति विकसित हुई है जो उत्तरी आर्य संस्कृति से भिन्न है। भारतीय संस्कृति ने एशिया, दक्षिण-पूर्व एशिया और दुनिया के कई हिस्सों को प्रभावित किया है।

1.5 भारतीय संस्कृति का ऐतिहासिक विकास और भारतीय मूल्यों पर इसका प्रभाव

भारतीय मूल्य भारतीय संस्कृति में गहराई से निहित हैं।पिछले 5000 वर्षों में भारतीय संस्कृति ने विभिन्न प्रभावों पर अलग-अलग प्रतिक्रिया दी है और इसने विभिन्न संस्कृतियों के तत्वों को संरक्षित, अवशोषित और आत्मसात किया है और "यही भारतीय संस्कृति और सभ्यता की सफलता का रहस्य है", (राधाकृष्णन, 1929)। भारतीय सभ्यता का पता ईसा पूर्व 2800 में लगाया जा सकता है, जिसमें अत्यधिक विकसित शहरी हड़प्पा सभ्यता और उसके बाद ग्रामीण आधारित आर्य सभ्यता का स्थान आता है।यूनानियों, शकों, कुषाणों, हूणों के विदेशी आक्रमण, प्राचीन काल में गुप्तों, मौर्यों की सभ्यताएँ, 8वीं शताब्दी ई. सल्तनत पर अरब आक्रमण, "महान मुगलों की भारतीय मुस्लिम सभ्यता का उच्च उत्कर्ष" (मध्ययुगीन काल में बाशम, 2007) और आधुनिक काल में ब्रिटिश शासन के दौरान "पश्चिमी प्रभाव की पूरी ताकत" (बाशम, 2007) ने भारतीय संस्कृति को प्रभावित किया है।यह आत्मसात और अवशोषण देश के धर्म, कला, वास्तुकला, भाषा और विभिन्न जीवन शैली में देखा जा सकता है। कला और वास्तुकला में, बौद्ध विषयों पर यूनानी शैली के प्रभाव का सबसे अच्छा उदाहरण गांधार कला विद्यालय था। इंडो-इस्लामिक संश्लेषण को कला के विभिन्न क्षेत्रीय स्कूलों जैसे कांगड़ा, डेक्कन और मुगल चित्रकला शैलियों और वास्तुकला में भी देखा जा सकता है। भारतीय भाषा उर्दू भी फ़ारसी प्रभाव का परिणाम थी। श्रीवास्तव (2009) के अनुसार भारतीय जीवन और संस्कृति में अन्य सभ्यताओं का योगदान भारतीयों में यह विचार पैदा करता है कि पूरी दुनिया एक परिवार है: 'वसुधैव कुटुंबकम'। विश्व बन्धुत्व के मूल्य को इसी प्रकार पोषित किया गया है। यहां भाषाई, धार्मिक विविधता है जो 'मौलिक एकता' के साथ-साथ मौजूद है (स्मिथ, 1981) और यही इसे अद्वितीय बनाती है।विभिन्न धर्मों, भाषाओं की उपसंस्कृतियाँ हो सकती हैं लेकिन भारतीय संस्कृति वह राष्ट्रीय संस्कृति है जिसने एशिया, दक्षिण-पूर्व एशिया और विश्व के कई अन्य भागों को प्रभावित किया है।

1.6 भारतीय संस्कृति के विभिन्न घटक

भारतीय संस्कृति के कई अलग-अलग हिस्से हैं; प्रत्येक एक दूसरे के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है और इसमें जटिलतासे बुने हुए मूल्य हैं। इनमें से कुछ को चित्र 1 में दर्शाया गया है:

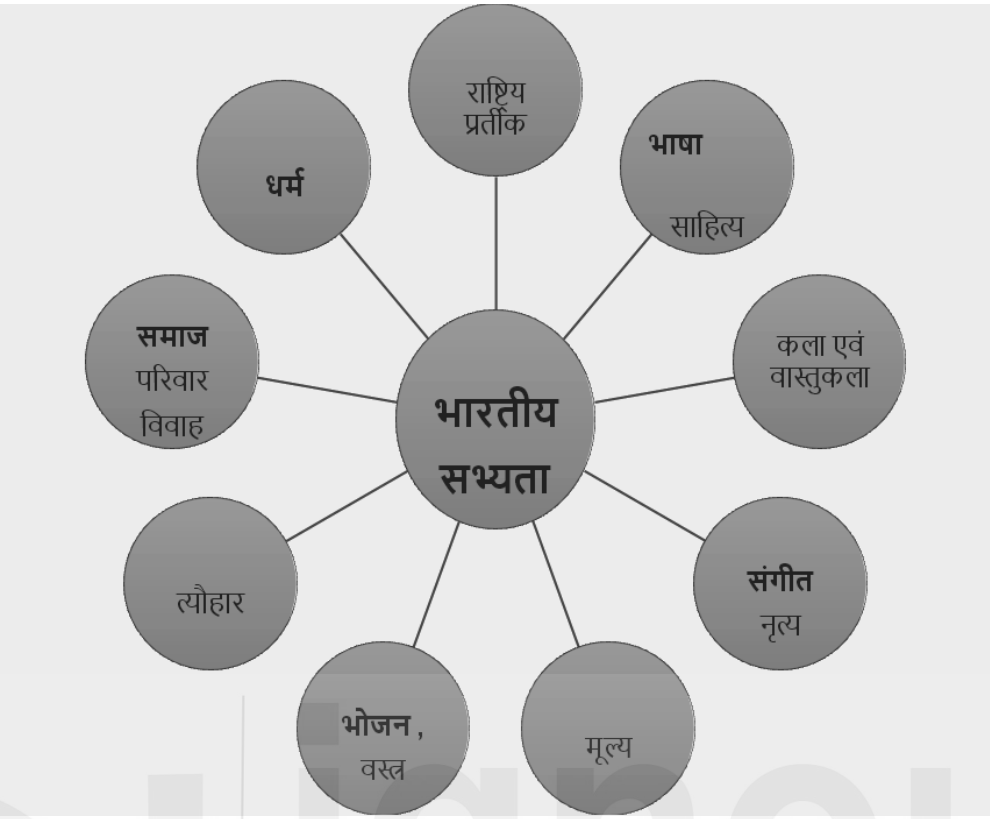

चित्र .1. भारतीय संस्कृति के घटक

1.7 भारतीय संस्कृति में अंतर्निहित मूल्य

मूल्य क्या है? हम अपने जीवन में मूल्यों को कैसे शामिल करें? हम उन मूल मूल्यों को कैसे प्राथमिकता दें और पहचानें जो हमारे जीवन को निर्धारित करेंगे?फरवरी 1999 में मूल्य शिक्षा पर भारतीय संसदीय समिति ने पाँच प्रमुख सार्वभौमिक मूल्यों की पहचान की: (a) सत्य (b) धार्मिक आचरण (c) शांति (d) प्रेम और (e) अहिंसा। ये मूल्य भारतीय परंपरा और संस्कृति के विभिन्न स्रोतों से प्राप्त हुए हैं जैसा कि आपको भारतीय दर्शन के मूल्यों पर इकाई का अध्ययन करते समय पता चलेगा। शिक्षक के रूप में, हमें अपने विद्यार्थियों में इन संबद्ध मूल्यों को कैसे विकसित करना चाहिए? आइए सबसे पहले "मूल्य" शब्द का अर्थ समझने का प्रयास करें।

a) मूल्य शब्द का स्रोत

वैल्यू शब्द लैटिन शब्द 'वेलेरे' से लिया गया है जिसका अर्थ है 'मजबूत होना, प्रबल होना या मूल्यवान होना।' सामाजिक वैज्ञानिकों का कहना है कि वैल्यू शब्द की लगभग 180 अलग-अलग परिभाषाएँ हैं।'

मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी में सामाजिक मनोविज्ञान के प्रोफेसर मिल्टन रोकीच मूल्य को इस प्रकार परिभाषित करते हैं, 'जिस तरह से चीजें की जानी चाहिए या हम जो लक्ष्य चाहते हैं उसके बारे में एक स्थायी विश्वास।' इसलिए मूल्य एक ऐसी चीज है जिसके बारे में हम मानते हैं कि यह लंबे समय तक चलने वाला है। यह हमारे काम करने के तरीके और हम क्या हासिल करने की उम्मीद करते हैं, इसे प्रभावित करता है।

उदाहरण के लिए, यदि आप "कड़ी मेहनत" को एक मूल्य मानते हैं, तो यह कुछ ऐसा है जिस

पर आप विश्वास करते हैं। आप जो भी करेंगे, आप उसमें कड़ी मेहनत करेंगे, और यह उन लक्ष्यों में से एक है जिसे आप हासिल करना चाहते हैं। आमतौर पर हम जो मूल्य बनाते हैं वे हमारी परिस्थितियों, परिवारों, दोस्तों, उम्र, लिंग, पर्यावरण, परंपरा और संस्कृति से प्रभावित होते हैं। निर्णय लेने में मूल्य महत्वपूर्ण हैं।

भारतीय संविधान की प्रस्तावना में बताए गए उद्देश्य एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य के भीतर न्याय, स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व के मूल्यों को स्पष्ट रूप से प्रतिपादित करते हैं।बख्शी पी.एम. (2000)के अनुसार 'बहुलवाद भारतीय संस्कृति का आधार है और धार्मिक सहिष्णुता भारतीय धर्मनिरपेक्षता का आधार है।' अनुच्छेद 14(4) और 16(4) का उद्देश्य सामाजिक और आर्थिक असमानता को दूर करना और समान अवसर सुनिश्चित करना है। अनुच्छेद 14, 15, 16, 21, 38, 39 और 46 समाज के गरीब, वंचित और विकलांग नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता को सार्थक बनाने के लिए हैं। श्री एस.बी. चव्हाण की अध्यक्षता में गठित मूल्य शिक्षा पर संसदीय समिति ने फरवरी 1999 में भारतीय संसद को दी अपनी रिपोर्ट में पांच प्रमुख सार्वभौमिक मूल्यों की पहचान की है: (a) सत्य; (b) धार्मिक आचरण; (सी) शांति; (डी) प्यार; और (ई) अहिंसा, जो मानव व्यक्तित्व के पांच प्रमुख क्षेत्रों, अर्थात् बौद्धिक, शारीरिक, भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक का भी प्रतिनिधित्व करती है। ये मूल्य शिक्षा के पांच प्रमुख उद्देश्यों, अर्थात् ज्ञान, कौशल, संतुलन, दृष्टि और पहचान से संबंधित हैं।

1.7.1 धर्म

भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है और नागरिकों को अपने धर्म का पालन करने की स्वतंत्रता है। यहां धार्मिक सहिष्णुता का माहौल है और कोई आधिकारिक राज्य धर्म नहीं है। चार प्रमुख धर्म: हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सिख धर्म की उत्पत्ति भारत में हुई, जबकि ईसाई धर्म 52 ईसा पूर्व में भारत में आया था। 8वीं शताब्दी ई. तक इस्लाम ने भी यहां घर बना लिया। सताए गए यहूदियों को भारत में आश्रय मिला और उन्होंने देश में यहूदी धर्म की शुरुआत की। पारसियों (जोरोस्टर के अनुयायी) ने भी ईरान पर अरब विजय के बाद भारत में शरण ली। पूजा का भक्ति पहलू सूफीवाद और भक्तिवाद के रहस्यवाद का आधार है। आधुनिक भारत में, धार्मिक पुस्तकें प्रेरणा का एक बड़ा स्रोत बनी हुई हैं। सहिष्णुता, शांति और वैराग्य के मूल्य महाकाव्यों, भगवद-गीता में, गुरुग्रंथ की सेवा और समानता के मूल्यों में, बाइबिल के प्रेम और करुणा में, कुरान की दानशीलता में व्यक्त किए गए हैं - सूची अंतहीन है। सहिष्णुता और धर्मपरायणता को भारत की धार्मिक विविधता का मुख्य मूल्य माना जाता है।

1.7.2 समाज

समाज की सबसे छोटी इकाई-परिवार, सांस्कृतिक प्रथाओं के रूप में विवाह और त्यौहारों पर नीचे चर्चा की गई है:

a) परिवार

परिवार समाज की मूल इकाई है। संयुक्त परिवार प्रणाली (जहां एक परिवार के विभिन्न सदस्य जैसे दादा-दादी, माता-पिता, चाचा-चाची, चचेरे भाई-बहन एक साथ रहते हैं) को अब कई शहरों में एकल परिवार (यानी छोटे परिवार जिसमें केवल माता, पिता और बच्चे शामिल होते हैं) द्वारा प्रतिस्थापित किया जा रहा है। भारतीय समाज अधिकतर

पितृसत्तात्मक समाज है जिसमें पिता प्रमुख है। हालाँकि, भारत में चार मातृसत्तात्मक समाज हैं: गारो, खासी, मेघालय (उत्तर-पूर्वी भारत) में जयन्तिया एवं केरल (दक्षिण भारत) के नायर। संस्कृतियों के संरक्षण और प्रसारण में परिवार आवश्यक हैं। व्यक्ति की परंपराओं, विश्वासों, विचारों, मूल्य प्रणाली का पोषण उस परिवार द्वारा किया जाता है जिसमें वह जन्म लेता है।भारत में परिवार केन्द्रक बनता है, जिसके चारों ओर बच्चा विकसित होता है और साझा करने, देखभाल करने, निःस्वार्थता और सहिष्णुता के मूल्यों को आत्मसात करता है।एकता, निष्ठा, अखंडता एक भारतीय परिवार की प्रमुख विशेषताएं हैं जिनमें परस्पर निर्भरता और दूसरों के लिए चिंता पर ज़ोर दिया जाता है।परंपरागत रूप से, भारत मेंपरिवार सभी आश्रित सदस्यों जैसे बूढ़े, अविवाहित वयस्कों, विधवाओं, विकलांगों एवं शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक तथा आर्थिक रूप से विकलांग लोगों का समर्थन करता है।हाल के दिनों में, संशोधित विस्तारित परिवार ने पारंपरिक संयुक्त परिवार का स्थान ले लिया है।

b) विवाह

भारत में विवाह अधिकतर माता-पिता द्वारा तय किये जाते हैं। ऐसे विवाह जिनमें पुरुष या महिला अपना साथी स्वयं चुनते हैं, अभी भी उतने लोकप्रिय नहीं हैं। दुर्भाग्य से, बाल विवाह निषेध अधिनियम 2006 के बावजूद, बाल विवाह जारी है, जिसके तहत 18 साल से कम उम्र की लड़कियों और 21 साल से कम उम्र के लड़कों को शादी करने की अनुमति नहीं है। भारतीय संस्कृति में, व्यक्ति एक परिवार में विवाह करते हैं और पश्चिमी संस्कृति की तरह केवल दो व्यक्तियों के बीच एक बंधन के बजाय परिवारों का बहुत अच्छा बंधन होता है।नवविवाहित जोड़ा आम तौर पर एक विस्तारित पारिवारिक रिश्ते में प्रवेश करता है और दुल्हन ससुराल वालों के साथ अपना नया घर स्थापित करती है। परंपरागत रूप से, विवाह पवित्र होते हैं। धार्मिक अनुष्ठान विवाह समारोहों का अभिन्न अंग हैं। शादी अपने आप में एक विस्तृत समारोह है, जिसमें बहुत सारी दावतें और उत्सव होते हैं।विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े विभिन्न विवाह समारोहों में भारतीय संस्कृति की विविधता स्पष्ट होती है।

1.7.3 त्योहार

भारत में लगभग पूरे वर्ष त्यौहार मनाये जाते हैं। अधिकांश का धार्मिक महत्व है तथा प्रार्थनाएँ किसी भी त्योहार का एक अनिवार्य हिस्सा हैं। त्योहारों में परिवारों और दोस्तों का मिलन एवं एक साथ खाना खाना भी शामिल होता है|परिवार की महिलाएँ व्यंजन बनाती हैं जिनका सभी आनंद लेते हैं। इसमें संगीत होता है, भक्ति गीत गाए जाते हैं और कभी-कभी नृत्य भी किया जाता है। प्रायः शाम को पूरे समुदाय को शामिल करते हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं एवं बच्चों को विशेष रूप से अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में, पूरे गाँव के समुदाय त्योहार मनाने के लिए इकट्ठा होते हैं।ग्रामीण क्षेत्रों में, पूरे गाँव के समुदाय त्योहार मनाने के लिए एकत्रित होते हैं। मनाए जाने वाले कुछ त्योहार हैं: दुर्गा पूजा, दशहरा, दिवाली, गणेश चतुर्थी, संक्रांति, पोंगल, ओणम, होली, ईद, बक़रीद, क्रिसमस, गुरु नानक जयंती, आदि। गणतंत्र दिवस और स्वतंत्रता दिवस जैसे त्योहार सभी के द्वारा मनाया जाता है|

त्यौहार उन सभी लोगों के आर्थिक और सामाजिक विकास में योगदान करते हैं जो उसमें सम्मिलित होते हैं।यह शिल्पकारों, कलाकारों और संगीतकारों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने और अपनी कमाई बढ़ाने का अवसर देता है। विभिन्न समुदायों के सदस्यों के साथ विभिन्न त्योहारों को मनाने से भारतीय संस्कृति की विविधता का अनुभव होता है। छात्र स्कूल में एक 'त्योहार दिवस' का आयोजन कर सकते हैं, जिसमें वे विभिन्न त्योहार मना सकते हैं।वे पूजा के लिए एक साझा मंच की व्यवस्था कर सकते हैं, जिसे रंगोली से सजाया जा सकता है और विभिन्न धर्मों का प्रतिनिधित्व करने वाली विशेष प्रार्थनाएं आयोजित की जा सकती हैं, भक्ति गीत गाए जा सकते हैं। वे त्योहारों से जुड़े व्यंजन जैसे खीर, क्रिसमस केक, लड्डू आदि भी ला सकते हैं| वे रंगीन पोशाकें पहन सकते हैं।ये सभी छात्रों को सहिष्णुता, साझा करने, सहयोग, सुनने और योजना विकसित करने संगठित करने, विश्लेषण करने, प्राथमिकता देने, पारस्परिक और अंतर्वैयक्तिक कौशलके मूल्यों को अपनाने में सक्षम बनाते हैं।

1.7.4 भोजन एवं वस्त्र

a) भोजन

भारत में, भोजन को न केवल इसलिए महत्व दिया जाता है क्योंकि यह पौष्टिक होता है, बल्कि इसलिए भी कि इसे भगवान का उपहार माना जाता है। बचपन से, माता-पिता बच्चों को भोजन बर्बाद न करने और इसे दोस्तों और परिवार के साथ साझा करने की शिक्षा देते हैं। स्वच्छता संबंधी कारणों से भोजनप्रायः दाहिने हाथ से खाया जाता है। उत्सव के अवसरों पर व्यंजन बनाए जाते हैं और ये अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग होते हैं। भूखों और गरीबों को खाना खिलाना भारत के प्रमुख धर्मों की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। व्यक्ति और धर्मार्थ संगठन अक्सर गरीबों के लिए भोजन कार्यक्रम आयोजित करते हैं। भारतीय पक्षियों और जानवरों को भी खाना खिलाते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि कुछ समूहों का मानना है कि सजीव और निर्जीव वस्तुओं में आत्मा होती है। शाकाहार भारतीयों के बीच लंबे समय से लोकप्रिय रहा है। ऐसा माना जाता है कि अहिंसा या अपरिग्रह का पालन करने के लिए व्यक्ति को मांस खाने से बचना चाहिए, क्योंकि इसमें जानवरों की हत्या शामिल है।परन्तु सभी को अपनी इच्छानुसार भोजन चयन करने की स्वतंत्रता दी जाती है। सभी समुदायों में उपवास लोकप्रिय है। मसालों की समृद्ध विविधता के साथ भारतीय व्यंजनों की विविधता इसे दुनिया के सबसे शानदार व्यंजनों में से एक बनाती है।चावल, गेहूं, दाल सार्वजनिक आहार हैं लेकिन अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग मसालों के साथ पकाया जाता है और स्वाद भी बिल्कुल अलग होता है। छात्रों को विभिन्न प्रकार के दैनिक खाद्य पदार्थों की सरल तैयारी के साथ 'खाद्य महोत्सव' की व्यवस्था करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है; रेसिपी पुस्तकें तैयार रखें और प्रदर्शनियाँ आयोजित करें। वे अपने इलाके में व्यक्तिगत/धर्मार्थ संगठनों की सामुदायिक रसोई में भी सहायता कर सकते हैं। छात्र रमज़ान या उपवास के किसी भी पूजा दिवस के दौरान एक दिन या उसके कुछ भाग के लिए अपने मित्रों के उपवास में शामिल हो सकते हैं।

b) वस्त्र

महिलाओं के लिए पारंपरिक भारतीय परिधान साड़ी, घाघरा, सलवार कमीज हैं। हर राज्य का अपना अलग अंदाज है. पुरुषों के लिए, पारंपरिक कपड़े धोती-कुर्ता, कुर्ता-

पायजामा आदि हैं। हालांकि, उत्तर-पूर्वी राज्यों में पुरुष और महिलाएं अपने पारंपरिक कपड़े पहनते हैं जो बहुत रंगीन होते हैं और जिनमें कई अलग-अलग नमूने होते हैं। भारत में कपड़े परंपरा, संस्कृति की विविधता एवं पारिवारिक गौरव से जुड़े हैं। ये महज़ फ़ैशन स्टेटमेंट नहीं हैं|प्रायः लड़कियां और महिलाएं ऐसे कपड़े पहनती हैं जो शरीर को ढकते हैं और उन्हें खुला नहीं छोड़ते। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम मानते हैं कि शरीर पवित्र है और भगवान का मंदिर है। महिलाएं अपने केशविन्यास, आभूषणों और सौंदर्य प्रसाधनों में हमेशा नये नये प्रयोग करती रही हैं, जिसका इतिहास प्राचीन हड़प्पा सभ्यता से जुड़ा है। छात्रों को प्रदर्शनी आयोजित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, जिसमें वे पुराने और नए को मिलाकर नए फ़ैशन बना सकें। यह सब लागत प्रभावी तरीके से व्यवस्थित किया जा सकता है और पुनर्नवीनीकरण सामग्री का उपयोग किया जा सकता है।

बोध प्रश्न 1

i) चित्रकला के विभिन्न विद्यालय कौन से हैं?

.....

.....

.....

ii) भारतीय संस्कृति में भोजन का क्या महत्व है?

.....

.....

.....

1.7.5 जातियाँ एवं जनजातियाँ

भारतीय संस्कृति, जनजातीय संस्कृति, संगीत, नृत्य और हस्तशिल्प की विविधता से समृद्ध है।इन आदिवासी परंपराओं की रक्षा करनी होगी| सभी के अधिकारों की रक्षा सहानुभूति और सामाजिक न्याय के साथ करनी होगी। मौलिक अधिकारों का अनुच्छेद 17, अस्पृश्यता के अंत की घोषणा करता है। राज्य के नीति निदेशक सिद्धांतों के अनुच्छेद 46 में, संवैधानिक सुरक्षा उपाय राज्य को "लोगों के कमजोर वर्गों और विशेष रूप से अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के शैक्षिक और आर्थिक हितों को विशेष देखभाल के साथ बढ़ावा देने" का प्रावधान करते हैं। उन्हें सामाजिक अन्याय और सभी प्रकार के शोषण से बचाएं।" अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ी जातियों के लिए शिक्षा और रोजगार में सुरक्षात्मक आरक्षण है। शिक्षकों द्वारा छात्रों को भारतीय संविधान के मौलिक अधिकारों, मौलिक कर्तव्यों तथा राज्य नीति के निदेशक सिद्धांतों और मानव अधिकारों एवं बाल अधिकारों की संयुक्त राष्ट्र घोषणा से परिचित कराना है।

1.7.6 संगीत एवं नृत्य

क्षेत्र के आधार पर संगीत और नृत्य कई प्रकार के होते हैं, फिर भी ये एकता का एक मजबूत बंधन बनाते हैं। वे त्योहार समारोहों की एक अभिन्न विशेषता हैं और लोगों को बिना किसी

ख़तरे के एक साथ लाते हैं। यह सौंदर्य बोध को आकर्षित करता है। बचपन से ही माताएं बच्चों को अपने क्षेत्र के संगीत और नृत्य से परिचित होने के लिए प्रोत्साहित करती हैं और साथ ही दूसरे क्षेत्र के संगीत और नृत्य का भी सम्मान करती हैं। भारतीय संगीत और नृत्य को (i) शास्त्रीय (ii) लोक और (iii) लोकप्रिय के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। नाटक और रंगमंच का संगीत और नृत्य से गहरा संबंध है।

a) संगीत

शास्त्रीय भारतीय संगीत दो प्रकार का है: (i) कर्नाटक (दक्षिण भारत) और (ii) हिंदुस्तानी (उत्तर भारत)। लोक संगीत में बंगाल के बाउल, गुजरात की लावणी; बंगाल का रवीन्द्र संगीत, राजस्थान की रुदाली, संगीत की एक अन्य शैली है। इनके अलावा, हमारे पास भजन, भक्तिगीत, कव्वाली, ग़ज़ल आदि हैं। लोकप्रिय संगीत भारतीय फिल्म उद्योग का संगीत या "फ़िल्मी गीत" है।

b) संगीत वाद्ययंत्र

भारतीय तारयुक्त वाद्ययंत्र हैं सितार, सरोद, सारंगी, एसराज, तानपुरा, संतूर, विचित्र वीणा, वायलिन।तबला, पखावज, मृदंगम, ढोलक, तबला ताल वाद्यहैं।बांसुरी, शहनाई पवन वाद्ययंत्र हैं। पानी का उपयोग करने वाला एक और अनोखा लेकिन प्राचीन वाद्य यंत्र जल तरंग है, जो एक तरंग वाद्ययंत्र है।

c) गायक एवं संगीतकार

गुलाम बड़े अली (हिंदुस्तानी), एम.एस.सुबलक्ष्मी (कर्नाटक), जगजीत सिंह (गज़ल), लता मंगेशकर, आर.डी.बर्मन, रफी अहमद, किशोर कुमार, (भारतीय फिल्म संगीत), प्रसिद्ध गायक हैं, ए.आर.रहमान (संगीतकार, संगीतकार, गायक) फिल्म "जय हो" में अपनी संगीत रचना के लिए 2009 में ऑस्कर जीता। अन्य प्रसिद्ध संगीतकार रवि शंकर (सितार), पंडित शिव कुमार शर्मा (संतूर), आबिदा परवीन (सूफी) और हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी) हैं।

d) नृत्य

भारतीय शास्त्रीय नृत्य आमतौर पर देवी-देवताओं को श्रद्धांजलि के साथ शुरू होते हैं और विषय आमतौर पर सृजन, संरक्षण और विनाश होते हैं।शास्त्रीय नृत्य अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग होते हैं। भारत की राष्ट्रीय संगीत, नृत्य और नाटक अकादमी के अनुसार इनमें सबसे प्रसिद्ध हैं भरतनाट्यम (तमिलनाडु), कथक (उत्तरी भारत), सत्रिया (असम), कुचिपुड़ी (आंध्र प्रदेश), कथकली (केरल), मोहिनीअट्टम (केरल), मणिपुरी (मणिपुर), और ओडिसी (उड़ीसा)। लोक नृत्य दैनिक जीवन से निकटता से जुड़े हुए हैं और भोजन-संग्रह, कटाई, संस्कार, रीति-रिवाजों और मान्यताओं पर आधारित हैं। भारत के लोकप्रिय लोक नृत्य हैं पुरुलिया छाऊ (पश्चिम बंगाल), रंगोली बिहू, (असम), भांगड़ा (पंजाब), डांडिया रास (गुजरात), गरबा (गुजरात), घूमर (राजस्थान)। कुछ प्रसिद्ध नर्तक हैं गुरु बिपिन सिंह (मणिपुरी), बिरजू महाराज (कथक), कलामंडलम रमनकुट्टी नायर (कथकली), रुक्मिणी देवी अरुंडेल, (भरतनाट्यम), केलुचरण महापात्र (ओडिसी)। आधुनिक भारतीय नृत्य काआरं उदय शंकर ने किया था। मृणालिनी साराभाई, मल्लिका साराभाई, सोनल मानसिंह प्रसिद्ध समकालीन नर्तकियाँ हैं। नाटक और रंगमंच का संगीत

और नृत्य से गहरा संबंध है। विश्व की सबसे पुरानी जीवित थिएटर परंपराओं में से एक केरल का 2000 साल पुराना कुटियाट्टम है। ग्रामीण भारत में कठपुतली थियेटर बहुत लोकप्रिय है। रवीन्द्रनाथ टैगोर के नृत्य नाटक अद्वितीय हैं। ग्रुप थिएटर एक अन्य प्रकार का थिएटर है जिसे गुब्बी वीरन्ना, उत्पल दत्त, ख्वाजा अहमद अब्बास, के.वी. सुब्बन्ना, नंदीकर, बादल सरकार, निनासम और पृथ्वी थिएटर ने लोकप्रिय बनाया।

1.7.7 भारतीय कला एवं वास्तुकला

पारंपरिक भारतीय कला और वास्तुकला की अपनी अनूठी विशेषताएं हैं लेकिन यह कई विदेशी प्रभावों के समावेश और अवशोषण से भी समृद्ध हुई है। बौद्ध अजंता और एलोरा पेंटिंग प्राचीन भारतीय कला के सबसे पुराने जीवित उदाहरण हैं। मधुबनी पेंटिंग, मैसूर पेंटिंग, राजपूत पेंटिंग, तंजौर पेंटिंग, क्षेत्रीय कला की विभिन्न शैलियाँ हैं। मुगल चित्रकला का स्कूल 1549 में हुमायूँ (1530-56) के शासनकाल में आरंभ हुआ। औरंगजेब के शासनकाल (1659-1707) के अंतर्गत कई कलाकार राजपूत दरबारों में शामिल हुए और हिंदू चित्रकला पर उनका प्रभाव बहुत अधिक था। ब्रिटिश शासनकाल मेंभारतीय कलाकारों ने अपने यूरोपीय संरक्षकों को खुश करने के लिए घटिया नक़ल बनाने के लिए पश्चिमी शैलियों को अपनाया। हालाँकि, पटुआ स्क्रॉल पेंटिंग को 20वीं सदी में पुनर्जीवित किया गया था। राष्ट्रवादी स्वतंत्रता संग्राम ने भारतीय चित्रकला को प्रभावित किया और इस प्रकार रवीन्द्रनाथ टैगोर, नंदलाल बोस और जामिनी रॉय की बंगाल चित्रकला शैली का उदय हुआ। अमृता शेर गिल, राम किंकर, चिंतामणि कर, राजारवि वर्मा, बी.वेंकटप्पा और अमीना अहमद ने भी पेंटिंग की अपनी अनूठी शैली विकसित की।

a) वास्तुकला

भारतीय वास्तुकला का सबसे पहला उदाहरण शहरी हड़प्पा सभ्यता का था, जिसमें उन्नत नगर योजना, महान स्नानघर, महान अन्न भंडार, कांस्य नृत्य करने वाली लड़की और मोहन-जोदारो का दाढ़ी वाला आदमी था। अन्य प्राचीन वास्तुशिल्प चमत्कारों में अशोक स्तंभ, सांची स्तूप, गांधार, मथुरा, अमरावती कला विद्यालय, लौह स्तंभ, कोणार्क सूर्य मंदिर, चोल मंदिर, महाबलीपुरम रॉक-कट मंदिर, मदुरै का मीनाक्षी मंदिर, गोलकुंडा, जैसलमेर,ग्वालियर और अजमेर के ऐतिहासिक किले शामिल हैं।

भारत में इस्लामी वास्तुकला का आरंभ दिल्ली सल्तनत के समयहुआथा, जिसका सबसे अच्छा उदाहरण कुतुब मीनार है। मुग़ल वास्तुकला के नमूने हुमायूँ का मकबरा, आगरा क़िला और फ़तेहपुर सीकरी हैं। शाहजहाँ के शासनकाल (1628-58) के दौरान, ताज महल का निर्माण उसकी प्रिय पत्नी मुमताज़ महल की याद में किया गया था।जहाँगीर के समय में निर्मित लाल किला बलुआ पत्थर के बजाय संगमरमर के उपयोग के लिए अद्वितीय था।ब्रिटिश वास्तुकला के सर्वोत्तम उदाहरण सेंट पॉल कैथेड्रल, सेंट जॉन चर्च, सेंट एंड्रयूज चर्च, सेंट जॉर्ज चर्च और बायकुला चर्च हैं।बॉम्बे बंगला शैली के घर और औपनिवेशिक वास्तुकला ब्रिटिश वास्तुकला की मुख्य विशेषताएं थीं।

1.7.8 भाषा एवं साहित्य

भाषा संस्कृति का एक प्रमुख घटक है। यह वह माध्यम है जिसके माध्यम से प्रभावी संचार होता है। भाषा सबसे पहले परिवार में सीखी जाती है और फिर औपचारिक रूप से स्कूल में

विकसित की जाती है। यदि कोई व्यक्ति बोलना, पढ़ना और लिखना नहीं जानता तो वह जीवन भर विकास के अवसरों से वंचित रहेगा। इसलिए शिक्षा का भाषा और साहित्य के विकास से गहरा संबंध है। मातृभाषा का ज्ञान महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके बिना संस्कृति और परंपरा का संचार नहीं हो पाएगा।

a) भारतीय साहित्य

भारतीय साहित्य विश्व के प्राचीनतम साहित्यों में से एक है। आरंभिक रचनाएँ गाने या सुनाने के लिए बनाई गई थीं और लिखे जाने से पहले कई पीढ़ियों तक प्रसारित की जाती थीं। इसकी शुरुआत ऋग्वेद से हुई। इसलिए संस्कृत साहित्य में वेद, उपनिषद, मनुस्मृति, महाकाव्य, महाभारत और रामायण, कालिदास का 'अभिजनम शाकुंतलम' शामिल हैं। शास्त्रीय भारतीय साहित्य में तमिल संगम साहित्य, पाली कैनन, जातक, धम्मपद शामिल हैं। वास्तु शास्त्र वास्तुकला और नगर नियोजन का विवरण देता है, और अर्थशास्त्र राजनीति विज्ञान पर एक ग्रंथ है। मध्यकालीन साहित्य के अंतर्गत 9वीं-11वीं शताब्दी का कन्नड़, तेलुगु का क्षेत्रीय साहित्य आता है। बाद में मराठी, बांग्ला, हिंदी, फ़ारसी और उर्दू में साहित्य का विकास हुआ। ब्रिटिश शासन काल में पश्चिमी विचारधारा के प्रभाव और प्रिंटिंग प्रेस के आगमन से साहित्यिक क्रांति हुई। स्वतंत्रता संग्राम और सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों के कारण भारतीय साहित्य, विशेषकर राम मोहन राय और स्वामी विवेकानन्द के साहित्य का विकास हुआ।

रवीन्द्रनाथ टैगोर (जिन्होंने 1913 में "गीतांजलि" के लिए साहित्य का नोबेल पुरस्कार जीता था), 'दिनकर', सुब्रमण्यम बाराथी, बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय, मुंशी प्रेमचंद, मुहम्मद इकबाल, देवकी नंदन खत्री कुछ महत्वपूर्ण लेखक हैं। आधुनिक भारत में, प्रसिद्ध लेखक गिरीश कर्नाड, इंदिरा गोस्वामी, महाश्वेता देवी, अमृता प्रीतम, कुर्रतुलैन हैदर,टी.एस.पिल्लई, विक्रम सेठ, अरुंधति रॉय आदि हैं।

भारत की भाषाई विविधता सर्वविदित है। आधिकारिक तौर पर मान्यता प्राप्त बाईस भाषाएँ और कई बोलियाँ हैं।

1.7.9 राष्ट्रीय प्रतीक

भारत में राष्ट्रीय प्रतीक भारतीय संस्कृति और परंपरा का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे एकता, सच्चाई और देशभक्ति का प्रतीक हैं। राष्ट्रीय प्रतीक देश के लिए विशिष्ट होते हैं और बच्चों को इन प्रतीकों के साथ प्यार, सम्मान और प्रशंसा के साथ व्यवहार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय प्रतीक हैं: केसरिया, सफेद और हरे रंग में भारत का राष्ट्रीय ध्वज जिसके केंद्र में चौबीस तीलियों वाला पहिया है; मोर के रूप में राष्ट्रीय पक्षी; राष्ट्रीय पुष्प - कमल; राष्ट्रीय वृक्ष - अंजीर का पेड़; राष्ट्रगान: 'जन गण मन'; राष्ट्रीय नदी: गंगा राष्ट्रीयप्रतीक अशोक का सिंह स्तंभ है जिस पर 'सत्यमेव जयते' अंकित है; इस पर बने चार सिंह शक्ति, साहस और आत्मविश्वास का प्रतिनिधित्व करते हैं।

गतिविधि

शिक्षकों को छात्रों को इन प्रतीकों के चित्र बनाने, तराशने या मॉडल बनाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, राष्ट्रीय प्रतीकों के महत्व पर विचार-मंथन सत्र आयोजित करना चाहिए और

वर्णन करना चाहिए कि यदि कोई राष्ट्रीय प्रतीक नहीं होते तो उन्हें कैसा महसूस होता। फिर इन सभी विचारों और शिल्पों को एक प्रदर्शन/बहस/चर्चा के रूप में आयोजित किया जा सकता है।

1.8 मूल्यपरक पाठ्यक्रम

शिक्षकों को सभी विषयों में पाठ्यक्रम में मूल्यों को एकीकृत करने के बारे में जागरूक होना होगा। भाषा और साहित्य पढ़ाते समय गद्य या कविता में अंतर्निहित मूल्यों को उजागर करना होता है। उदाहरण के लिए, "द सेल्फिश जाइंट" में प्रेम, क्षमा और पश्चाताप निहित हैं। निसिम एज़ेकील की "द नाइट ऑफ़ द स्कॉर्पियन" माँ की अपने बच्चों के प्रति उदासीनता और प्रेम को उजागर करती है। रचनात्मक लेखन अभ्यास व्यक्ति को गहरे आत्म के संपर्क में आने और प्रामाणिक और चिंतनशील होने में मदद करता है। इतिहास के पाठों के माध्यम से, छात्र अपनी पिछली विरासत की सराहना करते हैं और उसे स्वीकार करते हैं, इसे वर्तमान से जोड़ते हैं और भविष्य की कल्पना करते हैं। छात्र सत्ता के भ्रष्टाचार और समाज में शोषण के प्रति भी जागरूक होते हैं। नागरिक शास्त्र छात्रों में नागरिकता के मूल्य, उनके कर्तव्य के साथ-साथ उनके अधिकारों को भी विकसित कर सकता है। भूगोल में, छात्र सतत विकास, पर्यावरण की सुरक्षा के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं; परस्पर निर्भरता, प्राकृतिक संसाधनों का बंटवारा। अनुशासन, सत्यापन, दृढ़ता ऐसे मूल्य हैं जिन्हें विज्ञान, प्रौद्योगिकी और गणित के माध्यम से विकसित किया जा सकता है। शिक्षक कहानी कहने की तकनीकों का उपयोग कर सकते हैं, शैक्षिक महत्व के स्थानीय स्थानों का भ्रमण कर सकते हैं, बहस, चर्चा, नाटक कर सकते हैं; छात्रों को सहयोगात्मक रूप से काम करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं और उन्हें आत्म-अभिव्यक्ति और विश्लेषण के अवसर प्रदान कर सकते हैं। छात्रों का मूल्यांकन करने के लिए, शिक्षकों को स्कूल और स्कूल से बाहर की स्थितियों में उनके व्यवहार और प्रतिक्रियाओं का निरीक्षण करने की आवश्यकता है। मूल्यांकन विद्यार्थियों द्वारा स्वयं और उनके साथियों द्वारा भी किया जा सकता है।

1.9 मूल्यों का अनुप्रयोग

हमारे जीवन के प्रत्येक क्षण में, मूल्य जीवित रहते हैं। नीचे कुछ घटनाएँ, गीत, कहानियाँ दी गई हैं जो मूल्यों और भारतीय संस्कृति के महत्व को प्रदर्शित करती हैं।

a) नाचे मयूरी: सुधा चंद्रन

साल की उम्र से, सुधा चंद्रन (लोकप्रिय हिंदी फिल्म नाचे मयूरी की अभिनेत्री) खुद नृत्य करने लगीं और पांच साल की उम्र में, उन्हें एक नृत्य विद्यालय में दाखिला मिल गया। वह जल्द ही एक प्रसिद्ध नर्तकी बन गई लेकिन उसके साथ एक दुखद घटना घटी। 2 मई 1981 को एक बस दुर्घटना में सुधा बुरी तरह घायल हो गईं। उसकी जान बचाने के लिए पैर काटना पड़ा। अंग-विच्छेदन के छह महीने बाद, सुधा को एक कृत्रिम पैर मिला, लेकिन इस पैर को हिलाने में अक्सर दर्द होता था क्योंकि वह नृत्य करने की कोशिश करती थी। कटे पैर की त्वचा और कृत्रिम पैर के घर्षण के कारण दर्द गंभीर हो गया। उन्होंने बहादुरी से दर्द को सहन किया और अपने नृत्य का अभ्यास जारी रखा। 28 जनवरी 1984 को, उन्होंने दुर्घटना के बाद अपना पहला सार्वजनिक प्रदर्शन दिया और यह एक बड़ी सफलता थी। उनके जीवन की कहानी पर

एक तेलुगु फिल्म "मयूरी" और हिंदी फिल्म "नाचे मयूरी" बनाई गई; दोनों फिल्मों में सुधा स्वयं नायिका थीं। भरतनाट्यम के भारतीय शास्त्रीय नृत्य के प्रति सुधा चंद्रन की प्रतिबद्धता उनके अद्भुत साहस और दृढ़ संकल्प के साथ गहराई से जुड़ी हुई है। उनके परिवार ने उन्हें भरपूर समर्थन दिया। उन्होंने न केवल 5 साल की उम्र से नृत्य के लिए उसकी प्रतिभा को विकसित करने में उसकी सहायता की, बल्कि दुर्घटना के बाद भी उसे कभी हार नहीं मानने दी।(www.disabilityindia.org/djstoriesaug06D.cfm)

1.9.1 अन्य केस अध्ययन

विश्व भर में ऐसे लोग हैं जो अपनी सभी विकलांगताओं के बावजूद जीवित रहे और फले-फूले। वास्तव में, उनमें से कुछ पूरे इतिहास में महान योगदानकर्ता रहे हैं और अपनी विकलांगताओं के बावजूद अपनी उपलब्धियों के कारण काफी प्रसिद्ध हैं। यहां उन व्यक्तियों का उल्लेख किया गया है जो अपनी उपलब्धियों के कारण प्रसिद्ध थे जो किसी भी विकलांगता से कहीं अधिक थीं, चाहे वह इसके साथ पैदा हुआ हो या बाद में जीवन में विकसित हुआ हो।

a) लुडविगवैनबीथोवेन

कुछ संगीतकारों ने बहरे होने पर भी अपनी पहचान बनाई है। हालाँकि, एक ऑस्ट्रियाई/जर्मन संगीतकार और पियानो विशेषज्ञ ने 20 साल की उम्र में टिनिटस से अपनी अधिकांश सुनने की क्षमता खोने के बाद ऐसा ही किया।लुडविग वान बीथोवेन ने तब विशेष श्रवण ट्यूबों का उपयोग किया और अपने पियानो के कंपन को महसूस करके रचना की, जो उन्होंने शास्त्रीय, वीर और रोमांटिक काल के इतिहास के कुछ अन्य महान संगीतकारों, मोज़ार्ट और हेडन के अधीन शिक्षण के माध्यम से किया।इतिहास के प्रसिद्ध संगीतकारों में से एक, उनकी उपलब्धियाँ ध्यान में लाने पर चकाचौंध और मंत्रमुग्ध कर देने वाली हैं और जिसे वह स्वयं कभी सुनने में सक्षम नहीं थे।

b) हेलेन केलर

नेत्रहीन और बधिर, यह अमेरिकी कॉलेज से स्नातक करने वालीपहलीऐसी व्यक्ति थीं। एनी सुलिवन द्वारा प्रसिद्ध रूप से प्रशिक्षित, उनके जीवन को नाटक "द मिरेकल वर्कर" में वर्णित किया गया था। स्नातक स्तर की पढ़ाई के बाद, केलर एक प्रसिद्ध वक्ता, लेखक और शांतिवाद, महिलाओं के वोट के अधिकार और जन्म नियंत्रण के लिए योद्धा बन गईं।

c) स्टीफन हॉकिंग

एमियोट्रोफिक लेटरल स्केलेरोसिस से लगभग पूरी तरह से लकवाग्रस्त, ब्रिटिश भौतिक विज्ञानी स्टीफन हॉकिंग एक अकादमिक सेलिब्रिटी हैं जो ब्लैक होल से संबंधित अपने सिद्धांतों और अपनी सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तक "ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ टाइम" के लिए जाने जाते हैं। जबकि कुछ लोग बिना गहन व्याख्या के उनकी अवधारणाओं को पूरी तरह से समझ सकते हैं, उनके सिद्धांत वैज्ञानिक समुदाय में गैलीलियो, न्यूटन और आइंस्टीन के समान प्रसिद्ध हो गए हैं। संयोग से, ऐसे कई टेलीविज़न के शौक़ीन हैं जो उन्हें "The Sympsons" "Futurama" और "Family Guy" जैसे एनिमेटेड सिटकॉम के कुछ प्रसिद्ध वैज्ञानिक के रूप में जानते हैं।

d) फ्रैंकलिन रूज़वेल्ट

दो से अधिक कार्यकाल तक सेवा देने वाले एकमात्र अमेरिकी राष्ट्रपति, फ्रैंकलिन डी. रूज़वेल्ट को 1921 में पोलियो के एक रूप या गुइलेन-बैरे सिंड्रोम के कारण कमर से नीचे का हिस्सा लकवाग्रस्त हो गया था। जबकि वास्तविक बीमारी जिसने उन्हें व्हीलचेयर से बांध दिया था, उसकी पुष्टि नहीं की गई है। 100 प्रतिशत सटीकता के साथ, रूज़वेल्ट को अमेरिकी इतिहास के सबसे महान राष्ट्रपतियों में से एक के रूप में जाना जाता है, जिन्होंने कई उथल-पुथल वाले समय में आबादी का नेतृत्व किया। महामंदी और द्वितीय विश्व युद्ध अमेरिकी इतिहास के दो सबसे बुरे दौर थे जो अपनी अस्थिरता और मानव जीवन और कई अमेरिकियों की आजीविका दोनों के नुकसान के लिए जाने जाते थे। हालाँकि, रूजवेल्ट उस समय आत्मविश्वास और शालीनता के साथ अमेरिका का नेतृत्व करने वाले व्यक्ति थे, जो उनकी विकलांगता से प्रभावित नहीं था और हेलर की तरह, वह भी वर्तमान में एक अमेरिकी सिक्के - द डाइम - पर चित्रित है।

1.10 मूल्य संघर्ष

हम उस समय क्या कर सकते हैं जब हमारे मूल्य एक-दूसरे से टकराते हैं? प्रायः हम अपने अंदर कई पूर्वाग्रह या गलत मान्यताएं लेकर चलते हैं और यह नहीं सोचते कि ये सही हैं या गलत। यह संभव है कि हम वर्षों से बिना सोचे-समझे इस प्रथा का या इस विश्वास का पालन कर रहे हैं और कभी स्वयं से नहीं पूछा कि हम ऐसा क्यों करते हैं। ऐसा नहीं है कि नैतिक संघर्षों का समाधान नहीं किया जा सकता। कुछ मामलों में, प्रत्येक पक्ष संचार के नए रूपों के माध्यम से दूसरों के विश्व-दृष्टिकोण के बारे में अपनी समझ को बढ़ा सकता है। मतभेदों के बीच समानताएं खोजी जा सकती हैं और समझौते के योग्य आधार स्थापित किया जा सकता है। सम्मानजनक संचार, सहानुभूतिपूर्वक सुनना, बेहतर समझ और सम्मान जैसे संवादों के रूप और संदर्भ के माध्यम से नैतिक संघर्षों या असहमतियों का सम्मान करके रचनात्मक तरीके से कम किया जा सकता है। इस प्रकार संघर्षों को इस तरह से प्रबंधित किया जा सकता है जिससे दोनों पक्षों की लागत कम से कम हो। नीचे पूर्वाग्रह और अंधविश्वास के आधार पर उत्पन्न होने वाली संघर्ष की स्थिति का एक उदाहरण दिया गया है।

a) गणेश और उस्तादजी

गणेश की माँ ने उन्हें उस्ताद नासिर खान, जो प्रसिद्ध बांसुरीवादक थे, द्वारा दी गई निःशुल्क शिक्षा लेने से मना कर दिया। अंततः परिवार के अन्य सदस्यों के समझाने पर वह मान गई। उन्हें एहसास हुआ कि गणेश को वास्तव में बांसुरी पसंद है और उस्तादजी द्वारा प्रशिक्षित होने के सम्मान से उन्हें वंचित करना उनके लिए बहुत बड़ी क्षति होगी। इस स्थिति में, शुरू में गणेश की माँ उस्तादजी के प्रति पूर्वाग्रह से ग्रस्त थीं क्योंकि वह एक अलग धर्म से थे लेकिन अंततः अपने बेटे के प्रति उनके प्यार, सहिष्णुता और प्रशंसा ने उन्हें पूर्वाग्रह से उबरने में मदद की। गणेश और उस्तादजी के धैर्य, संगीत के प्रति प्रेम, प्रतिबद्धता और समर्पण की अंततः जीत हुई।

बोध प्रश्न 2

i) इतिहास के शिक्षण में मूल्यों को कैसे एकीकृत किया जाता है?

.....

.....

.....

ii) टकराव को समाप्त करने के लिए क्या उदाहरण दिया गया है?

.....

.....

.....

iii) तमिलनाडु, असम उड़ीसा, केरल और आंध्रप्रदेश के प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य कौन से हैं?

.....

.....

.....

iv) मूल्यों की सूची की जांच करें और उन मूल्यों को चुनें जिनसे सुधा चंद्रन को अपनी समस्या से उबरने में मदद मिली।

.....

.....

.....

v) उन प्रतिष्ठित व्यक्तियों के नाम बताइए जो अपनी विकलांगताओं के बावजूद जीवन में सफल हुए।

.....

.....

.....

1.11 सारांश

भारतीय संस्कृति पाँच हज़ार वर्ष से अधिक पुरानी है और उन कुछ प्राचीन संस्कृतियों में से एक है जो आज भी जीवित हैं। भाषा, कला, आध्यात्मिकता, संगीत, नृत्य, साहित्य सभी इस संस्कृति का हिस्सा हैं। भारतीय संस्कृति ने विभिन्न संस्कृतियों, विशेष रूप से आक्रमणकारियों के प्रभावों पर अलग-अलग प्रतिक्रिया दी है और इसने विभिन्न तत्वों को संरक्षित, अवशोषित और आत्मसात किया है और यही भारतीय संस्कृति और सभ्यता की सफलता का रहस्य है। इसकी विविधता के बावजूद, इसमें एक 'मौलिक एकता' है जो इसे अद्वितीय बनाती है। भारतीय संस्कृति के कई अलग-अलग हिस्से हैं और प्रत्येक एक-दूसरे से निकटता से जुड़ा हुआ है और इसमें जटिल रूप से बुने हुए मूल्य हैं। संस्कृति के संरक्षण और प्रसारण में परिवार आवश्यक हैं। यह परिवार में ही है कि बच्चा सबसे पहले साझा करने, देखभाल करने, निःस्वार्थता, सहिष्णुता जैसे मूल्यों का अनुभव करता है और उन्हें आत्मसात करता है। एकता, निष्ठा, अखंडता एक भारतीय परिवार की प्रमुख विशेषताएं हैं जिनमें परस्पर निर्भरता और दूसरों की चिंता पर जोर दिया जाता है। भारत में, भोजन को न केवल इसलिए महत्व दिया जाता है क्योंकि यह पौष्टिक होता है, बल्कि इसलिए भी कि यह ईश्वर का उपहार है। कपड़े परंपरा,

संस्कृति की विविधता से जुड़े हैं। भारत में राष्ट्रीय प्रतीक एकता, सच्चाई और देशभक्ति का प्रतीक हैं। राष्ट्रीय प्रतीक देश के लिए विशिष्ट होते हैं। शिक्षकों को सभी विषयों में पाठ्यक्रम में मूल्यों को एकीकृत करने के बारे में जागरूक होना होगा। अक्सर हम अपने अंदर कई पूर्वाग्रह या गलत मान्यताएं लेकर चलते हैं और यह नहीं सोचते कि ये सही हैं या गलत।

1.12 बोध प्रश्न केउत्तर

बोध प्रश्न 1

i) मधुबनी पेंटिंग, मैसूर पेंटिंग, राजपूत पेंटिंग, तंजौर पेंटिंग आदि।

ii) भारत में भोजन को न केवल इसलिए महत्व दिया जाता है क्योंकि यह पौष्टिक होता है बल्कि इसे ईश्वर का उपहार भी माना जाता है। यह विविध है और बचपन से ही बच्चों को भोजन बर्बाद न करने और परिवार और दोस्तों के साथ भोजन साझा करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है।

बोध प्रश्न 2

i) इतिहास के पाठों के माध्यम से छात्र अपनी पिछली विरासत की सराहना करते हैं और स्वीकार करते हैं, इसे वर्तमान से जोड़ते हैं और भविष्य की कल्पना करते हैं।

ii) यह गणेश और उस्तादजी की कहानी है जो संगीत के प्रति प्रेम, प्रतिबद्धता और समर्पण की भावना के मूल्यों की बात करती है जो पूर्वाग्रह को हल करने में मदद करती है।

iii) तमिलनाडु का शास्त्रीय नृत्य भरतनाट्यम है; असम का, यह सत्रिया है; उड़ीसा का यह ओडिसी है; केरल में यह कथकली है और आंध्र प्रदेश में यह कुचिपुड़ी है।

iv) कुछ मूल्य जिन्होंने सुधा को अपनी समस्या से उबरने में मदद की, वे हैं कड़ी मेहनत, दृढ़ संकल्प, ज़िम्मेदारी, आत्म-अनुशासन, काम पर ध्यान, विश्वास, विश्वास, ईमानदारी।

v) स्टीफन हॉकिंग, बीथोवेन, हेलेन केलर और फ्रैंकलिन रूज़वेल्ट

1.13 सन्दर्भ

बख्शी पी.एम. (2000)। द कॉन्स्टिट्यूशन ऑफ इंडिया यूनिवर्सल लॉ पब्लिशिंग कंपनी प्राइवेट लिमिटेड।

बाशम ए.एल. (2007)। भारत का सचित्र सांस्कृतिक इतिहास;

बाशम ए.एल. (2004)। वह आश्चर्य था भारत; पिकाडोर; लंदन

मजूमदार आर.सी., दत्ता के.के., राय चौधरी (2008)। भारत का एक उन्नत इतिहास; मैकमिलन; दिल्ली

मजूमदार आर.सी. (2003).प्राचीन भारत; मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली

राधाकृष्णन एस. (2009).इंडियन फिलॉसफी (खंड 1), दूसरा संस्करण, ओयूपी, दिल्ली स्मिथ वी.ए. (एड) स्पीयर पी.;1981; भारत का ऑक्सफोर्ड इतिहास; ओयूपी, यू.एस.ए.

तम्मिता-डेलगोडा एस. (2003)। भारत का एक यात्री इतिहास; श्रृंखला संपादक

डेनिस जुड, न्यूयॉर्क, यू.एस.ए.

टायलर ई.बी. (1974). आदिम संस्कृति: पौराणिक कथाओं, दर्शन, धर्म, कला और रीति-रिवाज के विकास पर शोध। न्यूयॉर्क: गॉर्डन प्रेस.

ऑनलाइन स्रोत:

www.disabilityindia.org/djstoriesaug06D.http://www.encyclopedia.comcfm

www.highbeam.com/doc/1G1-78400910.html

http://www.encyclopedia.com

http://www.toptenz.net

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 2 भारतीय दर्शन में निहितमूल्य

इकाई की रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 दर्शन

2.4 भारतीय दर्शन

- 2.4.1 भारतीय दर्शन की महत्वपूर्ण अवधारणाएँ
- 2.4.2 भारतीय दर्शन का उद्देश्य

2.5 भारतीय दर्शन का इतिहास

- 2.5.1 वैदिक काल

2.6 भारतीय दर्शन की विभिन्न स्कूल

- 2.6.1 न्याय और वैशेषिक - दर्शन और मूल्य
- 2.6.2 सांख्य और योग - दर्शन और मूल्य
- 2.6.3 मीमांसा और वेदांत- दर्शन और मूल्य
- 2.6.4 विशिष्टाद्वैत और उपनिषद- उनके दर्शन और मूल्य
- 2.6.5 हेटेरोडॉक्स (नास्तिक) स्कूल: दर्शन और मूल्य

2.7 भक्ति, सिख धर्म, इस्लाम और सूफीवाद और ईसाई धर्म

2.8 आधुनिक भारतीय दर्शन

2.9 सारांश

2.10 बोध प्रश्न के उत्तर

2.11 सन्दर्भ

2.1 प्रस्तावना

हम प्रायः ओपन एंडेड (खुले अंत वाले) सवालोंके उत्तर खोजते हैं जैसे कि क्या ईश्वर का अस्तित्व है? मनुष्य को दर्द क्यों होता है? मनुष्य को दर्द क्यों होता है? इतनी अधिक अस्वस्था और बीमारियाँ क्यों हैं? ज्ञान क्या है? एक मूल्य क्या है? क्या मूल्य शाश्वत हैं? और ऐसे ही न जाने कितने प्रश्न। सत्य की खोज करने वाले ये प्रश्न दार्शनिक प्रश्न हैं। बाहरी दुनिया के साथ अपने संबंध को ठीक से समझने के लिए दर्शनशास्त्र की आवश्यकता है; किसी को भय से और आत्म-संरक्षण की आदिम प्रवृत्ति से मुक्त करना; साथ ही अपनी जन्मजात क्षमता का पता लगाना और विकसित करना तथा शांत और प्रसन्न रहना। दुनिया के महान आध्यात्मिक नेताओं ने हमें इन सवालों के जवाब देने की कोशिश की है। इस इकाई में, हम आपको भारतीय दर्शन: इसके उद्देश्य और प्रमुख अवधारणाओं से परिचित कराने का प्रयास करेंगे। फिर, कुछ उदाहरणों की सहायता से हम भारतीय दर्शन में निहित कुछ मूल्यों को पहचानने का प्रयास करेंगे।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद, आपसे अपेक्षा की जाती है:

- दर्शन शब्द को परिभाषित करें;
- अपने जीवन के दर्शन को पहचानें;
- भारतीय दर्शन को परिभाषित करें;
- भारतीय दर्शन की प्रमुख अवधारणाओं को पहचानें और उनसे जुड़ें;
- भारतीय दर्शन के उद्देश्यों की पहचान कर सकेंगे;
- भारतीय दर्शन के विभिन्न विद्यालयों की मुख्य अवधारणाओं और अंतर्निहित मूल्यों को व्यवस्थित और विश्लेषण करें;
- प्रमुख भारतीय दार्शनिक ग्रंथों से मूल्यों को बाहर निकालें और छात्रों को वाद-विवाद, पैनल चर्चा के माध्यम से विचारों/विचारों को पहचानने, तलाशने, चर्चा करने और भारतीय दर्शन के मूल्यों को दैनिक जीवन में लागू करने के लिए प्रोत्साहित करें।

2.3 दर्शन

फ़िलॉसफ़ी शब्द की उत्पत्ति प्राचीन ग्रीक शब्द "फ़िलोसोफ़िया" से हुई है जिसका अर्थ है "ज्ञान का प्रेम।" दर्शन सत्य, अस्तित्व, वास्तविकता, स्वतंत्रता, विचार और कार्य, ब्रह्मांड और व्यक्ति की भूमिका,हर चीज़ का मूल कारण और जीवन का अर्थ। दार्शनिक तर्कसंगत एवं व्यवस्थित दृष्टिकोण अपनाते हुए इन मूलभूत प्रश्नों के उत्तर खोजते हैं। दर्शनशास्त्र का गठन कई क्षेत्रों में अध्ययन से होता है जैसे - तत्वमीमांसा: वास्तविकता, अस्तित्व, ब्रह्मांड, आदि की प्रकृति से संबंधित। ज्ञानमीमांसा: ज्ञान, सत्य और इसी तरह की प्रकृति का अध्ययन शामिल है। नैतिकता, यानी नैतिक दर्शन, नैतिकता और मूल्यों से संबंधित है और हमारे लिए इस इकाई में प्राथमिक विषय है। दर्शनशास्त्र की अन्य शाखाएँ भी हैं जैसे सौंदर्यशास्त्र, तर्कशास्त्र इत्यादि। इस इकाई में हम केवल मूल्यों के संदर्भ में दर्शन पर चर्चा करेंगे।

आम आदमी की भाषा में, दर्शन की व्याख्या जीवन और उसकी जटिलताओं के प्रति दृष्टिकोण के रूप में की जासकती है। हो सकता है कि आप ईमानदारी, कड़ी मेहनत, दूसरों को चोट न पहुंचाने, सभी के प्रति दयालु होने, बड़ों का सम्मान करने, सामाजिक अन्याय के खिलाफ़ लड़ाई में विश्वास करते हों। ये मूल्य और विश्वास आपके जीवन का दर्शन बनाते हैं। इसलिए आपका जीवन दर्शन आपके मूल्यों, उन परंपराओं से निकटता से जुड़ा हुआ है जिनका आप पालन करते हैं और आपकी धार्मिक मान्यताओं से संबंधित हैं। हालाँकि, भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष देश में किसी एक विशेष धर्म के बजाय धर्मनिरपेक्ष स्रोतों और उन लोगों से मूल्यों को आकर्षित करना बेहतर है जो सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत हैं। पश्चिमी दर्शन में विचार के कई स्कूल हैं जो समय के साथ विकसित हुए हैं और भारतीय दर्शन भी ऐसा ही है। इस इकाई में हम अपनी चर्चा को भारतीय दर्शन तक ही सीमित रखेंगे।

2.4 भारतीय दर्शन

भारतीय दर्शन लगभग 1500ईसा पूर्व से लेकर श्री जैसे व्यक्तियों द्वारा 20वीं शताब्दी तक जारी भारतीय उपमहाद्वीप की विभिन्न दार्शनिक परंपराओं को संदर्भित करता है। अरबिंदो, रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी, डॉ. एस. राधाकृष्णन, श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, मदर टेरेसा, जे. कृष्णमूर्ति सहित अन्य। इनमें हिंदू दर्शन, बौद्ध दर्शन और जैन दर्शन शामिल हैं। व्यापक स्तर पर, इसमें भक्ति परंपरा, सिख धर्म, सूफ़ीवाद और इस्लाम, ईसाई धर्म और पारसी धर्म के प्रभाव पर प्रतिक्रियाएँ भी शामिल हैं।

2.4.1 भारतीय दर्शन की महत्वपूर्ण अवधारणाएँ

धर्म, मोक्ष, कर्म और आत्माभारतीय दर्शन की महत्वपूर्ण अवधारणाएँ हैं। धर्म समग्र रूप से ब्रह्मांडीय व्यवस्था को संदर्भित करता है, जिसके लिए व्यक्तियों को अपने कर्म यानी कार्य/कर्तव्यों को सही ढंग से करना होता है। अन्यथा धर्म या अधर्म का पतन हो जाता है। (बौद्ध धर्म में, धर्म का तात्पर्य बुद्ध की शिक्षाओं से है)। आत्मन का तात्पर्य आत्मा या स्वयं से है।

कर्म का तात्पर्य क्रिया या कर्तव्य से है। मोक्ष मुक्ति/निर्वाण है। इन अवधारणाओं का वैज्ञानिक एवं तार्किक रूप से विश्लेषण किया जाना चाहिए और आँख बंद करके स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए। ये चारों अवधारणाएँ आपस में जुड़ी हुई हैं। जैसे मनुष्य द्वारा प्रकृति के अंधाधुंध विनाश से प्रकृति में असंतुलन पैदा हो गया है जिससे ग्लोबल वार्मिंग और असामान्य प्राकृतिक आपदाओं की समस्याएँ पैदा हो गई हैं। चूँकि मनुष्य ने प्रकृति के संरक्षण में अपने कर्तव्यों (कर्मों) का पालन नहीं किया है, इसलिए प्रकृति में असंतुलन होता है और संपूर्ण ब्रह्मांड (धर्म) प्रभावित होता है। व्यक्ति का पुनर्जन्म पूर्व जन्म में किये गये पापों का प्रायश्चित करने के लिए होता है। यह हमें सतत विकास के विचार पर लाता है जो आध्यात्मिक आयाम भी लेता है।

कर्तव्यों का सही ढंग से पालन एक महत्वपूर्ण मूल्य है जो भारतीय दर्शन का अभिन्न अंग है। आप अपने कर्तव्यों का पालन सही ढंग से कैसे कर सकते हैं? भगवद-गीता सुझाव देती है कि व्यक्ति को कार्य करना चाहिए, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो, एकाग्रता, दृढ़ संकल्प, निष्पक्षता, ईमानदारी के साथ, एक-दूसरे के प्रति सम्मान के साथ और किसी विशेष तरीके से कुछ करने के कारण के प्रति हमेशा सचेत रहना चाहिए। ऐसा माना जाता है कि प्रत्येक कार्य का एक सकारात्मक या नकारात्मक पहलू होता है और कार्य की शुद्धता या कमी उसके भावी जन्म को प्रभावित करती है। इसलिए "जैसा बोओगे, वैसा काटोगे"। गीता किए गए कार्यों के परिणामों से अलग होने की भी सलाह देती है और इस प्रकार परिणामों की चिंता किए बिना कर्तव्यों को पूरा करने की सलाह देती है।

शिक्षक छात्रों को वैराग्य के इस मूल्य को अपने जीवन में लागू करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। छात्रों से अपने, परिवार, शिक्षक, स्कूल, मित्र, देश के प्रति अपने सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य की पहचान करने के लिए कहा जा सकता है। विद्यार्थी होने के नाते उनका प्राथमिक कर्तव्य अध्ययन करना और अच्छा प्रदर्शन करना है। यदि वे कक्षा में ध्यान केंद्रित करें, अपना काम नियमित रूप से करें और सीखें तो अच्छे परिणाम अपने आप आने लगेंगे। उनके प्रयास, एकाग्रता और प्रदर्शन पर विचार करने और दूसरों के साथ नहीं बल्कि खुद के साथ प्रतिस्पर्धा करने की अधिक आवश्यकता है। (सिरिल, 2005)

2.4.2 भारतीय दर्शन का उद्देश्य

भारतीय दर्शन को अक्सर 'दर्शन' के रूप में जाना जाता है जो 'दृश्य' या 'देखना' शब्द से आया है (राधाकृष्णन, 2009)। यह माना जाता है कि जो इसका अनुसरण करता है, उसे सत्य को "देखने" में सक्षम होना चाहिए। (हैमिल्टन 2001) और देखे गए सत्य के अनुसार जीवन व्यतीत करें। कुछ भारतीय दार्शनिक विद्यालय (आस्तिक) ईश्वर में विश्वास करते हैं जबकि नास्तिक विचारधारा ईश्वर को नहीं मानते। भारतीय दर्शन के कुछ विद्यालय सांख्य, योग, न्याय और वैशेषिक आदि जैसे वैदिक समर्थक हैं। वैदिक विरोधी विचारधारा में चार्वाक, बुद्ध और जैन दर्शन शामिल हैं। हालाँकि, भारतीय दर्शन में कुछ सामान्य विशेषताएं हैं। उदाहरण के लिए, आध्यात्मिक प्रगति के लिए इसकी खोज एक प्रमुख विशेषता है। इस प्रकार कई भारतीय दार्शनिक विद्यालय आत्मा और उसके ज्ञानोदय की आवश्यकता में विश्वास करते हैं। यह धर्म पर आधारित और केवल नैतिकता को कायम रखने वाले विचारों से परे है। 'मोक्ष' यानी आध्यात्मिक प्रगति जैसी उच्च उपलब्धियों की तलाश के अलावा, भारतीय दर्शन सत्य और ज्ञान की भी खोज करता है, नैतिकता की व्याख्या करता है और उसका समर्थन करता है। इस प्रकार यह मानव जीवन का मार्गदर्शन करने के लिए नैतिकता और मूल्यों का स्रोत है। आनंद एक प्रमुख मूल्य है और भारतीय दर्शन आनंद सुनिश्चित करने के लिए रणनीतियाँ प्रदान करता है।

बुद्ध ने सभी सांसारिक परेशानियों, पीड़ाओं और दुखों के समाधान के रूप में अष्टांगिक मार्ग (अष्टांग मार्ग) का सुझाव दिया। इस प्रकार यह विकारों, अज्ञानता और सांसारिक दुखों से मुक्ति चाहता है। यद्यपि भारतीय दर्शन मन को मुक्त करने के लिए व्यक्तिगत (ध्यान) साधना की आवश्यकता पर जोर देता है, साथ ही यह सार्वभौमिक कल्याण की भी तलाश करता है। शंकर, महावीर और बुद्ध, गांधी, टैगोर, श्री अरबिंदो और कई अन्य दार्शनिक मूलतः समाज सुधारक थे।

अधिकांश भारतीय दर्शन कर्म के सिद्धांत पर विश्वास करते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार, इस जीवन और पिछले जीवन के कार्यों (कर्म) के परिणाम हमारे जीवन की दिशा को निर्देशित करते हैं। कर्म बंधन से मुक्ति ही मुक्ति है। हालाँकि, कुछ अपवाद भी हैं। चार्वाक मत कर्म और पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करता। अत: भारत में 'धर्म' शब्द का व्यापक अर्थ है। दुखों और अज्ञान से मुक्ति दर्शन और धर्म दोनों का सामान्य लक्ष्य है। दर्शन और धर्म के बीच तालमेल है।

2.5 भारतीय दर्शन का इतिहास

भारतीय दर्शन के 3300 वर्ष: बी.सी. 1500 – 1800 ई.

a) B.C.1500-B.C.500- वेद और उपनिषद- वैदिक काल

b) ईसा पूर्व 600-200ई.- जैन, बुद्ध, भगवद गीता, मनु स्मृति, रूढ़िवादी दर्शन का उदय- महाकाव्य काल।

c) 200 ई. - नागार्जुन और महायान बौद्ध धर्म का उदय - सूत्र काल।

d) 600 ई. - शंकराचार्य शैक्षिक काल और वेदांत का उदय।

e) 900 ईस्वी के बाद - अन्य वेदांतिक विद्यालयों का उदय: विशिष्टाद्वैत, द्वैत, आदि।

2.5.1 वैदिक काल

वैदिक साहित्य बी.सी.1500 - बी.सी.500 में (i) संहिताएं (ii) ब्राह्मण और (iii) आर्यक और उपनिषद (मजूमदार, 1994) शामिल हैं। भगवान की स्तुति में चार मुख्य संहिताएँ या भजनों का संग्रह हैं- ऋग्वेद संहिता, अथर्ववेद संहिता, सामवेद संहिता और यजुर्वेद संहिता। ऋग्वेद 1028 ऋचाओं का संग्रह है; अथर्ववेद मंत्र और आकर्षण का एक संग्रह है; सामवेद ज्यादातर ऋग्वेद और यजुर्वेद के गीतों का एक संग्रह है जिसमें कई यज्ञ सूत्र, अनुष्ठान शामिल हैं। वेद शब्द का अर्थ है "ज्ञान"। वेद कई शताब्दियों में विकसित हुए और पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से प्रसारित होते रहे। इसलिए वेदों को "श्रुति" या 'जो सुना जाता है' भी कहा जाता है। (मजूमदार, 1994) वेद सभी के लिए और विशेषकर शिक्षक समुदाय के लिए मूल्यों का एक समृद्ध स्रोत हैं।

'ओम. [वह] हम दोनों की रक्षा करें। [ब्राह्मण] हम दोनों को ज्ञान का फल प्रदान करें। क्या हम दोनों ज्ञान प्राप्ति हेतु ऊर्जा प्राप्त कर सकते हैं? हम दोनों जो अध्ययन करें वह सत्य को उजागर करे।

क्या ये संभव नहीं कि हम एक-दूसरे के प्रति कोई बुरी भावना नहीं रखें?ॐ शांति! शांति! शांति!'4. तैत्तिरीय आरण्यक, 8.1.1.

यह विशेष प्रार्थना शिक्षकों और छात्रों द्वारा साझा किए गए विशेष बंधन और ज्ञान, सत्य, शांति और सद्भाव के मूल्यों को पहचानती है। जबकि वेद आपको बड़ों का सम्मान करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, यह आलोचनात्मक सोच और विश्लेषण को भी प्रोत्साहित करते हैं। ईमानदारी को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। 'सत्य के मार्ग पर चलो।' (11. यजुर्वेद, 7.45)। छात्रों को प्रकृति की सुरक्षा और संरक्षण की आवश्यकता के बारे में लगातार जागरूक किया जाना चाहिए। 'पृथ्वी मेरी माँ है; मैं धरती का पुत्र हूं।' (21. अथर्ववेद, 12.1.12) नागरिकता और देशभक्ति प्रमुख मूल्य हैं जिन्हें शिक्षक छात्रों में प्रोत्साहित कर सकते हैं। 'अपनी मातृभूमि की सेवा करो।' (22. ऋग्वेद, 10.18.10)

2.6 भारतीय दर्शन के विभिन्न स्कूल

शास्त्रीय भारतीय दर्शन को "रूढ़िवादी" या आस्तिक और "विधर्मी" या नास्तिक स्कूलों में विभाजित किया जा सकता है।

a) रूढ़िवादी स्कूल

दर्शनशास्त्र के छह रूढ़िवादी स्कूल हैं

i) न्याय, तर्कशास्त्र का स्कूल अक्षपाद गौतम द्वारा न्याय सूत्र में ईसा पूर्व में शुरू किया गया था। दूसरी सदी.

ii) वैशेषिक, परमाणु विद्यालय ईसा पूर्व में शुरू हुआ। वैशेषिक सूत्र में उलूक कणाद द्वारा दूसरी-चौथी शताब्दी।

iii) सांख्य, ईसा पूर्व कपिला द्वारा स्थापित गणना विद्यालय। दूसरी शताब्दी.

iv) योग, दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के योग सूत्र में पतंजलि का स्कूल।

v) पूर्व मीमांसा, वैदिक अनुष्ठान पर जोर देने के साथ वैदिक पाठ की व्याख्या। इसकी

शुरुआत ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में जैमिनी के सूत्रों से हुई।

vi) वेदांत, वैदिक दर्शन पर जोर देने के साथ उपनिषदों पर आधारित है। वेदांत वेदों का अंत है। मूल वेदांत ग्रंथ बादरायण का ब्रह्म सूत्र या वेदांत सूत्र है जो ईसाई युग की शुरुआत में लिखा गया था।

a) विधर्मी स्कूल

ये वेदों के प्रमाण को स्वीकार नहीं करते हैं और इसलिए इन्हें नास्तिक कहा जाता है। ये हैं बौद्ध धर्म, जैन धर्म और चार्वाक।

2.6.1 न्याय और वैशेषिक - दर्शन और मूल्य

a) तर्कशास्त्र के न्याय स्कूल ने तर्क के वैज्ञानिक नियमों पर आधारित एक पद्धति आरंभ की, जिसके द्वारा जांच के उद्देश्य के संबंध में कुछ ज्ञान प्राप्त किया जा सकता था। इसलिए तर्क और तर्क का कौशल विकसित किया जाता है एवं सत्यापन, निष्पक्षता, सावधानी के मूल्यों को प्रोत्साहित किया जाता है।

तर्क के 5 चरण हैं जिनके द्वारा हम इस ज्ञान तक पहुँच सकते हैं। (a) एक कथन का प्रस्ताव जिसे साबित करना है (b) कारण (c) उदाहरण (d) आवेदन (e) निष्कर्ष।

निम्नलिखित उदाहरण आपको इसे बेहतर ढंग से समझने में सहायक होगा। (a)प्रस्ताव:- पहाड़ पर आग लगी है। (b) कारण:- क्योंकि इसके ऊपर धुआं है। (c) उदाहरण:-जहां धुआं है, वहां आग है जैसे कि रसोई में। (d)प्रयोग:- यही स्थिति पहाड़ की है। (e) निष्कर्ष:-इस पर आग लगी है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह जांच केवल कुछ शर्तों के तहत ही की जा सकती है (a) जांच तभी की जानी चाहिए जब कोई संदेह हो, (b) एक निश्चित परिणाम की संभावना हो, (c) जांच का एक उचित उद्देश्य हो और (d) इसे सर्वोच्च भलाई में योगदान देना चाहिए।

जब कोई संघर्ष होता है तो हम उससे निपटने के लिए इन मापदंडों का उपयोग कर सकते हैं। हम शैक्षणिक जीवन और व्यावहारिक जीवन दोनों में, किसी कथन को सिद्ध करने के लिए अनुमान के पाँच चरणों का उपयोग कर सकते हैं।

यह संगठन के मूल्यों, उद्देश्य एवं स्पष्टीकरण को भी दर्शाता है।शिक्षकों द्वारा छात्रों को आलोचनात्मक ढंग से सोचने, गैर-निर्णयात्मक बनने और विभिन्न तरीकों के माध्यम से जैसे परियोजना कार्य, वाद-विवाद, विचार-मंथन गतिविधियों के द्वारा वैज्ञानिक स्वभाव विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

b) वैयक्तिक विशेषताओं का वैशेषिक स्कूल भौतिकी और इस मूल विचार से संबंधित है कि प्रकृति परमाणु है। प्रकृति उन परमाणुओं से बनी है जो आत्मा से अलग हैं। इसलिए "द्वैतवाद" या दो अलग-अलग भागों- पदार्थ एवं आत्मा का अस्तित्व है। पदार्थ और गुण सहवर्ती हैं। उदाहरण के लिए, रंग की गुणवत्ता के बिना गुलाब का अस्तित्व नहीं हो सकता; अतः 'एक लाल गुलाब"। वैशेषिक हमें धारणा का छह गुना दृष्टिकोण देता है। (i) पदार्थ-जैसे जंबो-कुत्ता (ii) गुणवत्ता-रंग, आकार (iii) क्रिया-भौंकना (iv) बड़े परिवार का हिस्सा: कुत्ते (v) विशिष्टता-शायद इसके माथे के बीच में एक सफेद धब्बा है (vi) एकीकरण या इन सभी 5 विशेषताओं के संश्लेषण से जंबो कुत्ते को पहचानने में मदद

मिलती है। यह विज्ञान, गणित, भूगोल के शिक्षण में विशेष उपयोगी है। विशिष्टता और व्यक्तिवाद के मूल्यों को मान्यता दी जाती है और पहचान की एक मजबूत भावना विकसित होती है। संश्लेषण और विश्लेषण दोनों के माध्यम से हम स्वयं को और अपने आस-पास के संसार को समझ सकते हैं।

2.6.2 समाख्या और योग - दर्शन और मूल्य

a) समाख्या

कपिला की गणना का समाख्यास्कूल छह दर्शनों में से सबसे पुराना और दुनिया में पहली तर्कसंगत प्रणाली में से एक है। सांख्य करिका इस वक्तव्य से आरंभ होती है, " दुख की पीड़ा के कारण ही यह जानने की इच्छा पैदा होती है कि इसे कैसे दूर किया जाए"।दुख पर काबू पाने के लिए एक विशेष प्रकार के ज्ञान की आवश्यकता होती है जो हमें अंतर करने में मदद करता है।विश्लेषण और विवेक के माध्यम से व्यक्ति दुख पर विजय पाता है। सीखने और विवेक के मूल्यों पर जोर दिया जाता है। ब्रह्मांड के 25 मूल तत्व या सिद्धांत हैं जो उन तरीकों का वर्णन करता है जिनके द्वारा हम इन सिद्धांतों और उनकी प्रकृति को जान और उनका विश्लेषण कर सकते हैं। सांख्य दर्शन का दावा है कि प्रभाव कारण में निहित है, उदहरणस्वरूप. एक गिलास गिराओ और यह टुकड़ों में टूट जाता है। अगर आपने इसे न गिराया होता तो शीशा नहीं टूटता. इस उदाहरण से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि किसी व्यक्ति को अपने कार्य का जिम्मेदारी स्वयं लेनी होगी। शिक्षक को छात्र की सर्वोत्तम क्षमता का पोषण करना होगा। इसे प्राप्त किया जा सकता है यदि शिक्षक बच्चे की एकाधिक-बुद्धि को विकसित करने के लिए विभिन्न शिक्षण रणनीतियों का उपयोग करता है।सांख्य दर्शन के अनुसार, हमारा अनुभव हमारी पांच इंद्रियों तक सीमित है तथा सीखना इन पांच इंद्रियों का उपयोग करके अनुभवात्मक रूप से होना चाहिए। तदनुसार, शिक्षकों को यथासंभव व्यावहारिक शिक्षण, परियोजनाओं, वाद-विवाद, चर्चा, नाटक, प्रदर्शनियों को शामिल करना चाहिए।

परिवर्तन की दुनिया में, खुशी कुछ चीजों के साथ अस्थायी संबंध का परिणाम है जो उस समय हमारे दिमाग में एक अनुकूल स्थिति पैदा करती है।

एक बार, हम स्वीकार कर लेते हैं कि पूर्ण सुख संभव नहीं है; हम कम उम्मीदें रखने के लिए खुद को अनुशासित कर सकते हैं और परिणामस्वरूप कम निराश हो सकते हैं। सांख्य दर्शन के अनुसार, केवल एक स्वस्थ और केंद्रित व्यक्ति ही मोक्ष प्राप्त कर सकता है। इसलिए विज्ञान, कला और योग पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग हैं।

b) योग

"योग" शब्द संस्कृत शब्द "युज" या 'योक' या 'अपने आप को बड़े अनुशासन के साथ हाथ में काम से जोड़ना' मन और शरीर व्यक्ति और भगवान को एकजुट करें; से लिया गया है (हैमिल्टन, 2001)योग विद्यालय आध्यात्मिक अनुशासन या अनुप्रयोग पर अधिक जोर देता है। हम अपनी इंद्रियों से भटक जाते हैं; योग हमें नियंत्रण, शांति और आंतरिक धारणा प्राप्त करने में मदद करता है। योग का उद्देश्य मन की गतिविधियों को नियंत्रित करना है "चित्त-वृत्ति-निरोध"। (योग सूत्र 1.1-2) राज योग में योगी के प्रशिक्षण को 8 चरणों में विभाजित किया गया था जिसमें आत्म-नियंत्रण, पालन शामिल था।

आसन, प्राणायाम या सांस पर नियंत्रण, एक ही वस्तु पर ध्यान केंद्रित करके मन का संयम, ध्यान और गहरा ध्यान। योग जीवन भर चलने वाला अनुशासन है और जितनी जल्दी बच्चे को इससे परिचित कराया जाए, उतना अच्छा है। योग आत्म-अनुशासन, आत्म-नियंत्रण, एकाग्रता बढ़ाता है, तनाव कम करता है और भावनाओं को नियंत्रित करने में सक्षम बनाता है।

बोध प्रश्न 1

i) भारतीय दर्शन के विभिन्न विद्यालय कौन से हैं?

.....

.....

.....

ii) भारतीय दर्शन के उद्देश्यों का संक्षेप में वर्णन करें?

.....

.....

.....

2.6.3 मीमांसा और वेदांत: दर्शन और मूल्य

a) मीमांसा

8वीं शताब्दी ई. तक, मीमांसा स्कूल का वेदांत में विलय हो गया था। मीमांसा दर्शन (दर्शन) अन्य सभी विद्यालयों से भिन्न था क्योंकि यह जांच का विद्यालय था न कि मोक्ष का विद्यालय। इसका मूल उद्देश्य वेदों की व्याख्या करना था।

b) वेदांत

वेदांत वेदों का अंत हैं और छह दर्शनों में सबसे महत्वपूर्ण हैं। आधुनिक हिंदू धर्म और दर्शन की कई विशेषताएं वेदांत और उसके उप-संप्रदायों से ली गई हैं। 8वीं शताब्दी ईस्वी में, बादरायण के ब्रह्म सूत्र पर शंकर की टिप्पणियों ने 'अद्वैत' अद्वैत या अद्वैतवाद (यानी किसी दूसरे को अनुमति नहीं) की अवधारणा पेश की। केवल एक ही अस्तित्व है और वह ब्रह्म है, जो एक ब्रह्मांड का सार है। सब कुछ ब्रह्म है और इसलिए व्यक्ति का स्वयं या आत्मा भी ब्रह्म है, "आत्मन ही ब्रह्म है"। सत्य दो प्रकार के होते हैं-पारंपरिक और निरपेक्ष। सत्य के रोजमर्रा के स्तर पर, संसार ब्रह्म द्वारा बनाया गया और धीरे-धीरे विकसित हुआ। लेकिन उच्चतम स्तर पर, सच्चाई यह थी कि, देवताओं सहित दुनिया असत्य थी; एक भ्रम, एकमात्र वास्तविकता ब्रह्म थी। अंकारा इसे समझाने के लिए एक सरल उदाहरण देता है। एक यात्री ने कुंडलित रस्सी देखी और सोचा कि यह एक साँप है। नकली साँप उसे असली लगा और उस पर उसका असली असर हुआ। शायद उसे पसीना आने लगा, उसका गला सूखने लगा और उसके दिल की धड़कन तेज़ हो गई। वह डर गया और जब उसने वास्तव में रस्सी को छुआ, तभी उसका झूठा विचार दूर हो गया और उसने डरना बंद कर दिया। इसलिए हमारी अज्ञानता मिथ्या विचार का कारण बनती है। जब हमारा अज्ञान दूर हो जाता है तभी हमें पूर्ण सत्य का एहसास होता है। ज्ञान की यह

इच्छा, प्रश्न पूछने, उत्तर खोजने की आवश्यकता को शिक्षाशास्त्र के उपयुक्त उपकरणों द्वारा छात्रों में विकसित किया जाना है। छात्रों को किताबें, फिक्शन और नॉन-फिक्शन पढ़ने और उनके प्रति प्रेम विकसित करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए; जानकारी का विश्लेषण करें, उनकी पाठ योजना में शोध करें। शिक्षकों को बहस, चर्चा, महत्वपूर्ण प्रश्न, इंटरैक्टिव सत्र निर्धारित करने होंगे; छात्रों को अपने स्वयं के निष्कर्ष पर पहुंचने और सूचित निर्णय लेने में सक्षम बनाना। इस तरह कई पूर्वाग्रहों और अंधविश्वासों को दूर किया जा सकता है और छात्र अधिक जिम्मेदार नागरिक बनकर उभरेंगे।

2.6.4 विशिष्टाद्वैत और उपनिषद- उनके दर्शन और मूल्य

a) **विशिष्टाद्वैत**

पंचरात्र प्रणाली में, आत्मा ईश्वर के साथ एक है लेकिन इसका अलग अस्तित्व भी है। इसे 11वीं-12वीं शताब्दी में रामानुज ने आगे विकसित किया। उन्होंने भक्ति योग की अवधारणा विकसित की, गहन भक्ति के माध्यम से, भक्त को पता चलता है कि वह भगवान का एक हिस्सा है और स्वयं को पूरी तरह से भगवान को समर्पित कर देता है। आत्मा ईश्वर से एक है तथा पृथक भी है। इसलिए उनकी प्रणाली को "**विशिष्टाद्वैत**" प्रणाली या "योग्य अद्वैतवाद" के रूप में जाना जाता है। यह रिश्ता ब्रह्म, भगवान और व्यक्तिगत भक्त के बीच है। जिस तरह गुलाब का रंग बिना रंग के नहीं हो सकता, उसी तरह ब्रह्म का अस्तित्व 'स्वयं' या भक्त के बिना नहीं हो सकता, जो उसकी रचना है। योग के अभ्यास से - कर्मयोग (काम का योग), ज्ञानयोग (ज्ञान का योग) और भक्तियोग (भक्ति का योग) व्यक्ति मोक्ष प्राप्त कर सकता है। वेदांत आज भी एक "जीवित विद्यालय" है। इसके कई अनुयायियों में श्री अरबिंदो, स्वामीविवेकानंद और डॉ.एस.राधाकृष्णन हैं। 1893 में, शिकागो में विश्व धर्म परिषद में, विवेकानन्द ने पश्चिम में और रामकृष्ण मिशन की स्थापना में हिंदू धर्म के रूप में अद्वैत वेदांत की अवधारणा पेश की। (हैमिल्टन 2001)।

b) उपनिषद

ऐसा माना जाता है कि उपनिषदों को देवताओं द्वारा प्रकट किया गया था। उपनिषद एक संस्कृत शब्द है जो 'उप' से बना है जिसका अर्थ है 'निकट', 'नि' का अर्थ है 'नीचे' और 'सद' का अर्थ है 'बैठना'।'गुरु-शिष्य परंपरा' की तरह व्यक्ति आध्यात्मिक शिक्षक या 'गुरु' के पास बैठता है। छात्रों को प्रेमपूर्ण और क्षमाशील ईश्वर की अवधारणा से परिचित होना है। छात्रों को अपने तरीके से ईश्वर से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है; शायद एक दोस्त के रूप में जिससे वे रोज़ बात कर सकें और अपने सुख-दुख साझा कर सकें।

शिक्षक ऐसी गतिविधियों की योजना बना सकते हैं जो पढ़ाते समय सभी चार मूल्यों को स्थापित करें। ऐतिहासिक पूजा स्थलों की यात्रा या प्रदर्शनियों का आयोजन किया जा सकता है। छात्र छोटी सेवा गतिविधियों में पहल कर सकते हैं और शामिल हो सकते हैं, जैसे इलाके के 30 गरीब बच्चों के लिए एक मेले का आयोजन करना।

2.6.5 हेटेरोडॉक्स (नास्तिकता) स्कूल: दर्शन और मूल्य

ये स्कूल वेदों और भगवान के अधिकार को स्वीकार नहीं करते हैं और इसलिए उन्हें नास्तिक के रूप में वर्णित किया गया है। ये हैं बौद्ध धर्म, जैन धर्म और चार्वाक। बौद्ध धर्म और जैन धर्म

ने भारतीय समाज में ब्राह्मणों की प्रधानता को चुनौती दी; अर्थशास्त्र और राजनीति. ये बी.सी. के कई विरोध आंदोलनों में से दो थे। छठी शताब्दी.

a) बौद्ध धर्म

बौद्ध दर्शन सिद्धार्थ गौतम, जिन्हें बाद में बुद्ध के नाम से जाना गया, की शिक्षाओं पर आधारित मान्यताओं की एक प्रणाली है। बौद्ध धर्म एक ऐसा धर्म है जो धार्मिक सहिष्णुता पर जोर देता है। बौद्ध दर्शन में, ब्रह्मांड की तीन विशेषताओं को 'अस्तित्व के तीन चिह्न' के रूप में जाना जाता है। फिर भी, कोई अमर आत्मा नहीं है (धम्मपद 277-9)

b) जैन धर्म

जैन धर्म दुनिया के सबसे पुराने धर्मों में से एक है। 24वें तीर्थंकर, महावीर ईसा पूर्व 550 उत्तरी भारत के बिहार में, गौतम बुद्ध के समकालीन थे। जैन दर्शन इस विचार पर आधारित है कि सत्य का एहसास करने के लिए व्यक्ति को मानव स्वभाव के नकारात्मक पहलुओं पर विजय प्राप्त करनी होगी। जीव (जीवित) और अजीव (निर्जीव जैसे कुर्सी, टेबल) के बीच की बातचीत ब्रह्मांड के विकास के लिए ज़िम्मेदार है। जब आत्मा अपने सभी अजीव बंधनों से मुक्त हो जाती है, तो वह शुद्ध हो जाती है और मुक्ति प्राप्त कर लेती है। जैन धर्म आत्म-अनुशासन, आत्म-नियंत्रण पर जोर देता है; अपने शिष्यों में सकारात्मक सोच. यह अहिंसा को महत्व देता है और निर्जीव वस्तुओं को भी गरिमा और सम्मान देता है।

2.7 भक्ति, सिख धर्म, इस्लाम और सूफीवाद और ईसाई धर्म

a) **भक्ति**

7वीं-13वीं शताब्दी ई. तक भारत में भक्ति आंदोलन ने अनुष्ठानों की तुलना में भक्ति और मूल्यों के अभ्यास को अधिक महत्व दिया। यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि एक ईश्वर की भक्ति का मतलब यह नहीं है कि आप दूसरे की पूजा नहीं कर सकते। इस प्रकार इसने सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता और प्रेम को प्रोत्साहित किया। प्रसिद्ध भक्ति संत शंकराचार्य, रामानुज, रामानंद, कबीर, श्रीचैतन्य और मीराबाई हैं। भक्ति आंदोलन प्रेम, भक्ति और सहिष्णुता के मूल्यों पर केंद्रित था।

b) **सिखधर्म**

सिख धर्म की शुरुआत गुरु नानक ने की थी. यह भक्ति पर आधारित था और ब्राह्मणों की सर्वोच्चता को अस्वीकार करता था। गुरु नानक की शिक्षा का अभ्यास तीन तरीकों से किया जाता है: पवित्र नाम का जाप (नाम जपना) और इस प्रकार हर समय भगवान को याद करना, भगवान के प्रति निरंतर भक्ति,: कमाई (किरत करो) या शोषण या धोखाधड़ी के बिना ईमानदारी से जीवन यापन करना और दूसरों के साथ साझा करना (वंड चाक्को), जरूरतमंदों की मदद करना। नानक ईश्वर, मुस्लिम ईश्वर, अल्लाह और हिंदू ईश्वर की एकता में विश्वास करते थे।

c) इस्लाम

जब 8वीं शताब्दी ई. में मुसलमानों द्वारा भारत में इस्लाम लाया गया, तब हिंदू धर्म और इस्लाम दोनों सदियों तक सह-अस्तित्व में थे। मुगल सम्राट अकबर का 'दीन-ए-इलाही'

सभी धर्मों की सर्वोत्तम प्रथाओं को लेकर एक नई धार्मिक नीति बनाने का प्रयास था। 8वीं-12वीं शताब्दी ई. के इस्लाम में, दो मुख्य दार्शनिक विचार थे (a) कलाम, जो इस्लामी धार्मिक प्रश्नों से संबंधित था, और (b) फ़लसफ़ा, जो अरस्तू और प्लेटो के यूनानी दर्शन से प्रभावित था। इस्लाम में नमाज़ से पहले खुद को धोना, नमाज़ की नियमितता, रमज़ान के महीने में उपवास और ज़कात या धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए अनिवार्य भुगतान बहुत महत्वपूर्ण हैं।

d) सूफ़ीवाद

इस्लामी दर्शन का सर्वोच्च उदाहरण सूफ़ीवाद है। भारत में सूफ़ीवाद का विकास 13वीं-15वीं शताब्दी में हुआ। यह इस्लाम का रहस्यमय पहलू है और अरस्तू और प्लेटो के यूनानी दर्शन से प्रभावित था। सूफ़ियों का मानना था कि सभी धर्म 'सच्चाई जानने की इच्छा की अभिव्यक्ति' हैं। सूफ़ीवाद में, भक्त पीर या गुरु की मदद से ईश्वर के प्रत्यक्ष व्यक्तिगत अनुभव के माध्यम से दिव्य प्रेम और ज्ञान की तलाश करते हैं। यह कहता है कि आत्म-नियंत्रण और ईश्वर के प्रति प्रेमपूर्ण भक्ति के माध्यम से ईश्वर से जुड़ना संभव है। कुछ प्रसिद्ध सूफ़ी संत निज़ामुद्दीन औलिया, नसीरुद्दीन चिराग और ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती हैं।

e) ईसाई धर्म

माना जाता है कि भारत में ईसाई धर्म की शुरुआत 52 ईस्वी में हुई थी। ईसाई दर्शन में ईश्वर शुरुआत और अंत है। भगवान से बड़ा कुछ भी नहीं है. ईसाई पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की पवित्र त्रिमूर्ति के विचार में विश्वास करते हैं। जबकि भगवान ने मनुष्य को बुद्धि और स्वतंत्र इच्छा का उपहार दिया है, मनुष्य गलत काम की स्थिति में जी रहा है जिससे उसे बचाना या छुटकारा दिलाना है। यह मुक्ति या मुक्ति केवल यीशु मसीह के माध्यम से संभव है जो मानव जाति को बचाने के लिए क्रॉस पर मरे। मृत्यु के बाद पुनरुत्थान और शाश्वत जीवन की अवधारणा ईसाई धर्म के लिए आवश्यक है। 'अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो', 'हमारे पापों को क्षमा करो जैसे हम उन लोगों को क्षमा करते हैं जिन्होंने हमारे विरुद्ध पाप किया है' भगवान की प्रार्थना का एक अनिवार्य हिस्सा है। इसलिए, ईमानदारी, क्षमा और चुनाव करने की स्वतंत्रता- ये ईसाई धर्म के कुछ महत्वपूर्ण मूल्य हैं।

2.8 आधुनिक भारतीय दर्शन

19वीं शताब्दी ई. में भारत में प्रमुख सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन हुए। पहली बार, भारतीयों को बेंथम, मिल और लॉक के उदार पश्चिमी दर्शन से अवगत कराया गया। बंगाल पुनर्जागरण के अग्रदूत, राजा राममोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना की। 20वीं सदी में भारतीय दर्शन में योगदान देने वाले लोग थे रवीन्द्रनाथ टैगोर, मोहम्मद इकबाल, श्री अरबिंदो घोष, महात्मा गांधी और डॉ. एस.राधाकृष्णन। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने प्रेम को ज्ञान से ऊपर और समाज को राज्य से ऊपर रखा। महात्मा गांधी का दृढ़ विश्वास था कि "सत्य ही ईश्वर है" न कि "ईश्वर सत्य है"। उन्होंने अहिंसा के अपने सिद्धांत को विचार, शब्द और कर्म से निभाया। उन्होंने इसे राजनीति में और सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अन्याय के खिलाफ अपनी लड़ाई में प्रभावी ढंग से इस्तेमाल किया। पश्चिमी दर्शन में अंतर्निहित तर्कवाद, समानता, व्यक्तिवाद के मूल्यों ने आधुनिक भारतीय विचारकों को प्रभावित किया। ईश्वर की एकता, प्रेम, सेवा, पूर्णता, सत्य, अहिंसा आधुनिक भारतीय दर्शन के आवश्यक मूल्य हैं।

बोध प्रश्न 2

i) सूफ़ीवाद को वर्णित कीजिए?

.....

.....

.....

ii) कुछ प्रमुख आधुनिक भारतीय दार्शनिकों के नाम बताइए|

.....

.....

.....

2.9 सारांश

भारतीय दर्शन बहुत पुराना है और इसमें हिंदू दर्शन, बौद्ध दर्शन और दर्शन शामिल हैं। व्यापक स्तर पर, इसमें भक्ति परंपरा, सिख धर्म, सूफीवाद और इस्लाम, ईसाई धर्म, पारसी धर्म के प्रभाव पर प्रतिक्रिया शामिल है। भारतीय दर्शन का उद्देश्य सत्य को देखने में सहायता करना है। भारतीय दर्शन की चार मुख्य अवधारणाएँ धर्म, मोक्ष, कर्म और आत्मा हैं। कर्तव्यों का सही ढंग से पालन एक महत्वपूर्ण मूल्य है जो भारतीय दर्शन का अभिन्न अंग है। वैदिक काल भारतीय दर्शन और साहित्य से समृद्ध है। वेदों की रचना ब्रह्मा ने की जबकि वेदांगों की रचना मनुष्यों ने की। आस्तिक और नास्तिक शास्त्रीय भारतीय दर्शन के दो विद्यालय हैं। दर्शनशास्त्र के छह आस्तिक विद्यालय हैं। बौद्ध धर्म, जैन धर्म और चार्वाक दर्शन के नास्तिक विद्यालय हैं। गणना का सांख्य विद्यालय और योग विद्यालय मन और शरीर को एकजुट करते हैं; व्यक्ति और भगवान. योग विद्यालय आध्यात्मिक अनुशासन या अनुप्रयोग पर अधिक जोर देता है। वेदांत वेदों का अंत है। आधुनिक हिंदू धर्म और दर्शन की कई विशेषताएं वेदांत और उसके उप-स्कूलों से ली गई हैं।

वेदांत आज भी एक "जीवित विद्यालय" है। ऐसा माना जाता है कि उपनिषदों को एक गुरु द्वारा अपने शिष्यों को पढ़ाए गए भगवान के गुप्त ग्रंथों द्वारा प्रकट किया गया था। भारत में भक्ति आंदोलन में, 7वीं-13वीं शताब्दी ई. से, अनुष्ठान की तुलना में भक्ति और अभ्यास अधिक महत्वपूर्ण थे।

सिख धर्म की शुरुआत गुरु नानक ने की थी. यह भक्ति पर आधारित था और ब्राह्मणों की सर्वोच्चता को अस्वीकार करता था। भारत में इस्लाम 8वीं शताब्दी में मुसलमानों द्वारा लाया गया था, हिंदू धर्म और इस्लाम दोनों सदियों से सह-अस्तित्व में थे। इस्लामी दर्शन का सर्वोच्च उदाहरण सूफीवाद है। सूफीवाद में, भक्त पीर या गुरु की मदद से ईश्वर के प्रत्यक्ष व्यक्तिगत अनुभव के माध्यम से दिव्य प्रेम और ज्ञान की तलाश करते हैं। माना जाता है कि भारत में ईसाई धर्म की शुरुआत 52 ईस्वी में हुई थी। 19वीं शताब्दी ईस्वी में, भारत में प्रमुख सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन हुए, जिसने भारत में कई आधुनिक विचारकों को जन्म दिया। स्वामी विवेकानन्द ने हिन्दू धर्म में निहित गतिशीलता को पुनर्जीवित किया। उन्होंने 1897 ई. में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। भारतीय मूल्य सहिष्णुता, क्षमा, भक्ति, वैज्ञानिक स्वभाव, अहिंसा, सत्य, विनम्रता, वैराग्य और कई अन्य मूल्यों का एक समृद्ध स्रोत हैं। हमें अपनी समृद्ध परंपरा के प्रति जागरूक होना होगा और उसका संरक्षण करना होगा।

2.10 बोध प्रश्न के उत्तर

बोध प्रश्न 1

i) भारतीय दर्शन के विभिन्न स्कूल रूढ़िवादी और हेटेरोडॉक्स स्कूल हैं।

ii) मोक्ष की उच्च प्राप्ति, यानी आध्यात्मिक प्रगति की तलाश के अलावा, भारतीय दर्शन सत्य और ज्ञान की तलाश करता है।

बोध प्रश्न 2

i) भारत में सूफीवाद का विकास 13वीं-15वीं शताब्दी में हुआ था। यह इस्लाम का रहस्यमय पहलू है। सूफ़ीवाद में भक्त पीर या गुरु की सहायता से ईश्वर के प्रत्यक्ष व्यक्तिगत अनुभव के माध्यम से दिव्य प्रेम और ज्ञान प्राप्त करते हैं।

ii) आधुनिक भारतीय दार्शनिक राजा राममोहन राय, रवींद्रनाथ टैगोर, मोहम्मद इकबाल, अरबिंदो घोष, एम.के. गांधी और डॉ. एस.राधाकृष्णन हैं।

2.11 सन्दर्भ

बाशम ए.एल. (2004)। वह आश्चर्य भारत था; तीसरा संशोधित संस्करण पिकाडोर;लंदन

कार्मन जे. (1974). रामानुज का धर्मशास्त्र: येल यूनिवर्सिटी प्रेस: यूएसए

दासगुप्ता एस.(1975). भारतीय दर्शन का इतिहास, खंड III। मोतीलाल बनसीदास दिल्ली

हैमिल्टन एस. (2001)। भारतीय दर्शन: एक अत्यंत संक्षिप्त परिचय; ओयूपी न्यूयॉर्क

हिरियाना एम. (1985)। भारतीय दर्शन की अनिवार्यताएँ: जॉर्ज एलन और अनविन; लंडन

नॉट के. (1998)। हिंदू धर्म: एक बहुत संक्षिप्त परिचय: ओयूपी न्यूयॉर्क

मजूमदार आर.सी. (1994)। प्राचीन भारत मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लिमिटेड: दिल्ली

राधाकृष्णन, एस. (2009) इंडियन फिलॉसफी (खंड 1 और 2), दूसरा संस्करण, ओयूपी, दिल्ली

श्रीनिवास सी., एस.एम. (2000).वैष्णववाद, इसका दर्शन, धर्मशास्त्र और धार्मिक अनुशासन; मोतीलाल बनारसीदास; दिल्ली

ऑनलाइन स्रोत:

http://www.britannica.com/eb/

"**Christianity**." EncyclopædiaBritannica. 2009. EncyclopaediaBritannica Online. Retrieved 08 Nov. 2009.http://www.britannica.com/EBchecked/topic/115240/Christianity retrieved 08 Nov.2009

chishtihijazi.wordpress.com/.../chirag-e-dehlawi-hazrat-khawaja-nasiruddin-mahmood-ra/ - Retrieved Jan 30th 2011

www.dargahsharif.com/k4%20mehboobpak.htmlRetrieved Jan 30th 2011

www.surrenderworks.com/silsilas/chishtia_aliya.html Retrieved Jan 30th 2011

www.**sufi**order.org/**Ethics**Guidelines.pdf retrieved February 4th 2011

इकाई 3 भारतीय समाज में सांस्कृतिक बहुलवाद

इकाई की रूपरेखा

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 सभ्यता एवं संस्कृति

3.4 पहचान की बहुलता

3.5 भारत की सांस्कृतिक विविधता एवं समृद्धि

3.6 भारत में सांस्कृतिक बहुलवाद

3.7 सांस्कृतिक बहुलवाद और भारतीय संविधान

3.8 सांस्कृतिक बहुलवाद में अंतर्निहित मूल्य

3.9 सांस्कृतिक रूप से बहुलवादी समाज में रहने की चुनौतियाँ

3.10 बच्चों के लिए गतिविधियाँ

3.11 सारांश

3.12 बोध प्रश्न के उत्तर

3.13 सन्दर्भ

3.1 प्रस्तावना

इस खंड में आपने अब तक जो इकाइयाँ पढ़ी हैं वे मूल्यों के स्रोत के रूप में भारतीय संस्कृति और उसके दर्शन पर हैं। इस इकाई में हम भारतीय संस्कृति में बहुलवाद के संदर्भ में मूल्यों पर चर्चा करेंगे। कल्पना कीजिए कि यह कितना उबाऊ होगा यदि हम सभी एक जैसे कपड़े पहनेंगे, एक ही भाषा बोलेंगे और एक ही प्रकार का खाना खाएंगे! सौभाग्य से, जो लोग भारत में रहते हैं, उनके लिए भोजन, कपड़े, रीति-रिवाज, भाषा, साहित्य, त्योहार, संगीत, कला और नृत्य की समृद्ध विविधता है। यह विविधता विभिन्न ऐतिहासिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रभावों का परिणाम है, जो पिछले 5000 वर्षों में भारत में हुए हैं। स्कूलों को यह सुनिश्चित करने की ज़रूरत है कि बच्चे न केवल सहन करें बल्कि मतभेदों का सम्मान करें, विविधता की सराहना करें और एकता की भावना रखें। इसलिए, गतिविधियों को पाठ्यक्रम में एकीकृत करने की आवश्यकता है ताकि बच्चों में ऐसे मूल्यों का विकास हो सके। इस इकाई में हम इन पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित करेंगे।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद, आपसे अपेक्षा की जाती है:

- संस्कृति और सभ्यता पर चर्चा करें;
- पहचानों की बहुलता की सराहना करें;

- भारत में सांस्कृतिक बहुलवाद की व्याख्या करें;
- सांस्कृतिक बहुलवाद के संरक्षण में भारतीय संविधान की भूमिका की व्याख्या कर सकेंगे;
- सांस्कृतिक बहुलवाद में अंतर्निहित मूल्यों की पहचान करें;
- सांस्कृतिक बहुलवाद को बढ़ावा देने के विभिन्न तरीकों पर चर्चा करें;
- सांस्कृतिक बहुलवाद पर वैश्वीकरण के प्रभाव पर चर्चा करें;
- सांस्कृतिक रूप से बहुलवादी समाज में रहने की चुनौतियों का विश्लेषण करें

3.3 सभ्यता एवं संस्कृति

भारत की संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृतियों में से एक है।मध्यकाल से ही, नृत्यों, भाषाओं, धर्मों, लोगों, उनके रीति-रिवाजों और त्योहारों के रूप में विभिन्न सांस्कृतिक विविधताएँ विद्यमान हैं।

भारत के हर राज्य की अपनी अलग संस्कृति है और उसने अपनी अलग सांस्कृतिक पहचान बनाई है।इतनी सांस्कृतिक विविधताओं के बावजूद, भारतीय एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं और यही इसे एक महान देश बनाता है। 5000 वर्ष से अधिक पुरानी सभ्यता से चली आ रही, भारत की संस्कृति को प्रवासी जनसंख्या द्वारा सुशोभित किया गया है, जो समय के साथ भारतीय जीवन शैली में समाहित हो गई। इस महान भारतीय संस्कृति में भारतीय संगीत, भारतीय नृत्य, भारतीय व्यंजन, वेशभूषा और भारतीय त्यौहार शामिल हैं।

बोनमेइसन का दावा है कि कई संस्कृतियाँ एक सभ्यता का हिस्सा बनती हैं (2000, पृष्ठ 86)। भारतीय सभ्यता में हड़प्पा, वैदिक आर्य, बौद्ध, जैन की संस्कृतियाँ, आक्रमणकारियों, कुषाण, शक, यूनानी, तुर्क-अफगान, दिल्ली सल्तनत, मुगल और ब्रिटिश की संस्कृतियों का प्रभाव शामिल है। यह भक्तिवाद, सूफीवाद से भी प्रभावित है। कनिष्क के अधीन कुषाणों ने गांधार कला विद्यालय की शुरुआत की, जिसमें बौद्ध धर्म को चित्रित करने के लिए ग्रीक कला का उपयोग किया गया था। हालाँकि भारत में इस्लाम 8वीं शताब्दी में अरबों द्वारा लाया गया था, लेकिन यह भारत में प्रमुख धर्म बन गया (तम्मिता-डालगोडा, 2003)। हिंदी, भारतीय राष्ट्रीय भाषा, देवनागरी लिपि में, 3500 साल पहले आर्यों द्वारा शुरू की गई एक विदेशी भाषा संस्कृत का उत्पाद है। 12वीं शताब्दी में मुग़लों द्वारा भारत में फ़ारसी भाषा के आरंभ के कारण भारतीय भाषा उर्दू का विकास हुआ। (तम्मिता-डालगोडा, 2003), इनके अलावा, ईसाई मिशनरियों का भी हमारी शैक्षिक प्रणाली पर गहरा प्रभाव पड़ा|

3.4 पहचान की बहुलता

बच्चों को यह समझना चाहिए कि भारत एक गतिशील इकाई है जिसमें बहुत विविधता है। किसी व्यक्ति की पहचान सिर्फ भाषा, धर्म, खान-पान से नहीं बल्कि उसकी अनेक पहचान से होती है। इससे हमारा तात्पर्य है कि एक व्यक्ति एक ही समय में कई अलग-अलग समूहों से संबंधित हो सकता है, जिनमें से प्रत्येक दिए गए संदर्भ में महत्वपूर्ण है। सभी पहचानों में ईमानदारी, दयालुता, निःस्वार्थता आदि जैसे बुनियादी मानवीय मूल्य समान हैं। जैसा कि अमर्त्य सेन कहते हैं, "...इतिहास और पृष्ठभूमि खुद को और उन समूहों को देखने का एकमात्र

तरीका नहीं है जिनसे हम संबंधित हैं। ऐसी अनेक श्रेणियाँ हैं जिनसे हम एक साथ संबंधित हैं। मैं, एक ही समय में, एक एशियाई, एक भारतीय नागरिक, एक बांग्लादेशी वंशावली वाला बंगाली, एक अमेरिकी या ब्रिटिश निवासी, एक अर्थशास्त्री, दर्शनशास्त्र में निपुण, एक लेखक, एक संस्कृतज्ञ, धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र में एक मजबूत विश्वास रखने वाला व्यक्ति हो सकता हूं। एक गैर-धार्मिक जीवन शैली वाला व्यक्ति, हिंदू पृष्ठभूमि से…"।

भारतीय संस्कृति में मां का बहुत महत्व है। वह एक मलयाली ईसाई हो सकती है, जिसकी शादी बंगाल में रहने वाले एक हिंदू से हुई हो। फिर भी उनकी पहचान भारतीय परंपराओं पर आधारित है। वह अपने बच्चों का पालन-पोषण अपने परिवार, संस्कृति और परंपरा के मूल्यों के अनुसार करेंगी। वह चाहेगी कि वे महाभारत की तरह युधिष्ठिर की तरह ईमानदार बनें; वह अपने बच्चों को बड़ों का सम्मान करने के लिए प्रोत्साहित करेगी, वह उन्हें सबके भीतर ईश्वर को पहचानने के लिए कहेगी, जैसे वह उन्हें 'नमस्कार' कहना सिखाती है। वह उन्हें साफ-सफाई और स्वच्छता सिखाएंगी, खासकर प्रार्थना की तैयारी में।

शिक्षक बच्चों को विभिन्न समूहों को पहचानने और उनके बारे में जागरूकता विकसित करने में सहायता कर सकते हैं, जिनसे छात्र संबंधित हो सकते हैं। साथ ही शिक्षकों को उन्हें यह पहचानने में मदद करनी चाहिए कि सभी अलग-अलग समूहों के पीछे मानवीय मूल्यों की बुनियादी एकता है जो एक महान राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करती है। छात्रों को एक स्कूल/कॉलेज/विश्वविद्यालय के छात्र सदस्य के रूप में, अपने स्वयं के संगीत, कला, नृत्य, साहित्य वाले परिवार/समुदाय/धर्म/भाषाई समूह/भौगोलिक क्षेत्र के सदस्य के रूप में उनके कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए। संगीत, नाटक, वाद-विवाद, चर्चा, पोस्टर तैयारी और प्रस्तुति जैसी विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से प्रत्येक पहलू का जश्न मनाया और सराहा जा सकता है। कोई अनौपचारिक संगीत समारोह या विभिन्न नृत्यों का कार्यक्रम हो सकता है। छात्र विभिन्न शिल्पों और वेशभूषाओं की प्रदर्शनी लगा सकते हैं। गीतों का एक अनौपचारिक संगीत कार्यक्रम आयोजित किया जा सकता है। इसलिए "मैं कौन हूँ?" प्रश्न का उत्तर देना आसान नहीं है। क्योंकि ये सभी पहचानें मिलकर एक व्यक्ति के साथ-साथ उसके व्यक्तित्व के गुणों, पसंद, नापसंद, मूल्यों और विश्वासों का निर्माण करती हैं।

3.5 भारत की सांस्कृतिक विविधता एवं समृद्धि

भारत की संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृतियों में से एक है। मध्यकाल से ही नृत्यों, भाषाओं, धर्मों, लोगों, उनके रीति-रिवाजों और त्योहारों के रूप में विविध सांस्कृतिक विविधताएँ प्रचलित रही हैं।

हमारे शिष्टाचार, एक-दूसरे से संवाद करने का तरीका आदि संस्कृति के महत्वपूर्ण घटकों में से एक हैं। भले ही हमने जीवन जीने के आधुनिक साधनों को स्वीकार कर लिया है, अपनी जीवनशैली में सुधार कर लिया है, लेकिन हमारे मूल्य और मान्यताएँ अभी भी अपरिवर्तित हैं। पूरे देश में अद्भुत सांस्कृतिक विविधता है। और दुनिया में शायद ही कोई संस्कृति हो जो भारत जितनी विविध और अनोखी हो। भारत एक विशाल देश है, जिसमें विभिन्न प्रकार की भौगोलिक विशेषताएं और जलवायु परिस्थितियाँ हैं और यह कुछ सबसे प्राचीन सभ्यताओं का घर है, जिनमें चार प्रमुख विश्व धर्म, हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म और सिख धर्म शामिल हैं। भारतीय संस्कृति विभिन्न शैलियों और प्रभावों का मिश्रित मिश्रण है। भारत में त्योहारों की

विशेषता रंग, उल्लास, उत्साह, प्रार्थनाएं और अनुष्ठान हैं और संगीत के क्षेत्र में लोक, लोकप्रिय, पॉप और शास्त्रीय संगीत की विविधताएं हैं। भारतीय संस्कृति प्राचीनता, एकता, निरंतरता और अपनी प्रकृति की सार्वभौमिकता के कारण सदियों से कायम है। इस प्रकार भारतीय संस्कृति के परिवेश में कोई 'भारतीय संगीत', 'भारतीय नृत्य', 'भारतीय सिनेमा', 'भारतीय साहित्य', भारतीय व्यंजन' 'भारतीय मेले और त्यौहार' इत्यादि की पहचान कर सकता है। भारतीय संस्कृति हमें आपस में सहयोग और बेहतर जीवन के महत्व के बारे में बताती है और इसके बाद इस दुनिया को रहने के लिए एक बेहतर जगह बनाने का संदेश देती है।

बोध प्रश्न1

i) एक शिक्षक छात्रों को सांस्कृतिक बहुलवाद के पहलुओं को कैसे सिखा सकता है?

……..

……..

……..

ii) भारतीय संदर्भ में सांस्कृतिक बहुलवाद को परिभाषित करें?

……..

……..

……..

iii) भारतीय सांस्कृतिक विविधता के बारे में संक्षेप में वर्णन करें?

……..

……..

……..

3.6 भारत में सांस्कृतिक बहुलवाद

जब किसी दिए गए भौगोलिक क्षेत्र में कई संस्कृतियाँ एक दूसरे पर हावी हुए बिना सह-अस्तित्व में रहती हैं, तो इसे "सांस्कृतिक बहुलवाद" के रूप में जाना जाता है। भारत में एक समान राष्ट्रीय संस्कृति है, लेकिन साथ ही विभिन्न समुदायों को अपनी सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं को बनाए रखने और विकसित करने की स्वतंत्रता है, जब तक कि वे राष्ट्र की एकता और सामान्य कल्याण के लिए हानिकारक न हों। यह भारतीय संदर्भ में सांस्कृतिक बहुलवाद है। नेहरू (1946) ने भारत के भीतर "अनेकता में एकता" का वर्णन करते हुए कहा, "यह जानना दिलचस्प है कि बंगाली, मराठा, गुजराती, तमिल, आंध्र, उड़िया, असमिया, कैनरी, मलयाली कैसे रहते हैं।" सिंधी, पंजाबी, पठान, कश्मीरी, राजपूत और हिंदुस्तानी भाषी लोगों के महान केंद्रीय समूह ने सैकड़ों वर्षों से अपनी विशिष्ट विशेषताओं को बरकरार रखा है... विशिष्ट रूप से भारतीय बने हुए हैं। भारतीय संस्कृति भव्य और अद्वितीय है और इसने अन्य संस्कृतियों को बढ़ावा दिया है। गांधी को हम भारतीय सांस्कृतिक विरासत का अवतार कह सकते हैं। वह वह व्यक्ति थे जिन्होंने भारत की संस्कृति पर प्रकाश डाला और इसकी उदारता एवं संश्लेषण की विशेषताओं के बारे में बताया।देश की संस्कृति का इतिहास प्राचीन अतीत तक जाता है या हम निश्चित रूप से इसे कम से कम द्रविड़ युग के साथ जोड़ सकते हैं।

बाद में, कई अन्य संस्कृतियाँ भारतीय संस्कृति के संपर्क में आईं और भारत की परिस्थितियों और परिस्थितियों के अनुसार आसानी से इसमें विलीन हो गईं। इसी सन्दर्भ में गांधीजी ने भारतीय परिवेश की एकरूपता को इस संश्लेषण का आधार माना।भारत दुनिया में सबसे अधिक धार्मिक विविधता वाले देशों में से एक है, यहां कुछ सबसे गंभीर धार्मिक समाज और संस्कृतियां हैं। धर्म अभी भी यहां के कई लोगों के जीवन में एक केंद्रीय और निश्चित भूमिका निभाता है। 80% लोगों का धर्म हिंदू धर्म है। सभी भारतीयों में से लगभग 13% इस्लाम का पालन करते हैं। यह हिंदू धर्म, सिख धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म का जन्मस्थान है और उन्हें इसकी समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा में स्वीकार किया जाता है। इस्लाम, ईसाई धर्म, पारसी धर्म और यहूदी धर्म अपने अनूठे तरीकों से मनाए जाते हैं। भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है, जहां कोई राज्य धर्म नहीं है। भारत का कोई आधिकारिक या स्थापित राज्य धर्म नहीं है। इसके पड़ोस के अधिकांश अन्य राज्य धार्मिक पहचान की पुष्टि करते हैं: पाकिस्तान और बांग्लादेश इस्लामी राज्य हैं; श्रीलंका बौद्ध धर्म को एक विशेष दर्जा देता है; और नेपाल एक हिंदू राष्ट्र है. हालाँकि, भारत में कोई स्थापित धर्म नहीं है और यह सभी समुदायों के साथ समान व्यवहार करने की उसकी प्रतिबद्धता का पहला प्रतीक है। यह संवैधानिक प्रावधानों सेजुड़ा है जो धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा करता है। जबकि अधिकांश समाज व्यक्तियों को धार्मिक विश्वास का अधिकार देते हैं, भारत में समुदायों को अपनी विशिष्ट धार्मिक प्रथाओं को जारी रखने का अधिकार प्राप्त है। शायद इसका सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा यह है कि परिवार के सभी मामलों में, व्यक्ति अपने समुदाय के व्यक्तिगत कानूनों द्वारा शासित होते हैं। धार्मिक समुदायों को भी अपने स्वयं के धार्मिक और धर्मार्थ संस्थान स्थापित करने का अधिकार है; वे अपने स्वयं के शैक्षणिक संस्थान स्थापित कर सकते हैं, और सबसे बढ़कर, ये संस्थान राज्य से वित्तीय सहायता प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार विभिन्न धार्मिक समुदायों को सार्वजनिक मान्यता दी गई है और उन्हें अपनी जीवन शैली जारी रखने के लिए जगह दी गई है।

22 आधिकारिक भाषाएँ हैं और प्रत्येक की अपनी विशिष्ट लिपि है (गुहा 2010)। भारतीय एक रुपये की मुद्रा सत्रह भाषाओं और सत्रह लिपियों को दर्शाती है। इसके अलावा, देश में 63 गैर-भारतीय भाषाएँ बोली जाती हैं और कुल मिलाकर 1652 से अधिक भाषाएँ और बोलियाँ हैं। स्वतंत्र भारत को आकार देने वाले महान भारतीय विचारकों में जवाहरलाल नेहरू, रवींद्रनाथ टैगोर और महात्मा गांधी शामिल हैं। नेहरू की तरह, टैगोर ने भी लगातार "अनेकता में एकता" पर जोर दिया। संस्कृतियों की विविधता का जश्न मनाकर ही सच्ची एकता हासिल की जा सकती है। वह भारतीय बहुलवाद के महानतम समर्थकों में से एक थे। वह "उदार बहुलवाद" में विश्वास करते थे जिसने व्यक्तियों की स्वायत्तता को प्रोत्साहित किया और यह भी स्वीकार किया कि यह स्वायत्तता केवल कई सांस्कृतिक परंपराओं के संदर्भ में ही संभव थी। टैगोर की स्वायत्तता की अवधारणा "स्वयं और अपनी परंपराओं के बारे में गंभीर रूप से सोचने की क्षमता, साहसपूर्वक उन्हें दूसरों के उदाहरण और उनके जीवन के तरीकों की परीक्षा में डालने की क्षमता" पर आधारित थी (नुसबौम, 2007)।

महात्मा गांधी ने धर्मों की बहुलता का सटीक वर्णन किया जब उनसे पूछा गया कि क्या वह हिंदू हैं और उन्होंने जवाब दिया, "हां मैं हूं। मैं एक ईसाई, एक मुस्लिम, एक बौद्ध और एक यहूदी भी हूं।" (नुस्बाउम 2007) सांस्कृतिक बहुलवाद के प्रतीक के रूप में भारत की गणतंत्र दिवस परेड।क्या आपने 26 जनवरी को दिल्ली में गणतंत्र दिवस समारोह देखा है? यह हमारे देश के सांस्कृतिक बहुलवाद का अद्भुत प्रदर्शन है। 26 जनवरी 1950 वह दिन था जब

भारतीय गणतंत्र और इसका संविधान लागू हुआ और इसलिए इस दिन को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है। राजधानी नई दिल्ली में एक भव्य परेड आयोजित की जाती है, "राष्ट्रपति भवन (राष्ट्रपति भवन) के पास रायसीना हिल से, राजपथ के साथ, इंडिया गेट के पार और ऐतिहासिक लाल किले तक।"

भारत के प्रधान मंत्री ने देश के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने वाले सभी सैनिकों को याद करते हुए इंडिया गेट पर अमर जवान ज्योति पर पुष्पांजलि अर्पित की। एक शानदार सैन्य परेड होती है. इसके बाद एक रंगारंग सांस्कृतिक परेड होती है।भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को विभिन्न राज्यों की झांकी के रूप में दर्शाया गया है।प्रत्येक राज्य अपने अनूठे त्योहारों, ऐतिहासिक स्थानों, कला आदि को दर्शाता है; देश भर से स्कूली बच्चे भी लोक नृत्य, ड्रिल और देशभक्ति गीतों की धुनों पर गायन प्रस्तुत करते हुए परेड में भाग लेते हैं।सभी राज्यों की राजधानियों, जिला मुख्यालयों, उपमंडलों, तालुकों और पंचायतों में भी समारोह आयोजित किए जाते हैं।"(india.gov.in/myindia/republicday.php)

3.7 सांस्कृतिक बहुलवाद और भारतीय संविधान

सांस्कृतिक बहुलवाद भारतीय संविधान के "धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक ढांचे" में परिलक्षित होता है। भारतीय संविधान को एक बहुसांस्कृतिक दस्तावेज़ कहा जा सकता है। (इंटरनेशनल जर्नल ऑन मल्टीकल्चरल सोसाइटीज़ (IJMS), खंड 5, संख्या 2, 2003: 148 -161 भट्टाचार्य 2001) इसकी राजनीतिक और संस्थागत नीति के माध्यम से, संविधान भारत की विविधता को पहचानता है और समायोजित करता है।

संविधान का अनुच्छेद 350 ए प्रत्येक राज्य को भाषाई अल्पसंख्यक समूहों के बच्चों की शिक्षा के प्राथमिक चरण में मातृभाषा में शिक्षा के लिए पर्याप्त सुविधाएं प्रदान करने का निर्देश देता है, और राष्ट्रपति को किसी भी राज्य को उचित निर्देश जारी करने का अधिकार देता है (बसु 1997, 380)| अनुच्छेद 29 (2) राज्य द्वारा संचालित या सहायता प्राप्त शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश के मामले में धर्म, नस्ल, जाति या भाषा के आधार पर किसी भी नागरिक के ख़िलाफ़ किसी भी भेदभाव को रोकता है। अनुच्छेद 29 (1) और 30 (1) में कहा गया है कि अल्पसंख्यक अपनी पसंद के शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना और प्रबन्धन कर सकते हैं, और राज्य उन्हें उनकी पसंद के विरुद्ध संस्थानों में भाग लेने के लिए विवश नहीं कर सकता है।

भारत की भाषाई विविधता भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में स्पष्ट है जो आधिकारिक तौर पर 22 भाषाओं को मान्यता देती है। हिंदी आधिकारिक भाषा है और अंग्रेजी सहयोगी आधिकारिक भाषा है।

भारत में, 'बहुसंस्कृतिवाद' राज्य द्वारा अपनी संप्रभुता के अंतर्गत आने वाले विभिन्न सांस्कृतिक समुदायों के प्रति अपनाया गया एक विशेष प्रकार का संबंध है (भार्गव 2004)।भारतीय मॉडल में, कई धर्म इसकी नींव का हिस्सा हैं, न कि बाद का विचार।भले ही राज्य की पहचान किसी विशेष धर्म से न हो, फिर भी धार्मिक समुदायों को आधिकारिक और सार्वजनिक मान्यता प्रदान की जाती है। यह स्वतंत्रता, समानता का सम्मान करता है, शांति और सहिष्णुता को प्रोत्साहित करता है। यह सभी धर्मों के सदस्यों के लिए समान गरिमा और स्थिति सुनिश्चित करने का भी प्रयास करता है। सभी को उनकी जाति की परवाह किए बिना हिंदू मंदिरों में प्रवेश के लिए प्रोत्साहित करने का एक मजबूत प्रयास है। राज्य सार्वजनिक

समर्थन देकर धार्मिक समुदायों के प्रति सम्मान भी दर्शाता है। भारत की संवैधानिक धर्मनिरपेक्षता अहिंसा, बुनियादी मानवाधिकारों की सुरक्षा, जिसमें मताधिकार से वंचित न होने का अधिकार भी शामिल है, पर आधारित लोकतांत्रिक प्रक्रिया के भीतर सार्वजनिक और निजी के बीच लचीलेपन की अनुमति देकर व्यक्तिगत या सामुदायिक मूल्यों पर निर्णय लेने की अनुमति देती है (भार्गव, 2004)।

सरकार अल्पसंख्यक धर्मों की सार्वजनिक छुट्टियां मनाने और मान्यता देने नीतियों के माध्यम से कई तरीकों से सांस्कृतिक बहुलवाद को बढ़ावा देती है; सभी संस्कृतियों के त्योहारों, छुट्टियों के उत्सव को प्रोत्साहित करता है; सभी संस्कृतियों के संगीत और कलाओं को प्रोत्साहित करता है और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में संस्कृतियों के प्रतिनिधित्व को प्रोत्साहित करता है। सरकार हज यात्रा जैसे महत्वपूर्ण धार्मिक रीति-रिवाजों के लिए भी धन मुहैया कराती है या सब्सिडी देती है।

3.8 सांस्कृतिक बहुलवाद में अंतर्निहित मूल्य

करुणा, समानता, सहिष्णुता, स्वीकृति, प्रशंसा, समायोजन भारत के सांस्कृतिक रूप से बहुलवादी समाज की सुरक्षा के लिए आवश्यक कुछ अंतर्निहित मूल्य हैं। भारतीय बहुत सौंदर्यवादी हैं और अन्य राज्यों के नृत्य, संगीत, गीत, भोजन, कपड़े और शिल्प के बारे में जानने के लिए उत्सुक हैं। औपचारिक या अनौपचारिक सभाएँ आमतौर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम के बिना अधूरी होती हैं। शहरी या ग्रामीण क्षेत्रों में शादियाँ इन सभी सांस्कृतिक पहलुओं का उत्सव हैं।छात्र "भारत के नृत्य" या "एक-दूसरे की संस्कृति को जानने" कार्यक्रम पर एक उत्सव आयोजित कर सकते हैं या "भारत का भोजन" प्रदर्शनी की व्यवस्था कर सकते हैं। वे भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा, रोल प्ले, बहस, कठपुतली शो कर सकते हैं। छात्रों को मतभेदों और समानताओं पर चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, उनकी संस्कृति की किन विशेषताओं को संरक्षित किया जाना चाहिए और क्यों। ऐसी गतिविधियों के माध्यम से छात्र सांस्कृतिक बहुलवाद में अंतर्निहित मूल्यों को आत्मसात करेंगे। इन गतिविधियों में यह सलाह दी जाती है कि शिक्षक एक सूत्रधार बने रहें और छात्रों को अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए मार्गदर्शन करें।

3.9 सांस्कृतिक रूप से बहुलवादी समाज में रहने की चुनौतियाँ

“The Clash Within: Democracy, Religious Violence, and India's Future”, (2007)में नुसबौम के अनुसार, संस्कृतियों के बीच संघर्ष वास्तव में "उन लोगों के बीच संघर्ष जो अलग-अलग लोगों के साथ रहने के लिए तैयार हैं और जो एकरूपता की सुरक्षा चाहते हैं।"संस्कृति समूह भिन्न हो सकते हैं लेकिन उन्हें समाज में उचित मान्यता दी जानी चाहिए। गुहा इस बात पर जोर देते हैं कि "भारत को एकजुट रखने वाली ताकतें कई हैं", और व्यक्तियों, संस्थानों ने "वर्ग और संस्कृति के विभाजन को पार करने में मदद की है और उन भविष्यवाणियों को खारिज कर दिया है कि भारत एकजुट नहीं रहेगा और लोकतांत्रिक नहीं रहेगा" (गुहा, 2007)

भारत के सामने दूसरी चुनौती वैश्वीकरण की है। वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप विभिन्न संस्कृतियों के साथ बहुत अधिक मेलजोल है। क्या भारत वैश्वीकरण के इस हमले के विरुद्ध

अपनी सांस्कृतिक बहुलता को बरकरार रख पाएगा? भारतीय व्यंजन, संगीत, नृत्य, कपड़े और शिल्प की समृद्धि को दुनिया भर में सराहा जाता है। यह भारतीय रीति-रिवाजों और परंपराओं के अधिक सूक्ष्म पहलू हैं जिन्हें चुनौती दी जा रही है। परंपराओं पर सवाल उठाए जा रहे हैं जो अच्छा है, क्योंकि यह छात्रों को रीति-रिवाजों और परंपराओं के गहरे अर्थों को खोजने और समझने के लिए प्रोत्साहित करता है जैसे कि हमें अपने बड़ों का सम्मान क्यों करना चाहिए? क्या वृद्ध लोगों का सम्मान सिर्फ इसलिए किया जाना चाहिए क्योंकि वे बूढ़े हैं? बेशक, यह हमेशा सलाह दी जाती है कि छात्र को ऐसे प्रश्न पूछने की अनुमति दी जाए और फिर छात्र को उसके मूल्यों के आधार पर अपने निर्णय पर पहुंचने के लिए मार्गदर्शन किया जाए। इसलिए, पाठ योजनाओं में ऐसी खोजपूर्ण गतिविधियों के लिए समय का आयोजन किया जाना चाहिए।

फ़ैशन, पोशाक, भोजन, फ़िल्में, संगीत दुनिया भर में वैश्विक प्रभाव डाल रहे हैं। जिस प्रकार हॉलीवुड फिल्में हमारे जीवन पर प्रभाव डालती हैं; बॉलीवुड फ़िल्में भी विदेशों में मनोरंजन का जरिया हैं। फ़ास्ट फ़ूड पसंदीदा है और शहरों में विक्रेता भी बर्गर और आइसक्रीम कोन का आनंद लेते देखे जाते हैं! नतीजतन, हम अपनी सांस्कृतिक बहुलता को बरकरार रखते हैं और साथ ही उपभोग के कुछ वैश्विक पैटर्न का पालन करते हैं और इन्हें संतुलित करना चुनौती है क्योंकि वैश्वीकरण के प्रभाव के बावजूद हम अपनी सांस्कृतिक पहचान को बरक़रार रखते हैं।

एक बार फिर प्रेम का नियम सभी मतभेदों को दूर कर देता है। केवल अगर हम मतभेदों की सराहना करने के इच्छुक हैं, एक-दूसरे की संस्कृति की समृद्धि को स्वीकार करते हैं तो ही हम प्रगति कर सकते हैं। सांस्कृतिक रूप से बहुलवादी समाज में, हमें सावधान रहना होगा, यह निर्णय नहीं करना चाहिए कि अन्य संस्कृतियाँ सही हैं या गलत, न ही हमें अन्य संस्कृतियों के रीति-रिवाजों के बारे में निर्णय लेना चाहिए या एक संस्कृति को दूसरे के विरुद्ध बढ़ावा देने का प्रयास करना चाहिए। सभी संस्कृतियों को कानूनों, रीति-रिवाजों के बड़े ढांचे के भीतर और भारतीय संविधान के अनुसार समान सम्मान दिए जाने की आवश्यकता है।

3.10 बच्चों के लिए गतिविधियाँ

1. दूरदर्शन पर गणतंत्र दिवस समारोह देखें और उन 5 विशेषताओं की पहचान करें जो आपको सबसे ज्यादा पसंद आई। वेशभूषा, गीत और झाँकियों पर विशेष ध्यान दें। (30-50 शब्द)
2. एक कार्यक्रम की योजना बनाएं जिसके द्वारा आप छात्रों को उनकी सांस्कृतिक विरासत की सराहना करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। छात्र किस सांस्कृतिक विशेषता/विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित करेंगे? वे कौन सी सामग्रियां हैं जिनकी आपको आवश्यकता होगी? इसका कितना मूल्य होगा? (एक छोटा बजट बनाएं और उसे बनाए रखें)। आप छात्रों को तैयारी के लिए कितना समय देंगे? वे इसे कब प्रस्तुत करेंगे? उनका मूल्यांकन कैसे किया जाएगा? आप माता-पिता को भी कैसे शामिल कर सकते हैं? (शायद माता-पिता प्रॉप्स बनाने में मदद कर सकते हैं; बच्चों को गाने/नृत्य सिखाएं)।
3. निम्नलिखित गतिविधि संचालित करें. छात्रों को एक भारतीय रीति-रिवाज/परंपरा की पहचान करनी है जिसे वे (ए) महत्वपूर्ण और (बी) महत्वहीन मानते हैं। उन्हें अपनी पसंद बतानी होगी. उन्हें कम से कम 8-10 व्यक्तियों का साक्षात्कार भी लेना है और यह पता लगाना है कि वे किस रीति-रिवाज/परंपरा को महत्वपूर्ण और महत्वहीन मानते हैं और

उनकी पसंद के कारणों का पता लगाएं। वे अपने सर्वेक्षण के परिणामों को सूचीबद्ध करते हैं और यह पता लगाने के लिए इसका विश्लेषण करते हैं कि कौन सी प्रथा/परंपरा सबसे अधिक (ए) महत्वपूर्ण और (बी) महत्वहीन है। उन्हें कम से कम पांच सबसे महत्वपूर्ण रीति-रिवाजों/परंपराओं को संरक्षित करने के दो तरीके सुझाने हैं। उपरोक्त के अलावा संस्कृतियों की विविधता को समझाने और छात्रों को एक-दूसरे की संस्कृति का सम्मान करना सिखाने के लिए छात्रों के साथ निम्नलिखित गतिविधियाँ की जा सकती हैं।

- छात्रों से उनकी व्यक्तिगत सांस्कृतिक रचनाओं के दृश्य चित्रण बनाने और साझा करने के लिए कहें।
- छोटे समूहों में, एक सदस्य को उसकी जीवन कहानी बताने के लिए चुना जाता है। वक्ता के बात ख़त्म करने के बाद, श्रोताओं से वक्ता के जीवन में सांस्कृतिक प्रभावों का दृश्य चित्रण करने को कहें।
- विभिन्न प्रकार की पत्रिकाओं और समाचार पत्रों को इकट्ठा करें जो कई संस्कृतियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। छात्रों को समूहों में विभाजित करें, प्रत्येक समूह को एक ही प्रकाशन के कई अंक प्राप्त हों। छात्रों को पत्रिकाओं का अध्ययन करने और यह निर्धारित करने के लिए निर्देशित करें कि किन मान्यताओं और मूल्यों से अवगत कराया गया है। पूरी कक्षा में होने वाली चर्चा में, छात्रों से उन मूल्यों की पहचान करने के लिए कहें जो अलग-अलग जर्नल में भिन्न-भिन्न होते हैं। इस तरह की चर्चा से छात्रों को संस्कृतियों के बीच अंतर और समानता पर विचार करने में सुविधा होती है।
- एक घेरे में डेस्क व्यवस्थित करें और छात्रों से अपना परिचय देने और अपने जीवन की किसी भी स्थिति को उजागर करने के लिए कहें जब वे संख्यात्मक रूप से अल्पसंख्यक थे, जैसे कि वे दरियाई घोड़ों के बीच जिराफ़ हों। प्रशिक्षक को पहले इस तरह अपना परिचय देकर एक उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। इस गतिविधि, जिसके लिए पर्याप्त समय प्रदान किया जाना चाहिए, में कई लाभ शामिल हैं:
    - o उन स्थितियों को स्पष्ट करने में जिनमें उन्होंने अलग महसूस किया है, छात्र इस बारे में सोचेंगे कि उनकी अपनी पृष्ठभूमि को क्या विशिष्ट बनाता है और उनकी पृष्ठभूमि में सहपाठियों की पृष्ठभूमि के समान क्या है।
    - o भले ही कक्षा एक-सांस्कृतिक प्रतीत हो, लेकिन छात्र कक्षा को समग्र रूप से विविधता की विशेषता के रूप में देखेंगे।
- अल्पसंख्यक होने के अपने और सहपाठियों के अनुभवों पर विचार करते हुए, छात्रों में उन लोगों के प्रति सहानुभूति होनी शुरू हो जाएगी जो समाज के भीतर अल्पसंख्यक समूहों के सदस्य हैं।

(www. ncrel.org से लिया गया, दिनांक 2.5.11; info@ncrel.org

कॉपीराइट © उत्तर मध्य क्षेत्रीय शैक्षिक प्रयोगशाला। सर्वाधिकार सुरक्षित)।

बोध प्रश्न 2

i) भारत में बहुसांस्कृतिक समाज में रहने की चुनौतियाँ क्या हैं?

.....

.....

.....

ii) सांस्कृतिक बहुलवाद की रक्षा के लिए आवश्यक मूल्य क्या हैं?

.....

.....

.....

3.11 सारांश

अतः भारतीय संस्कृति समृद्ध और विविध है तथा अपने आप में अद्वितीय भी है। हमने भले ही जीवन जीने के आधुनिक साधनों को स्वीकार कर लिया है, अपनी जीवन शैली में सुधार कर लिया है, हमारे मूल्य एवं मान्यताएंअभी भी परिवर्तित नहीं हुई हैं। हमारी जीवन शैली का अनिवार्य चरित्र एकजुटता है। एकजुटता की यह भावना ही उन विविध तत्वों का स्वागत और मिश्रण करती है जो उस ढांचे के बाहर आसमान लगते हैं।भारतीय लोकाचार का यह पौराणिक-आध्यात्मिक चरित्र पश्चिमी पर्यवेक्षकों को भ्रमित करने में कभी विफल नहीं हुआ है। "भारत एक रहस्य है या अव्यवस्था?" यह वह प्रश्न था जो ई.एम. फ़ोस्टर को भारत के साथ उनके संबंधों के दौरान और उसके बाद भी उनका पीछा करता रहा। भारत, एक आध्यात्मिक-सांस्कृतिक विविधता में एकता है जो भिन्न और विपरीत की मेज़बानी कर सकती है। मूल रूप से गांधीजी ही वह भारतीय जो भारतीय आध्यात्मिकता को पश्चिमी तर्कसंगतता के साथ मिश्रित कर सकते थे, स्वामी विवेकानन्द ने, जो भारत की भावना के प्रतीक थे, पूर्व और पश्चिम के समन्वय की वकालत की: वही भावना, वेदांत की आत्मा को इस्लामी निकाय के साथ संश्लेषित करने वाली समन्वित भारतीय पहचान, विवेकानन्द की अवधारणा में भी चलती है।रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू सभी सांस्कृतिक बहुलवाद के समर्थक थे। ऐसे सांस्कृतिक बहुलवादी समाज में प्रचलित महत्वपूर्ण मूल्य स्वीकृति, करुणा, समानता, सहिष्णुता, प्रशंसा और समायोजन हैं। वैश्वीकरण से संस्कृति का समरूपीकरण हो रहा है, जो अपरिहार्य है लेकिन साथ ही हमें अपनी संस्कृति और उससे अभिन्न विविधता को भी बरक़रार रखना होगा।

3.12 बोध प्रश्न के उत्तर

बोध प्रश्न 1

i) कक्षा में शिक्षक विभिन्न गतिविधियों जैसे संगीत कार्यक्रम, नाटक, वाद-विवाद, चर्चा, पोस्टर तैयारी और प्रस्तुतियों के माध्यम से प्रत्येक पहलू का जश्न मना सकते हैं।

ii) भारतीय संदर्भ में सांस्कृतिक बहुलवाद भारत की सामान्य राष्ट्रीय संस्कृति है, जिसमें विभिन्न समुदायों को अपनी सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं को बनाए रखने और विकसित करने की स्वतंत्रता है, जब तक कि वे राष्ट्र की एकता और सामान्य कल्याण के लिए हानिकारक न हों।

iii) दुनिया में शायद ही कोई संस्कृति हो जो भारत जितनी विविध और अनोखी हो। भारत कुछ सबसे प्राचीन सभ्यताओं का घर है, जिनमें विश्व के चार प्रमुख धर्म, हिंदू धर्म, बौद्ध

धर्म, जैन धर्म और सिख धर्म शामिल हैं। भारतीय संस्कृति विभिन्न शैलियों और प्रभावों का मिश्रित मिश्रण है। भारत में त्योहारों की विशेषता रंग, उल्लास, उत्साह, प्रार्थनाएँ और अनुष्ठान और संगीत का क्षेत्र है; लोक, लोकप्रिय, पॉप और शास्त्रीय संगीत की कई किस्में हैं।

बोध प्रश्न 2

i) ए) संस्कृतियों के बीच संघर्ष बी) और वैश्वीकरण।

ii) करुणा, समानता, सहिष्णुता, स्वीकृति, प्रशंसा और समायोजन भारत के बहुलवादी समाज की सुरक्षा के लिए आवश्यक कुछ अंतर्निहित मूल्य हैं।

3.13 सन्दर्भ

बैगर, एम. (2007) जर्नल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स: मार्था सी. नुसबौम की पुस्तक "द क्लैश विदिन: डेमोक्रेसी, रिलिजियस वायलेंस एंड इंडियाज फ्यूचर" की समीक्षा

बाशम, ए.एल. (2004) द वंडर दैट वाज़ इंडिया पिकाडोर, भारत।

बसु, डी. डी. (1997) भारत के संविधान का परिचय। नई दिल्ली: प्रेंटिस-हॉल ऑफ इंडिया।

भार्गव, आर., बागची, ए. और सुदर्शन, आर.एड. (1999) बहुसंस्कृतिवाद, उदारवाद और लोकतंत्र। दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

भट्टाचार्य, एच. (2001) "संघवाद, विकेंद्रीकरण और भारत में राज्य-निर्माण: केंद्र-राज्य संबंधों के पहलू"। इन: आर. बर्ड और टी. स्टॉफ़र, सं., खंडित समाजों में अंतर सरकारी राजकोषीय संबंध, बेसल: हेलबिंग और लिचटेनहैन।

बोनमेइसन, जे. (2000) ला ज्योग्राफी कल्चरल, पेरिस, एडिशन डू सीटीएचएस

दास एन.के. (2003)। संस्कृति धर्म और दर्शन, रावत प्रकाशन

गुहा, आर. (2010) आधुनिक भारत के निर्माता पेंगुइन, भारत

हेंडरसन, सी.ई. (2002) भारत की संस्कृति और रीति-रिवाज ग्रीनवुड प्रेस, लंदन

पिकाडोर

नेहरू, जे. (1990) डिस्कवरी ऑफ इंडिया, जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल फंड, भारत

सेन, ए. (2006) पहचान और हिंसा: नियति का भ्रम: पेंगुइन;न्यूयॉर्क

तम्मिता-डेलगोडा, एस. (2003) ए ट्रैवेलर्स हिस्ट्री ऑफ इंडिया, इंटरलिंक बुक्स, न्यूयॉर्क

ऑनलाइन स्रोत:

india.gov.in/myindia/republicday.php

http://www.opendemocracy.net/arts-multiculturalism/article_2204.jsp
http://www.opendemocracy.net/arts-multiculturalism/article_2204.jsp

इकाई 4 सतत विकास हेतु मूल्य

सतत विकास के लिए शिक्षा मूलतः मूल्यों पर आधारित है, जिसका केंद्र सम्मान है...शिक्षा और स्थायी भविष्य की खोज, यूनेस्को

इकाई की रूपरेखा

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 सतत विकास

4.4 सतत विकास के लिए शिक्षा

4.5 सतत विकास के लिए मूल्य

4.6 बच्चों में मूल्यों का विकास करना

4.7 केस स्टडीज़

4.8 सारांश

4.9 बोध प्रश्न के उत्तर

4.10 सन्दर्भ

4.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में आपने भारतीय समाज में सांस्कृतिक बहुलवाद और इसे संजोने की आवश्यकता के बारे में पढ़ा है। इस प्रकार चर्चा एक राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य पर आधारित थी। इस इकाई में हम इस संवाद को आगे बढ़ाएंगे एवं सततविकास (एसडी) हेतु आवश्यक मूल्यों पर अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य के साथ चर्चा करेंगे। सतत विकास क्या है? पर्यावरण एवं विकास पर विश्व आयोग की रिपोर्ट (1987) के अनुसार, एसडी वह विकास है, जो भविष्य की पीढ़ियों की अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करता है। हम एसडी कैसे हासिल कर सकते हैं? डेलर्स कमीशन (1996) द्वारा आवश्यक यूटोपिया (काल्पनिक आदर्श) के रूप में पहचानी गई शिक्षा को एजेंडा 21 द्वारा भी मान्यता दी गई थी (एजेंडा 21 को 1992 में रियो डी जेनेरियो में पर्यावरण एवं विकास पर संयुक्त राष्ट्र (यूएन) सम्मेलन में अपनाया गया था। यह ब्लूप्रिंट (मूल योजना) है एसडी को चालू करने के लिए) एसडी सुनिश्चित करने के सबसे प्रभावी साधनों में से एक है। इसलिए संयुक्त राष्ट्र ने 2005-2014 को सतत विकास के लिए शिक्षा दशक (ईएसडी) के रूप में घोषित किया है। यूनेस्को द्वारा यह भी कहा गया है कि ईएसडी मूल रूप से मूल्यों के बारे में है। मूल्यों को अलग-थलग करके नहीं सीखा जा सकता है, लेकिन जब उन्हें सामान्य शिक्षा के साथ एकीकृत किया जाता है तो वे सर्वोत्तम रूप से आत्मसात होते हैं। इस इकाई में हम सतत विकास के लिए आवश्यक मूल्यों को विकसित करने में शिक्षा की भूमिका पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

एसडी की अवधारणा को समझना इसके लिए आवश्यक मूल्यों को विकसित करने की पूर्व शर्त है। अतः, इस इकाई में हम सबसे पहले एसडी पर संक्षेप में चर्चा करेंगे। इसके बाद हम सतत विकास में शिक्षा की भूमिका एवं इसके लिए आवश्यक शिक्षा की प्रकृति का वर्णन करेंगे। फिर हम सतत विकास के लिए आवश्यक मूल्यों की पहचान करेंगे। अंत में हम बच्चों में इन मूल्यों को विकसितकरने में शिक्षकों की भूमिका पर चर्चा करेंगे।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद, आपसे अपेक्षा की जाती है:

- सतत विकास की अवधारणा को स्पष्ट कर सकेंगे;
- सतत विकास प्राप्त करने में शिक्षा की भूमिका का वर्णन कर सकेंगे;
- सतत विकास के लिए आवश्यक मूल्यों की पहचान करें;
- उन प्रक्रियाओं की व्याख्या करें जिनसे सतत विकास के लिए मूल्यों का समावेश हो सकता है

4.3 सतत विकास

लाखों लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए कृषि गतिविधियों को तेज़ किया जा रहा है, तीव्र गति से औद्योगीकरण किया जा रहा है एवं गैर नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग बढ़ाया जा रहा है। आप जानते हैं कि इन गतिविधियों ने प्राकृतिक एवं सामाजिक पर्यावरण दोनों पर भारी असर डाला है। पर्यावरणीय क्षरण और निरंतर सामाजिक-आर्थिक हाशियाकरण के रूप में इसकी भारी कीमत चुकाई जा रही है। माथुर और पाल (1981) के कथनानुसार, मनुष्य स्वभाव से ही अपव्ययी है और अब उसका अपव्यय उसे दफ़न करने लगा है। उसने झीलों, नदियों और खाड़ियों के सेप्टिक टैंक बनाये हैं। अपनी अतृप्त आवश्यकताओं के कारण हमने विशाल वन भूमि और हज़ारों प्रजातियों को खो दिया है। बड़ी मात्रा में प्राकृतिक संसाधनों को लूट लिया गया है, कृषि भूमि और समग्र पर्यावरण को नष्ट कर दिया गया है तथा हम तेज़ी से ऐसी स्थिति की ओर बढ़ रहे हैं जहां इस ग्रह पर गुणवत्तापूर्ण जीवन का अस्तित्व ही खतरे में है। जैव विविधता के अलावा, सांस्कृतिक विविधता, जिसे मानव जाति की एक अनूठी संपत्ति माना जाता है, सामाजिक ध्रुवीकरण, बढ़ती असहिष्णुता और संघर्ष के कारण भी खतरे में है। आगे चिंता का विषय यह है कि एकत्रित लाभ शक्तिशाली तथा विशेषाधिकार प्राप्त लोग उठा रहे हैं जबकि बड़ी संख्या में लोग हाशिये पर जा रहे हैं। हालाँकि, इस निराशाजनक परिदृश्य में सुखद पहलू यह है कि देर से ही सही, यह एहसास हुआ कि प्रकृति की क़ीमत पर विकास एवं जो कुछ समय के लिए कुछ लोगों की जरूरतों को पूरा करता है, उसे लंबे समय तक क़ायम नहीं रखा जा सकता है। आज इस धारणा को लेकर आम सहमति है कि हम पहले से ही एक उपस्थित आपदा के कगार पर हैं और जब तक हम तेज़ी से कार्य नहीं करेंगे, आने वाली पीढ़ियों को रहने योग्य पृथ्वी विरासत में नहीं मिलेगी। इसलिए पर्यावरणीय स्थिरता सुनिश्चित करना सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों (एमडीजी) में से एक है (एमडीजी आठ अंतरराष्ट्रीय विकास लक्ष्य हैं जिन्हें संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों ने वर्ष 2015 तक हासिल करने पर सहमति व्यक्त की है)।

रियो में 1992 में पृथ्वी शिखर सम्मेलन के बाद से, 'सतत विकास' शब्द प्रचलन में रहा है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा स्थापित ब्रंटलैंड आयोग (1987) के बाद से इस अवधारणा को लोकप्रियता मिली, जिसने सतत विकास को ऐसे विकास के रूप में परिभाषित किया जो भविष्य की पीढ़ियों की अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करता है (विश्व आयोग की रिपोर्ट) पर्यावरण और विकास, 1987)। यह विकास का एक दृष्टिकोण है जिसमें जनसंख्या, पशु एवं पौधों की प्रजातियां, पारिस्थितिकी तंत्र, प्राकृतिक संसाधन शामिल हैं और जो गरीबी, लैंगिक समानता, मानवाधिकार, सभी के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, मानव सुरक्षा, अंतरसांस्कृतिक संवाद आदि जैसी चिंताओं को एकीकृत करता है। (यूनेस्को, http://www.unesco.org/en/esd/). इसलिए, सतत विकास और मानवीय आवश्यकताओं के बारे में धारणा को केवल पर्यावरण से संबंधित मामलों तक सीमित नहीं किया जा सकता है। बल्कि, सतत विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाया गया है जिसमें इसके दायरे में तीन परस्पर संबंधित घटकों-पर्यावरण, सतत आर्थिक विकास और सतत सामाजिक राजनीतिक विकास को शामिल किया गया है। विश्व शिखर सम्मेलन परिणाम दस्तावेज़ (2005) ने इन शब्दों को सतत विकास के अन्योन्याश्रित और पारस्परिक रूप से मजबूत करने वाले स्तंभों के रूप में संदर्भित किया है। इसलिए, पर्यावरण की सुरक्षा और गुणवत्ता में सुधार उतना ही महत्वपूर्ण है जितना लोगों को सशक्त बनाना, हाशिये पर पड़े लोगों को समाप्त करना एवं सामाजिक-राजनीतिक गतिविधियों में लोगों की व्यापक भागीदारी को सक्षम करना और यह स्वीकार किया गया है कि इसे शिक्षा के माध्यम से हासिल किया जा सकता है, जो सतत विकास की कुंजी है। (बोस, 2008)।

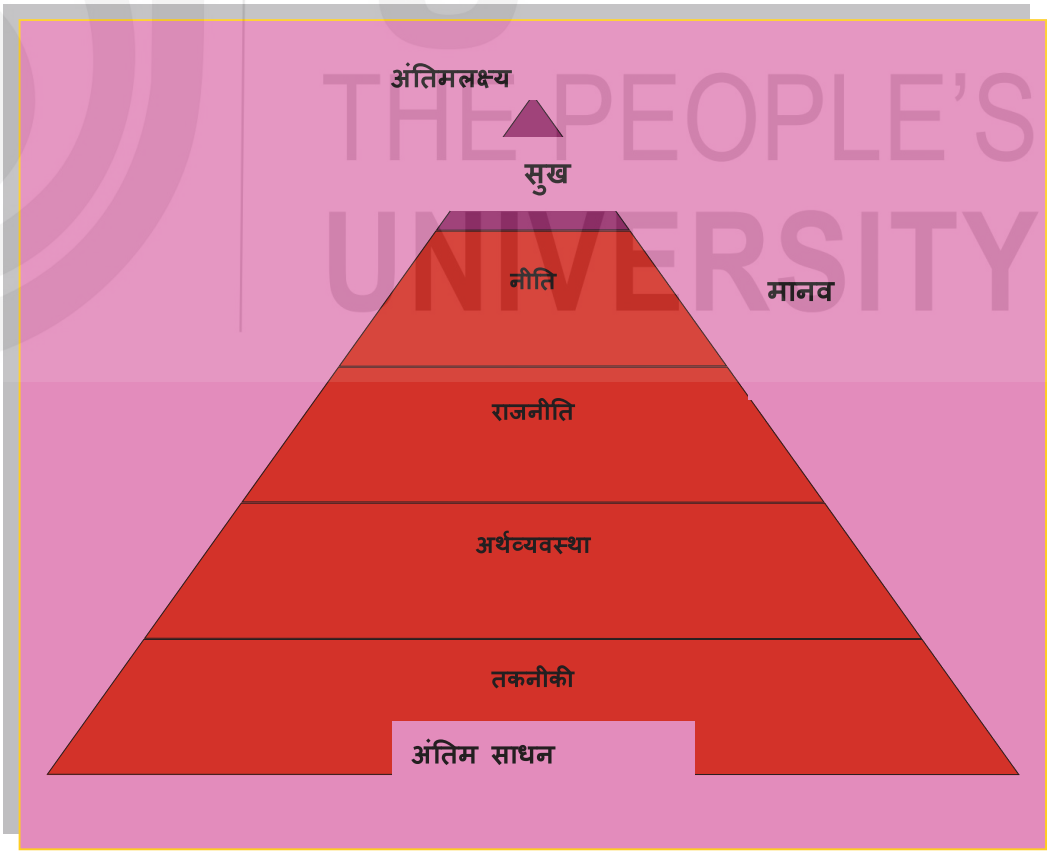

चित्र.1: प्राकृतिक संपदा को अंतिम साधन के रूप में और मानवीय खुशी को अंतिम लक्ष्य के रूप में जोड़ने वाला एक मॉडल। (स्रोत: बोसेल, एच. (1998)। पृथ्वी एक चौराहे पर, यूके: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस। पृष्ठ 97)।

सतत विकास का एक नैतिक ढांचा मानक मार्गदर्शन प्रदान करता है तथा यह केवल एक अंतिम लक्ष्य की पूर्ति कर सकता है वो है: मानव प्रसन्नता। पहले मानव सुख का संबंध मुख्यतः प्राकृतिक संपदा से माना जाता था। इसे नीचे दिए गए मॉडल द्वारा दर्शाया गया है जो मानव संस्थानों के पदानुक्रम में प्राकृतिक संपदा (अंतिम साधन के रूप में) को मानव प्रसन्नता और कल्याण (अंतिम लक्ष्य के रूप में) से जोड़ता है: प्रौद्योगिकी, अर्थव्यवस्था, राजनीति और नैतिकता। यह महसूस किया गया है कि यह मानवकेंद्रित मॉडल एक भ्रामक और वास्तव में खतरनाक ढांचा है जैसा कि इसके पर्यावरणीय परिणामों (बोसेल 1998) से स्पष्ट है।

स्थिरता की अवधारणा प्राकृतिक विकास और मानव सांस्कृतिक विकास की प्रक्रियाओं और उत्पादों के आंतरिक मूल्य पर टिकी हुई है। यदि हम इन्हें महत्व देते हैं, तो हमें उनके भविष्य के अस्तित्व, विकास और विकास को सुनिश्चित करने यानी स्थिरता के लिए प्रयास करना चाहिए। मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण भी इसका समर्थन करता है क्योंकि स्थिरता मानव के हित में है। स्थिरता पर आधारित नैतिकता का तात्पर्य है:

1. प्राकृतिक पर्यावरण के संबंध में, इसका अर्थ है प्रजातियों और पारिस्थितिक तंत्रों को अपनी स्वयं की पहचान और वर्तमान और भविष्य में अस्तित्व का अधिकार रखने वाली प्रणालियों के रूप में स्वीकार करना। प्राकृतिक पर्यावरण को संसाधनों के (कथित रूप से अनंत) स्रोत के रूप में नहीं देखा जा सकता है, बल्कि इसे 'जीवन स्थान' के रूप में देखा जाना चाहिए, जिस पर हमारा अस्तित्व निर्भर करता है और जिसके भविष्य के लिए हम जिम्मेदार हैं।

2. मानव प्रणालियों के संबंध में, इसका अर्थ है क्षेत्र, धर्म, जाति, लिंग, राजनीतिक दृढ़ विश्वास, आय, धन और शिक्षा के आधार पर भेदभाव किए बिना सभी मनुष्यों के लिए समान व्यवहार के अधिकार का सम्मान करना।

3. भविष्य की प्रणालियों के संबंध में, इसका अर्थ है 'हमने अपने बच्चों के रूप में पृथ्वी उधार ली है' के नारे की भावना में भविष्य की पीढ़ियों, प्रजातियों और पारिस्थितिक तंत्रों के अस्तित्व और विकास के अधिकार का सम्मान करना। (स्रोत: बोसेल, 1998, पृ87-पी97)

4.4 सतत विकास के लिए शिक्षा

हम सतत विकास कैसे प्राप्त कर सकते हैं? आपने पढ़ा है कि एजेंडा 21 में शिक्षा को सतत विकास प्राप्त करने का एक प्रभावी साधन माना गया है और संयुक्त राष्ट्र ने 2005-2014 को सतत विकास के लिए शिक्षा दशक (ईएसडी) के रूप में घोषित किया है। यह भी कहा गया है कि बच्चों को न केवल पृथ्वी की देखभाल की जिम्मेदारी विरासत में मिलेगी, बल्कि कई विकासशील देशों में, वे लगभग आधी आबादी हैं (अध्याय 25, एजेंडा 21)। इसलिए, शिक्षा बच्चों की चिंताओं को दूर करने के साथ-साथ उन्हें सतत विकास के वास्तुकार बनने के लिए तैयार करने का साधन है (बोस, 2008)।

इतिहास में मानवता एक निर्णायक क्षण पर खड़ी है। हम राष्ट्रों के बीच और भीतर असमानताओं के कायम रहने, गरीबी, भुखमरी, खराब स्वास्थ्य और निरक्षरता की बदतर स्थिति और पारिस्थितिक तंत्र की निरंतर गिरावट का सामना कर रहे हैं, जिस पर हम अपनी

भलाई के लिए निर्भर हैं। हालाँकि, पर्यावरण और विकास संबंधी चिंताओं के एकीकरण और उन पर अधिक ध्यान देने से बुनियादी जरूरतों की पूर्ति होगी, सभी के लिए जीवन स्तर में सुधार होगा, बेहतर संरक्षित और प्रबंधित पारिस्थितिकी तंत्र और एक सुरक्षित, अधिक समृद्ध भविष्य होगा। कोई भी राष्ट्र इसे अपने दम पर हासिल नहीं कर सकता; लेकिन साथ मिलकर हम सतत विकास के लिए वैश्विक साझेदारी कर सकते हैं (प्रस्तावना, एजेंडा 21 से अंश)

युवाओं के लिए सतत विकास की शिक्षा भी आवश्यक है। 30 से 31 जुलाई 1981 (बंधु और औलख, 1981) तक नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी पर्यावरण उच्च शिक्षा की दो मुख्य सिफारिशें थीं:

- पर्यावरण अविभाज्य है। इसकी कोई भौगोलिक या वैचारिक सीमा नहीं है और इसके अलावा यह सभी जीवित जीवों - मनुष्य, जानवरों और पौधों - के लिए आम है।
- पर्यावरणीय समस्याओं और प्रदूषण का कोई विशुद्ध वैज्ञानिक-तकनीकी समाधान नहीं है। ऐसे सभी समाधानों के लिए मानवीय (या नैतिक) आयाम एक आवश्यक घटक है।

यह भी सिफ़ारिश की गई कि पर्यावरण शिक्षा से पारिस्थितिक नैतिकता का विकास होना चाहिए, यानी मनुष्य, समाज और प्रकृति के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव आना चाहिए।

अब प्रश्न यह है कि एसडी के मूल्य विकास के लिए किस प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता है? पहले ध्यान प्राकृतिक पर्यावरण और भौतिक पर्यावरण की रक्षा के लिए दी जाने वाली शिक्षा पर था। लेकिन अब एक व्यापक दृष्टिकोण है, जिसमें भौतिक और सामाजिक स्थिरता दोनों शामिल हैं और यह अपनी विविधता में जातीय और सांस्कृतिक स्पेक्ट्रम को शामिल करता है। इस प्रकार स्थिरता के भौतिक, भौतिक, पारिस्थितिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और नैतिक आयाम हैं और शिक्षा के माध्यम से ही हम इन्हें संरक्षित और जारी रख सकते हैं। यूनिसेफ 'प्राथमिक पर्यावरण देखभाल' की वकालत करता है, जो समुदाय के भीतर प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा और इष्टतम उपयोग सुनिश्चित करते हुए स्थानीय समुदायों के सशक्तिकरण के माध्यम से बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए एक समुदाय आधारित दृष्टिकोण है। आगे कहा गया है कि महिलाओं और बच्चों की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करने, उनके जीवन कौशल और अनुकूलनशीलता को बढ़ाने और उन्हें स्थायी आजीविका प्राप्त करने में सक्षम बनाने के लिए पर्यावरण शिक्षा को बढ़ावा दिया जाना चाहिए (यूनिसेफ, 1993)।

जैसा कि पहले कहा गया है, पहले के पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम सामाजिक परिवेश से बेखबर थे। यह इस दृष्टिकोण के साथ बदल गया कि मानव घटक को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। पर्यावरण की रक्षा के लिए विकासशील देश विकास का त्याग नहीं कर सकते। इसे देखते हुए, ब्रंटलैंड आयोग (1987) ने एक ऐसी रणनीति की घोषणा की जो एक साथ विकास, गरीबी उन्मूलन और पृथ्वी को गिरावट के खतरनाक रास्ते से बचाएगी (पर्यावरण और विकास पर विश्व आयोग 1987)। पहले पर्यावरण आंदोलन ने विकास, यानी गरीबी उन्मूलन का जिक्र किए बिना केवल प्रकृति और संसाधनों के संरक्षण पर ध्यान केंद्रित किया था। ब्रंटलैंड आयोग की रिपोर्ट के कारण 1992 में रियो डी जेनेरियो में पर्यावरण और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन हुआ, जिसे पृथ्वी शिखर सम्मेलन कहा गया। इस शिखर सम्मेलन में विकास के साथ-साथ पर्यावरण पर भी जोर दिया गया. इसलिए, विकास के लिए सबसे अच्छा दृष्टिकोण

ऐसी नागरिकता विकसित करने में निहित है जो पर्यावरण के प्रबंधन को समझती है और उसकी परवाह करती है, जिसे कोई भी लोकतांत्रिक समुदायों में अत्यधिक भागीदारीपूर्ण तरीके से संचालित कर सकता है। इसलिए, बच्चों की शिक्षा को पर्यावरण की हरित धारणा से परे जाकर प्राकृतिक और सामाजिक घटकों को शामिल करने की आवश्यकता है। पर्यावरण शिक्षा के प्रकार के लिए बच्चों को अपने पर्यावरण के सुधार और चल रही निगरानी में वयस्कों के बड़े समुदाय के साथ शामिल करने की आवश्यकता होती है (हार्ट, 1997)।

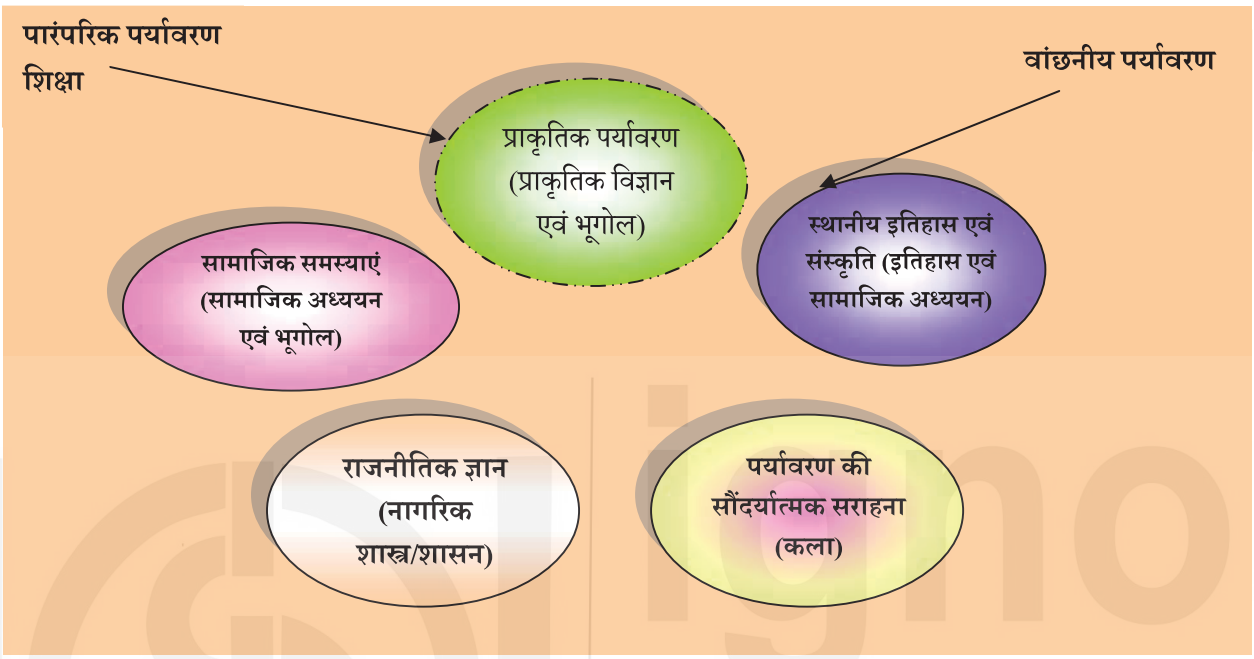

चित्र 2: पारंपरिक और वांछनीय पर्यावरण शिक्षा की तुलना

स्रोत: Hart, R.A. (1997). *Children's participation*, London: UNICEF, Earthscan Publications Ltd. P59.

चित्र 2 से यह स्पष्ट है कि एसडी के लिए शिक्षा का दायरा व्यापक है। यह भी स्पष्ट है कि ऐसी शिक्षा की प्रकृति अंतःविषय होती है। यह शिक्षार्थियों को सतत विकास के तीन स्तंभों - समाज, पर्यावरण और अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए तैयार करता है। यह शिक्षा की एक नई दृष्टि का प्रतिनिधित्व करता है, जो बच्चों को गरीबी, असमानता, हाशिए पर जाने, शोषण, व्यर्थ उपभोग, पर्यावरणीय गिरावट, जनसंख्या वृद्धि, अनियोजित और अराजक शहरीकरण, असहिष्णुता, संघर्ष और युद्ध आदि जैसी चुनौतियों को समझने एवं संबोधित करने के लिए तैयार करेगा। जो मानवता के साथ-साथ पृथ्वी के भविष्य को भी खतरे में डालता है।

गतिविधि

एजेंडा 21 का अध्ययन करें और उसके आलोक में एसडी के लिए शिक्षा की भूमिका को समझाते हुए एक नोट तैयार करें।

बोध प्रश्न 1

i) एसडी के लिए सामाजिक वातावरण के महत्व कोस्पष्ट करें।

.....

.....

ii) एसडी के लिए शिक्षा क्यों महत्वपूर्ण है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4.5 सतत विकास के लिए मूल्य

एक बच्चे के मामले पर विचार करें जो जानता है कि चिड़ियाघर में जानवरों को छेड़ा नहीं जाना चाहिए, लेकिन फिर भी वह उन पर पत्थर फेंक सकता है। अथवा, हममें से कुछ लोग कमरे से बाहर निकलते समय बिजली के उपकरणों को बंद करना भूल जाते हैं। ऐसे व्यवहार का कारण क्या है? क्या यह ज्ञान की कमी है? अपने आप में ज्ञान व्यवहार में परिवर्तन नहीं ला सकता है, बल्कि एक मानसिकता यानी दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, जो बदले में हमारे पास मौजूद मूल्यों से आकार लेती है। एसडी के लिए आवश्यक शर्त मानसिकता है जो इसका पक्ष लेती है। केवल एसडी के लिए ज़िम्मेदार कारकों का ज्ञान होना ही पर्याप्त नहीं है। संज्ञानात्मक आवश्यकताओं से अधिक, भावात्मक आवश्यकताएँ, अर्थात् दृष्टिकोण महत्वपूर्ण हैं। एसडी और एमडीजी के तीन स्तंभ मूल्यों पर टिके हैं। जैसा कि आपने इस इकाई की आरंभ में ही पढ़ा है, ईएसडी मूल रूप से शिक्षा के माध्यम से मूल्यों को विकसित करने का इरादा रखता है। मूल्य 'सम्मान' के इर्द-गिर्द घूमते हैं। हमें बच्चों में निम्नलिखित के प्रति सम्मान विकसित करने की आवश्यकता है:

वर्तमान एवं भविष्य की पीढ़ियों सहित अन्य सभी लिए सम्मान;

- मतभेदों और विविधता के लिए;
- पर्यावरण के लिए, और
- जिस ग्रह पर हम रहते हैं उसके संसाधनों के लिए

इसके अतिरिक्त, शिक्षा हमें स्वयं को एवं दूसरों को तथा व्यापक प्राकृतिक और सामाजिक परिवेश के साथ अपने संबंधों को समझने में सक्षम बनाती है। ईएसडी का उद्देश्य न्याय, जिम्मेदारी, अन्वेषण और संवाद की भावना विकसित करना और हमें उन व्यवहारों और प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रेरित करना है जो सभी को बुनियादी बातों से वंचित किए बिना पूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाते हैं (यूनेस्को, सतत विकास के लिए शिक्षा एवं मूल्य शिक्षा)।

आपने यह भी पढ़ा है कि विकास तभी न्यायसंगत तथा टिकाऊ हो सकता है जब लोग निर्णयकर्ता के रूप में सशक्त हों। हमें एक ऐसा समाज विकसित करने की आवश्यकता है जो हाशिये पर पड़े लोगों को ख़त्म कर दे एवं सामाजिक-राजनीतिक गतिविधियों में लोगों की व्यापक भागीदारी की अनुमति दे। क्या विचारों, संस्कृति और आकांक्षाओं में अंतर का विरोध करने वाला व्यक्ति ऐसे निर्णय लेगा जिससे समावेशी विकास हो? नहीं, केवल उदारचित और गंभीर रूप से सोचने की क्षमता वाले लोगों से ही समावेशी समाज में विश्वास की आशा की जा

सकती है। इसलिए, विभिन्न प्रकार के हाशिए के उन्मूलन के लिए सहिष्णुता, खुली मानसिकता, तर्कसंगतता और इसी तरह के मूल्य महत्वपूर्ण हैं।

शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे सतत विकास के लिए बच्चों में मूल्यों को विकसित करने में मदद करें, लेकिन दर्शनशास्त्र के कुछ स्कूलों के अनुसार मूल्य अनंत हैं, जबकि कुछ अन्य के अनुसार, ऐसा नहीं है। हालाँकि, केट्स, पैरिस और लीसेरोविट्ज़ (2005) ने जैसा कहा था कि शांति, स्वतंत्रता, विकास एवं पर्यावरण जैसे मुद्दे प्रमुख मुद्दे एवं आकांक्षाएँ बन गये हैं किंतु समय के साथ इसकी पुनर्व्याख्या की गई। इसलिए, प्रेम, करुणा, दूसरों के प्रति सम्मान, खुली मानसिकता, न्याय, शांति, तर्कसंगतता, संयम और इसी तरह के कुछ मूल्य समय की कसौटी पर खरे उतरे हैं और प्रकृति में जीवंत हैं।

क्या ऐसे मूल्यों की कोई सूची है जो सतत विकास की ओर ले जा सकती है? इसके उत्तर में हम पूछ सकते हैं कि क्या सतत विकास प्राप्त करने का कोई निश्चित मॉडल है? जिस तरह सतत विकास प्राप्त करने के लिए कोई निश्चित मॉडल नहीं है, उसी तरह, इसके लिए मूल्यों का एक निश्चित सेट निर्धारित करना मुश्किल है। हालाँकि, सतत विकास के लिए कुछ मूल्यों की पहचान की गई है। ये मूल मूल्यों का एक समूह हैं- शांति, मानवाधिकार, लोकतंत्र और सतत विकास और संबंधित मूल्य जो उनका समर्थन करते हैं।

शांति और सद्भाव में एक साथ रहना सीखना, शिक्षक शिक्षा और तृतीयक स्तर की शिक्षा के लिए UNESCO –APNIEVEस्रोतपुस्तिका में उपर्युक्त मूल मूल्यों और संबंधित मूल्यों को भी शामिल किया गया है। वे इस प्रकार हैं:

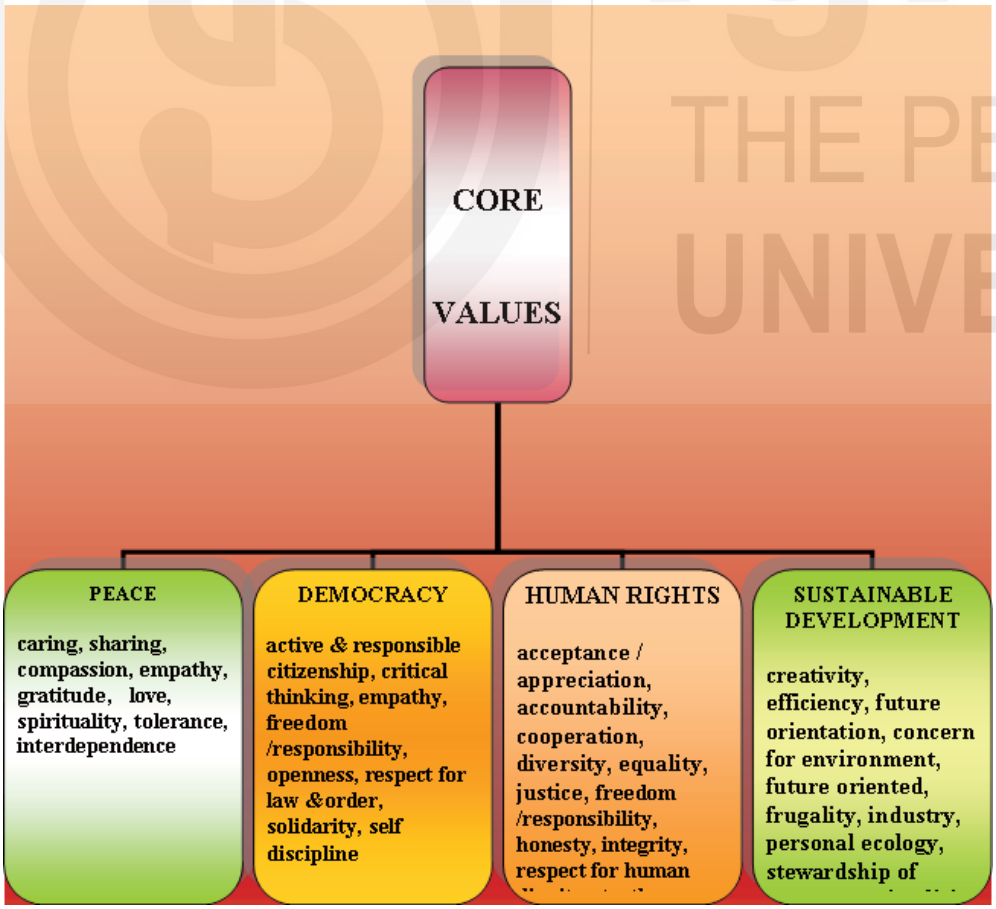

चित्र 3: मूल और संबंधित मूल्यों को शांति और सद्भाव में एक साथ रहने की आवश्यकता है

वे मूल्य जिनमें संबंधित मूल्य शामिल होते हैं उनकी निम्नलिखित रूप में पहचान की गई है:

शांति	मानव अधिकार	प्रजातंत्र	सतत विकास
प्रेम: आत्म-मूल्य, आत्म-सम्मान, विश्वास और सम्मान, सकारात्मक आत्म-आलोचना, खुलापन, जिम्मेदारी की गहरी भावना, दूसरों के लिए चिंता, वफादारी/निष्ठा, त्याग की भावना, मेल-मिलाप की भावना, साहस, सौम्यता, सहनशक्ति।	सत्य: अस्तित्व काअधिकार,बोलने,अभिव्यक्ति , विश्वास एवं पूजा की स्वतंत्रता	कानून एवं व्यवस्था कासम्मानअनुशासन , अधिकार का सम्मान, आपसी विश्वास	दक्षता/उद्योग: पारिस्थितिकस्थिरता , कड़ी मेहनत एवं उद्योग, अनुशासन तथा व्यावहारिक मानसिकता
करुणा: दयालुता, नैतिक शक्ति/धैर्य, दूसरों की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशीलता, सद्भावना, पोषण, समर्थन	जवाबदेही: व्यक्तिगत जिम्मेदारी, किसी के कार्य के परिणामों की स्वीकृति	स्वतंत्रता और उत्तरदायित्व: लोकतांत्रिक और उत्तरदायी जीवन शैली, अभिव्यक्ति और सच बोलने की स्वतंत्रता, दूसरों के अधिकारों के प्रति सम्मान	भविष्य अभिविन्यास: टिकाऊ भविष्य, वैकल्पिक भविष्य, दूरदर्शी अभिविन्यास, उद्देश्य की समझ
सद्भाव: आपसी विश्वास और समझ, अपनापन/सांस्कृतिक मूल्य की भावना, सहयोग/सहभागिता, प्रभावी संचार, सामान्य भलाई के लिए चिंता, मेल-मिलाप की भावना, सर्वसम्मति की इच्छा	जवाबदेही: व्यक्तिगत उत्तरदायित्व, किसी के कार्य के परिणामों की स्वीकृति	समानता: मानवीय गरिमा में विश्वास, दूसरों के अधिकारों, विशेषकर अल्पसंख्यकों एवं वंचितों के अधिकारों की मान्यता	पर्यावरणीय चिंता: पर्यावरण की देखभाल, पर्यावरणीय कार्रवाई
सहिष्णुता: आपसी सम्मान, वास्तविक स्वीकृति, आवास, व्यक्तिगत और सांस्कृतिक मतभेदों के लिए सम्मान, शांतिपूर्ण संघर्ष समाधान, संस्कृतियों की विविधता की स्वीकृति और सराहना (विविधता में एकता), अल्पसंख्यक समूहों और विदेशियों के लिए सम्मान, हास्य की भावना, शिष्टाचार, सौहार्द, ग्रहणशीलता	विविधताकीस्वीकृति/प्रशंसा: विभिन्न समुदायों की आस्था और संस्कृति और अन्य देशों की संप्रभुता के लिए सम्मान; अन्य देशों की संस्कृति का सम्मान, अल्पसंख्यक और वंचित समूहों के अधिकारों का सम्मान	आत्म अनुशासन: शिष्टाचार, मानवीय संपर्क में अच्छा व्यवहार, अहिंसक संघर्ष समाधान	संसाधनों का प्रबंधन: प्रकृति के प्रति श्रद्धा और जिम्मेदार खपत, सामाजिक न्याय, सामान्य हित की समझ

देखभाल और साझा करना: प्यार, चिंता, उदारता	स्वतंत्रता एवं उत्तरदायित्व: बोलने की स्वतंत्रता, पूजा की स्वतंत्रता, भय, अज्ञानता और भूख से मुक्ति, दूसरों के प्रति उत्तरदायित्व	सक्रिय और उत्तरदायी नागरिक: स्वयंसेवा केलिए तत्परता, नागरिकमानसिकता, भागीदारी में विश्वास	रचनात्मकता: भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक संसाधनों के संरक्षण में रचनात्मकता, पर्यावरणीय चिंताओं को हल करने में रचनात्मकता, लचीलापन, अनुकूलनशीलता
परस्पर निर्भरता: दूसरों के साथ और सृजन के साथ अंतर्संबंध कीभावना,वैश्वीकरण/राष्ट्रीयकरण और अंतर्राष्ट्रीयकरण, सहायक की भावना, अहिंसा, सक्रिय भागीदारी, राष्ट्रों के बीच वैश्विक समझ/पारस्परिक सम्मान, रचनात्मक और सामूहिक उत्तरदायित्व एवं सहयोग, परिवर्तन नेतृत्व, भविष्य के प्रति प्रतिबद्धता	सहयोग: दूसरों के साथ काम करने की तैयारी	ग्रहणशीलता: संवाद और परामर्श, बातचीत, वैज्ञानिक सत्य और सार्वभौमिक मूल्यों पर आधारित खुली मानसिकता	मितव्ययिता/सादगी: जीवन के प्रति श्रद्धा, जिम्मेदार उपभोग, संसाधनों का प्रभावी प्रबंधन
सहानुभूति: एक दूसरे की सराहना, जागरूकता, चिंता	सत्यनिष्ठा: नैतिक ईमानदारी, नैतिक व्यवहार	आलोचनात्मक सोच: तर्कसंगत विचार, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, प्रश्न पूछने वाला दिमाग, सत्य की खोज, सुविज्ञ निर्णय	व्यक्तिगत पारिस्थितिकी: जीवन के प्रति श्रद्धा (मानव एवं प्राकृतिक संसाधन), व्यक्तिगत देखभाल
आध्यात्मिकता: आंतरिक शांति, जीवन के प्रति श्रद्धा और सम्मान, किसी की भौतिक और आध्यात्मिक क्षमता में विश्वास, वास्तविक मानव विकास के प्रति प्रतिबद्धता, मानव आत्मा में विश्वास, विचार की स्वतंत्रता, समता/शांति/आंतरिक शक्ति, अखंडता, वास्तविकता, धार्मिकता, चिंतनशील रवैया /ध्यानमग्नता	ईमानदारी : कथनी एवं करनी में सामंजस्य	एकजुटता: सामूहिक निर्णय-निर्माण, सहयोग, टीम वर्क, समस्याओं का शांतिपूर्ण समाधान	
कृतज्ञता: प्रशंसा, सम्मान, स्वीकृति			

एसडी के लिए आवश्यक मूल्य हमें ज्ञात हो सकते हैं लेकिन जिन्हें समाज का समर्थन प्राप्त नहीं है उन्हें स्कूल व्यवस्था में नहीं पढ़ाया जा सकता है। इसलिए, ईएसडी में सामुदायिक

भागीदारी, सामग्री निर्धारण एवं इसके कार्यान्वयन दोनों में आवश्यक है। वर्तमान मूल्य प्रणाली संकेत देती है कि विशेषज्ञ को यह पता है कि आम आदमी नहीं जानता; पुरुष को पता है कि स्त्री नहीं जानती। गैर-आदिवासी जानता है, कि आदिवासी को नहीं पता (कार्यशाला सिफ़ारिशें, सतत विकास के लिए शिक्षा: मूल्य और परिप्रेक्ष्य स्थायी भविष्य के लिए शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, अहमदाबाद 2005)। ऐसे पूर्वाग्रहों को दूर करना और समुदाय के ज्ञान और मूल्य प्रणाली को संज्ञान में लेना और इसे आगे के विकास के लिए आधार बनाना आवश्यक है।

4.6 बच्चों में मूल्यों का विकास करना

पिछले अनुभाग में, हमने सतत विकास के लिए मूल्यों की एक सूची तैयार की है।मूल्यों का विकास अल्पकालिक नहीं हो सकता बल्कि लंबी अवधि तक शिक्षा की आवश्यकता होती है, जिसकआरंभ बचपन से ही किया जाना चाहिए जब भावी जीवन की नींव रखी जाती है। जैसा कि सुगरमैन (1973) ने ठीक ही कहा है कि आज सभी आर्थिक रूप से विकसित समाजों में यह मान लिया गया है कि पांच वर्ष से अधिक उम्र के बच्चे अपने दिन का एक बड़ा हिस्सा अपने परिवार से दूर स्कूलों में बिताएंगे जहां वे शिक्षकों के प्रभारी होंगे। . बच्चे के जीवन के कम से कम दस वर्ष इसी प्रकार व्यतीत होंगे। इसलिए, स्कूल का अपने विद्यार्थियों पर समग्र रूप से महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि शिक्षकों को मूल्यों के विकास की ज़िम्मेदारी लेनी होगी। चिंतनशील या अप्रतिबिंबित रूप से शिक्षक पुरस्कार एवं दंड, सुदृढीकरण तथा मॉडल के माध्यम से विद्यार्थियों को मूल्य सिखाते हैं। लेकिन ऐसे प्रयास सचेतन और जानबूझकर नहीं होते, बल्कि इन पर नियंत्रण नहीं होता है (रानी 2005)। मूल्य विकास के लिए स्कूल और शिक्षकों के सचेत, योजनाबद्ध और सुनियोजित प्रयासों की आवश्यकता होगी।

जैसा कि हार्ट (1997) ने व्यक्त किया थाकिहम प्रायः बच्चों को पर्यावरणीय समस्याओं, समानता, भागीदारी एवं ऐसे कई अन्य मुद्दों के बारे में शिक्षित करने का प्रयास करते हैं लेकिन इन समस्याओं के बारे में नहीं।बाद के मामले में, शिक्षा याद रखने और भूलने के लिए ढेर सारी जानकारी देने तक ही सीमित नहीं रहेगी बल्कि इसमें इन चुनौतियों का सामना करने के लिए जानकारी का आंतरिककरण, कौशल और दृष्टिकोण का विकास भी शामिल होगा।हमें छात्रों को सोचने, विचार करने, बहस पर चर्चा करने एवं जो सोचा और किया गया है उसे सुनने के बजाय कार्य करने की अनुमति देने की आवश्यकता है। बच्चों को भी यह समझने की आवश्यकता है कि कार्य 'किसी और' के बजाय 'हमें' करना है। इसके अलावा, केवल प्रत्यक्ष भागीदारी के माध्यम से ही बच्चों में लोकतंत्र की वास्तविक सराहना और भाग लेने की अपनी क्षमता और उत्तरदायित्व की भावना विकसित हो सकती है। इसलिए, बच्चों के लिए ग़रीबी, असमानता, संघर्ष, पर्यावरण और अन्य समकालीन चुनौतियों के मुद्दों के बारे में जागरूक होना और उन्हें संबोधित करने में भूमिका निभाना महत्वपूर्ण है क्योंकि वे सीधे स्कूल और समुदाय की गतिविधियों में भाग लेते हैं। यह ठीक ही कहा गया है कि "पर्यावरण के लिए शिक्षा वास्तविक पर्यावरणीय मुद्दों पर जांच और कार्रवाई की एक प्रक्रिया है।" ऐसी जांच प्रक्रिया की मांग है कि छात्र वास्तविक समस्याओं के बारे में आलोचनात्मक या सक्रिय सोच में संलग्न हों। ज्ञान, कौशल और मूल्यों का विकास न केवल कार्रवाई की ओर निर्देशित है बल्कि (यानी पूछताछ) की तैयारी और कार्रवाई के संदर्भ में उभरता है" (टिकाऊ दुनिया के लिए शिक्षण:

यूनेस्को - यूएनईपी आईईईपी, 1996, कृष्णकुमार, बब्लू मोहम्मद द्वारा उद्धृत) नज़ीर और महादेवन, जी., 2005)।बाल अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (सीआरसी) बच्चों को विकासशील नागरिकों के रूप में मान्यता देता है। तदनुसार, पर्यावरण आंदोलन में बच्चों की भागीदारी केवल मीडिया से बातें समेटनेतक ही सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसे उनके अपने दैनिक जीवन में शामिल किया जाना चाहिए।बच्चों को अपने पर्यावरण में सुधार एवं निरंतर निगरानी के लिए वयस्कों के बड़े समुदाय के साथ शामिल होने की आवश्यकता है।यह भी सत्य है कि हम पूरी तरह से पर्यावरण शिक्षा पर भरोसा नहीं कर सकते हैं जो विश्लेषणात्मक तरीके से पारिस्थितिक तंत्र की जटिलता को कम करती है और ग्रंथों या फिल्मों (या यहां तक कि एक ही क्षेत्र यात्रा में) में प्रस्तुत करती है; इसके बाद यह बच्चों से जटिलता का पुनर्निर्माण करने की अपेक्षा करता है। बल्कि, बच्चों की प्रकृति के संपर्क में रहने की स्वाभाविक इच्छा को लंबे समय तक संपर्क के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। इसलिए सतत विकास के लिए शिक्षा को अर्थव्यवस्था, राजनीति, प्राकृतिक पर्यावरण और सबसे बढ़कर समानता से संबंधित निर्णय लेने के लिए सीखने की एक प्रक्रिया होनी चाहिए (हार्ट 1997)। यह ठीक ही कहा गया है कि यद्यपि हम वर्तमान में पढ़ा रहे हैं, हम छात्रों को भविष्य के लिए तैयार कर रहे हैं। हमारे पाठ्यचर्या संबंधी उपकरणों की ताकत हमारे छात्रों के जीवन कार्यों के माध्यम से मापी जाती है। हमारी कार्यप्रणाली का प्रभाव अगली पीढ़ी द्वारा निर्धारित किया जाएगा (हास्किन, 1990)।

एसडी के लिए मूल्यों को विकसित करने के लिए गतिविधियों को सूचीबद्ध करना या एक मॉडल पाठ्यक्रम का वर्णन करना कठिन है। इसलिए एसडी की ओर ले जाने वाले लक्ष्यों के साथ व्यापक कार्यक्रम सुझाए गए हैं जिनके आधार पर आप अपने स्कूल और समुदाय की ज़मीनी हक़ीक़त के अनुसार विशिष्ट गतिविधियों के बारे में सोच सकते हैं।

शिक्षा को शिक्षा के चार स्तंभों पर केंद्रित करना होगा जिन पर UNESCO (Learning: The Treasure Within, 1996)ज़ोर दिया गया है।तदनुसार, बच्चों को पहले जानना सीखना चाहिए यानी समझने के उपकरण हासिल करने चाहिए और इस प्रकार न केवल प्राथमिक शिक्षा बल्कि आजीवन सीखने की क्षमता विकसितकरनी चाहिए, जो एसडी की एक शर्त है। दूसरे, उन्हें ऐसा करना सीखना चाहिए, ताकि वे अपने पर्यावरण पर रचनात्मक रूप से कार्य करने में सक्षम हो सकें जैसे इसकी रक्षा करना, संसाधनों को संरक्षित करना, हाशिए पर रहने वाले समूहों के साथ काम करना आदि। तीसरा, उन्हें एक साथ रहना सीखना चाहिए, यानी सहयोग करना और एक टीमके रूप में काम करना, मतभेद के प्रति सहनशीलता रखें और लोकतंत्र में विश्वास रखें। चौथा, बच्चों को 'होना' सीखना चाहिए यानी अपने जीवन में स्वतंत्र और आलोचनात्मक सोच के लिए व्यक्तित्व का समग्र विकास करना चाहिए। इसके लिए निम्नलिखित जैसे कि बहु-विषयक और बहु-संवेदी गतिविधियों को शामिल करने वाले एक प्रभावी पाठ्यक्रम की आवश्यकता है (बोस, 2008)।

a) **पोषण संबंधी गतिविधियाँ**: गतिविधियों की योजना बनानी होगी ताकि बच्चे अपने प्राकृतिक वातावरण का सम्मान करें और उसकी सराहना करें। कई स्कूलों में बच्चों को कक्षाओं तक सीमित रखने और उन्हें पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से पर्यावरण के बारे में सिखाने की प्रथा है (बोस, 2005)। जानकारी इस प्रकार किताबी है जो मूल्यों और दृष्टिकोणों में परिवर्तित नहीं हो सकती है। इसलिए, बच्चों को प्रकृति के सीधे संपर्क में आने और उसका पता लगाने के अधिक अवसर मिलने चाहिए। उन्हें पर्यावरण के विनाश की गवाही देने वाले स्थलों पर भी ले जाया जा सकता है। जैसा कि रॉबर्ट और डिसिंगर

(1988) द्वारा रेखांकित किया गया है, पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में जागरूकता सिखाने में बाहरी सेटिंग्स भी प्रभावी रही हैं। पर्यावरणीय समस्याओं वाले चयनित स्थलों की क्षेत्रीय यात्राएँ, कार्य परियोजनाएँ और केस अध्ययन जैसी रणनीतियाँ उन अनुभवों में से हैं जो सबसे प्रभावी रहे हैं।

b) **बच्चों को पर्यावरण से परिचित कराने के लिए मीडिया का उपयोग करना:** प्रिंट और ऑडियो-वीडियो मीडिया का युवा दिमाग पर एक शक्तिशाली प्रभाव है। रंगीन चित्रों, वीडियो, फिल्मों और टेलीविज़न कार्यक्रमों से भरपूर किताबें बच्चों पर गहरा प्रभाव डालती हैं। हालाँकि, इन्हें सावधानी से चुना जाना चाहिए। उन्हें तथ्यात्मकता से समझौता किए बिना पर्यावरण के बारे में सही जानकारी देनी चाहिए। अक्सर बच्चे अवतारवाद वाली कहानियों के माध्यम से जानवरों के बारे में सीखते हैं जो जानवरों को इंसानों की तरह व्यवहार करते हुए, घरों में रहते हुए, फ़र्नीचर का उपयोग करते हुए, कपड़े पहनते हुए, स्कूल जाते हुए आदि चित्रित करते हैं। इसलिए, अवतारवाद वाली पुस्तकों और ऑडियो-वीडियो कार्यक्रमों का संतुलन रखना अच्छा है। वे जो जानवरों को वैसे ही चित्रित करते हैं जैसे वे वास्तव में हैं।

c) **भूमिका निभाना:** पौधों तथा जानवरों की भूमिका निभाने वाले बच्चों के साथ भूमिका निभाने से उनमें उनके प्रति सहानुभूति पैदा हो सकती है। इसके अलावा, एक सफारी पर एक नायक की भूमिका निभाना जो बंदूक से नहीं बल्कि कैमरे से गोली चलाता है, एक पशुचिकित्सक जो जानवरों का इलाज करता है, छोटे बच्चों के प्रभावशाली दिमाग को प्रभावित कर सकता है।

d) **सांस्कृतिक गतिविधियाँ:** महाकाव्य और लोक कथाएँ, गीत और नृत्य, कठपुतली, नाटक जो मनुष्य और प्रकृति के बीच घनिष्ठ संबंध की बात करते हैं, बच्चों को सदियों पुरानी प्रथा के रूप में मनुष्य और पर्यावरण के बीच स्वस्थ संबंधों के बारे में पारंपरिक ज्ञान से परिचित करा सकते हैं।

e) **पुन: उपयोग, पुनर्चक्रण और खपत कम करना:** बेकार कागज, टूटे हुए कांच, धातु की चीजों का भंडारण करना और उन्हें पुनर्चक्रण के लिए भेजना, पुरानी किताबें पुस्तकालयों को दान करना, काग़ज़, रंगों और अन्य चीजों का किफ़ायती उपयोग करना, पॉलिथीन बैग को न कहना, कमरे से बाहर निकलते समय बिजली के उपकरणों को बंद करना यदि बचपन से ही अभ्यास किया जाए तो संरक्षण और अर्थव्यवस्था में जीवन भर चलने वाली आदत बन सकती है।

f) **लैंगिक समानता:** यूनेस्को के अनुसार, लैंगिक समानता की खोज सतत विकास के लिए महत्वपूर्ण है। महिलाओं के प्रति सामाजिक-सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों को दूर करने की ज़रूरत है और इसे शुरू करने का सही स्थान स्कूल हो सकते हैं। हमें लड़कियों की भागीदारी में आने वाली बाधाओं के प्रति जागरूक होने की आवश्यकता है। निर्धन परिवारों और कई समाजों में, घरेलू काम, खेतों में काम करना आदि लड़कियों को स्कूलों से दूर रखते हैं। वे निर्णय लेने में भी शामिल नहीं हो सकतीं (हार्ट, 1997)। इसलिए, स्कूलों में हमें ऐसे माहौल की आवश्यकता है जहां लड़कियों और लड़कों के साथ एक जैसा व्यवहार किया जाए ताकि इस संबंध में घर और समाज से जुड़े सामाजिक पैटर्न के प्रभाव को बेअसर किया जा सके।

g) **लोकतंत्र में विश्वास का पोषण:** बचपन से ही, भागीदारी प्रथाओं के माध्यम से लोकतंत्र को जीवन के तरीक़े में शामिल करना होगा। डेवी ने स्कूलों को समुदायों और शिक्षा को एक सामाजिक प्रक्रिया के समान बताया। नोम चॉम्स्की (1994) ने डेवी के इन विचारों को साझा किया और व्यक्त किया कि उत्पादन का अंतिम उद्देश्य समानता की शर्तों पर एक दूसरे से जुड़े स्वतंत्र मनुष्यों का उत्पादन है। इन विचारों को मूर्त रूप देने के लिए बच्चों को सामूहिक स्थितियों में सहयोगपूर्वक कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। संवादों को जीवन का एक तरीका बनाया जा सकता है। सहभागी शासन जिसमें लोग आवाजहीन न रहें, निर्णय लेने की प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभाते हैं और सतत विकास के लिए अपरिहार्य है। इसलिए समूह स्थितियों में बच्चों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में जागरूक करने की आवश्यकता है। गतिविधियों को इस तरह से डिज़ाइन किया जाना चाहिए कि बच्चे लक्ष्य साझा करें, एक रणनीति पर सहमत हों और सहयोगपूर्वक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए काम करें। जैसा कि हार्ट (1997) ने कहा था, ऐसे कई तरीके हैं जिनसे एक स्कूल समाज के लोकतांत्रिक रूप से सक्षम और जिम्मेदार सदस्यों के रूप में बच्चों के विकास को प्रभावित कर सकता है। वे निम्न हैं:

- बच्चों के साथ शिक्षकों के संबंधों की प्रकृति, जिसमें नियम निर्धारित करने और अनुशासन प्रशासित करने का तरीका भी शामिल है
- किस हद तक पाठ्यक्रम बच्चों को निर्णय लेने की अनुमति देता है और दूसरों के साथ सहयोग को प्रोत्साहित करता है।
- स्कूल के प्रशासन में बच्चे किस हद तक शामिल हैं
- पाठ्यक्रम किस हद तक बच्चों और उनके समुदाय के दैनिक जीवन से संबंधित है
- स्कूल की लोकतांत्रिक संरचनाओं का आसपास के समुदाय से संबंध
- पाठ्यक्रम।

h) **समावेशन की ओर:** सतत विकास के लिए यह महत्वपूर्ण है कि समाज समावेशी हो और विकलांगों को हाशिए पर न रखा जाए। इसलिए शिक्षा को समावेशी बनाना होगा। समावेशी शिक्षा से संबंधित ईएफए फ्लैगशिप का एक उद्देश्य सभी बच्चों को उनके पारस्परिक लाभ के लिए एक साथ शिक्षित करना है। दूसरा उद्देश्य एक न्यायसंगत और भेदभाव रहित समाज का आधार बनाकर ऐसे बच्चों के प्रति दृष्टिकोण बदलना है जो लोगों को एक साथ रहने और सीखने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह सही ढंग से वकालत की जा रही है कि मानवीय मतभेद स्वाभाविक हैं और हर समाज की समृद्धि में योगदान करते हैं और इसे स्कूलों में प्रतिबिंबित किया जाना चाहिए (यूनेस्को, 2004)। आज भारत में, विकलांग बच्चों को अक्सर अलग-अलग स्कूलों में हाशिए पर रखा जाता है या यहां तक कि उन्हें शिक्षा के बिना ही छोड़ दिया जाता है। इसलिए छोटी उम्र से ही बच्चे दिव्यांगों को दूर रखना सीख जाते हैं। एमएचआरडी ने 2005 में योजना बनाई थी कि समावेशी शिक्षा की दिशा में हस्तक्षेप का पहला स्तर ECCE स्तर पर ICDS के माध्यम से होगा (विकलांग बच्चों और युवाओं की समावेशी शिक्षा के लिए कार्य योजना, MHRD, 20 अगस्त, 2005)।

i) **गंभीर रूप से सोचने एवं समस्याओं को हल करने की क्षमता का पोषण:** प्री-स्कूल अवस्था से हीबच्चों को जानकारी को रटने और मूल्यांकन के दौरान इसे पुन: पेश करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है (बोस, 2005)। यह अभ्यास गंभीर रूप से सोचने और समस्याओं को हल करने की क्षमताओं का पोषण नहीं कर सकता है, जो जीवन भर सीखने और सामाजिक एवं राजनीतिक घटनाओं में भाग लेने के लिए आवश्यक है। लोगों के सशक्तिकरण के लिए मूल रूप से सोचने, सवाल उठाने, समाधान खोजने, रणनीतिक विकल्प चुनने और अधिकारों के बारे में जागरूकता जैसी क्षमताओं की आवश्यकता होती है। इसलिए ऐसी गतिविधियाँ डिज़ाइन की जानी चाहिए जिनमें बच्चों को सोचने और निर्णय लेने की आवश्यकता हो। बच्चों से 'क्या' के बजाय 'क्यों' 'कैसे' पूछना, उन्हें अपनाए गए रुख के औचित्य के साथ कहानी को अपने तरीके से पूरा करने के लिए कहना जैसी गतिविधियाँ सोचने की क्षमता को बढ़ावा दे सकती हैं। जैसा कि रॉबर्ट और वॉरेन (1989) ने कहा था, यदि व्यक्तियों को हमारे वर्तमान और बदलते समाज में प्रभावी ढंग से रहना, काम करना और कार्य करना है तो गंभीर रूप से सोचने की क्षमता आवश्यक है। पर्यावरणीय समस्याओं के व्यावहारिक समाधान विकसित करने के लिए जानकारी और राय की आलोचनात्मक जांच के आधार पर विकल्पों और निर्णयों की आवश्यकता होगी।

j) **संचार कौशल विकसित करना:** बच्चों को बाद में सामाजिक प्रक्रियाओं में भाग लेने के लिए आवश्यक संचार कौशल के विकास में मदद की जानी चाहिए। बच्चों द्वारा घटनाओं, कहानियों और प्रसंगों को तात्कालिक रूप से सुनाने को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि मौखिक संचार में झिझक दूर हो।

k) **सांस्कृतिक विविधता का सम्मान:** 2001 में सांस्कृतिक विविधता पर सार्वभौमिक घोषणा ने सांस्कृतिक विविधता को मानवता की साझी विरासत के दर्जे तक बढ़ा दिया है। यह सांस्कृतिक विविधता को गरीबी उन्मूलन और सतत विकास के लिए एक परिसंपत्ति के रूप में भी मानता है। ईएसडी के प्रमुख कार्य विषयों में से एक सांस्कृतिक विविधता से संबंधित है और जोहान्सबर्ग घोषणा, 2002 (सतत विकास पर विश्व शिखर सम्मेलन, 2002 में अपनाया गया) के अनुसार, संस्कृतियों को जीवित और गतिशील संदर्भों के रूप में सम्मानित किया जाना चाहिए जिसके भीतर मनुष्य अपने मूल्यों एवं पहचान खोजते हैं। इसलिए, यह सुनिश्चित करने के लिए प्रारंभिक अवस्था से शिक्षा की आवश्यकता है कि बच्चे संस्कृतियों में विविधता को प्राकृतिक और मानवता की सामूहिक विरासत मानें। लोक कथाएँ, गीत, वेशभूषा, विभिन्न समुदायों के त्योहारों का उत्सव, बच्चों को विभिन्न संस्कृतियों में निहित सांस्कृतिक विविधता से परिचित करा सकते हैं। यह समृद्ध सांस्कृतिक विविधता को संरक्षित एवं प्रसारित करने में मदद कर सकता है और बदले में सतत विकास को सुविधाजनक बना सकता है।

l) **सीखने के एक उपकरण के रूप में आईसीटी की भूमिका से परिचित होना:** सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) तक पहुंच से सशक्त लोगों और इसकी पहुंच के कारण हाशिए पर रहने वाले लोगों के बीच एक डिजिटल विभाजन है। हालाँकि, आईसीटी तक पहुँचने में असमर्थता न केवल इसकी अनुपलब्धता के कारण है, बल्कि इसे संचालित करने के कौशल की कमी और व्यवहारिक समस्याओं जैसे कारकों के कारण भी है जो अक्सर इसके उपयोग के रास्ते में आती हैं। शिक्षा और मनोरंजन के लिए

मल्टीमीडिया सीडी और मल्टीमीडिया में सामग्री के साथ कंप्यूटर सहायता प्राप्त शिक्षण कार्यक्रम जब कक्षाओं में उपयोग किए जाएंगे तो बच्चों को सीखने के लिए उपकरण के रूप में आईसीटी का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

m) **जीवन कौशल शिक्षा:**Dakar Framework for Action (2000)के अनुसार, युवा लोगों की सीखने की जरूरतों को साक्षरता/संख्यात्मकता, लैंगिक समानता और प्रारंभिक बचपन की शिक्षा से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्यों के साथ-साथ प्रमुख लक्ष्यों के रूप में उचित शिक्षण और जीवन कौशल कार्यक्रमों तक समान पहुंच के माध्यम से पूरा किया जाता है। EFA-ग्लोबल मॉनिटरिंग रिपोर्ट (2008) जीवन कौशल विकास, रोजगार योग्यता और सामुदायिक विकास के बीच महत्व पर जोर देती है। यह औपचारिक शिक्षा प्रणालियों के पाठ्यक्रम में जीवन कौशल शिक्षा को शामिल करने की भी गारंटी देता है। एड्स, संघर्ष, लैंगिक असमानता, भेदभाव और सामाजिक संकट के ऐसे अन्य कारणों जैसी समस्याओं से निपटने के लिए जीवन कौशल शिक्षा की पुरज़ोर वकालत की जाती है, जिसे सतत विकास के लिए भी प्रदान किया जा सकता है। ऐसी गतिविधियाँ जो आलोचनात्मक सोच, निर्णय लेने, समस्या समाधान, संचार, सहानुभूति, बातचीत करना, जोर देना, इनकार करना, प्रतिबिंबित करना, अनुनय करना, एक टीम में काम करना आदि की क्षमताओं का विकास करती हैं, उन्हें स्कूल में किया जाना चाहिए।

n) **स्कूल और समुदाय के बीच साझेदारी:** स्कूलों और समुदाय को एक साथ काम करने की आवश्यकता है। बच्चे पर्यावरण को बचाने और सुधारने के लिए गश्त करना, शिक्षित करना, रिपोर्ट करना और अभियान चलाना, कचरे को रोकना, पुनर्चक्रण, सफाई, साझा करना और देखभाल करना, हरियाली बढ़ाना, किसी स्मारक को गोद लेना और उस पर से भित्तिचित्र हटाना, उसके आस-पास को साफ रखना आदि गतिविधियाँ भी कर सकते हैं। पसंद करना; वरिष्ठ नागरिकों को स्कूलों में आमंत्रित किया जा सकता है ताकि वे अपने बचपन के दिनों और वर्तमान दिनों के वातावरण का वर्णन कर सकें।

o) **ग्रीन क्लब:** यह जागरूकता पैदा करने, दृष्टिकोण बनाने और छात्रों को वास्तविक दुनिया में पर्यावरणीय गतिविधियों को अपनाने में मदद करने का एक शानदार अवसर प्रदान कर सकता है।गतिविधियां अपेक्षाकृत सरल हो सकती हैं, जैसे स्कूल के आसपास साफ-सफाई रखना से लेकर पर्यावरणीय मुद्दों के निर्धारण के लिए इलाके का सर्वेक्षण करना और उन पर कार्रवाई करना जैसी जटिल गतिविधियां। क्लब की एक पहचान हो सकती है और इसलिए एक लोगो, एक नाम हो सकता है। इसमें अध्यक्ष, सचिव, सामग्री प्रबंधक, कोषाध्यक्ष जैसे निर्वाचित पदाधिकारी भी हो सकते हैं। क्लब के सदस्यों के पास एक बैज भी हो सकता है और वे प्रतिज्ञा ले सकते हैं, गीत बना और गा सकते हैं। स्कूल के शिक्षक, छात्र और कर्मचारी, माता-पिता और समुदाय के सदस्य क्लब की गतिविधियों में शामिल हो सकते हैं (द ग्रीन क्लब 1997)।

गतिविधि: पांच गतिविधियों की सूची बनाएं जिन्हें स्कूल ग्रीन क्लब द्वारा किया जा सकता है।

4.7 केस स्टडीज़

इस अनुभाग में आप सतत विकास के लिए मूल्य शिक्षा की दिशा में स्कूलों द्वारा किए गए प्रयासों पर दो केस अध्ययन पढ़ेंगे:

निकारागुआ से केस अध्ययन1983 से, CISAS (Centro de informacion y servicios de AsesoriaenSalud) निकारागुआ में हर एक बच्चे के दृष्टिकोण और कार्यप्रणाली को बढ़ावा दे रहा है। वार्षिक राष्ट्रीय कार्यशालाएँ विभिन्न क्षेत्रों के बच्चों को अपने स्थानीय सामुदायिक बच्चा-बच्चा परियोजनाओं के माध्यम से मिलने और अनुभव साझा करने में सक्षम बनाती हैं। हाल ही में मानागुआ में बच्चों की टीमों द्वारा उनके समुदाय में प्राथमिकताओं के रूप में निम्नलिखित की पहचान की गई; बेरोजगारी, आर्थिक समस्याएँ, पर्याप्त किफ़ायती स्कूलों की कमी, स्वास्थ्य केंद्रों की कमी, समुदाय में संगठन की कमी, गंदी खाइयाँ, अशुद्ध जल स्रोत, मरम्मत की आवश्यकता वाली सड़कें और खाइयों में काला पानी। बच्चे इन्हें प्राथमिकता देने में सक्षम थे और यह निष्कर्ष निकालने में सक्षम थे कि सामुदायिक संगठन की कमी सभी समस्याओं का मूल कारण थी। 'संगठन' की समस्याओं को देखना शुरू करने के तरीके के रूप में बच्चों ने कचरा साफ़ करने के लिए स्वयं और दूसरों को संगठित करने का निर्णय लिया।

स्रोत: हार्ट, आर.ए. (1997) बच्चों की भागीदारी, लंदन: यूनिसेफ, अर्थस्कैन पब्लिकेशंस लिमिटेड पृष्ठ 125।

नदियों के पाठ्यक्रम परियोजना पर केस अध्ययन से एक अंश: नदियों के पाठ्यक्रम परियोजना संयुक्त राज्य अमेरिका में मिसिसिपी और निचली इलिनोइस नदियों के किनारे आठ उच्च विद्यालयों में एक प्राथमिक नदी नमूना कार्यक्रम के रूप में शुरू हुई। यह परियोजना पानी की निगरानी से आगे बढ़कर कविता, रचनात्मक लेखन, गीत, लोकगीत, कलाकृति और नदियों के सामाजिक और आर्थिक इतिहास पर शोध को शामिल करने के लिए आगे बढ़ी और निश्चित रूप से इसने छात्रों को पानी की गुणवत्ता पर काफी सक्रियता के लिए प्रेरित किया है। छात्र नौ प्रकार के जल गुणवत्ता परीक्षण करते हैं। वे आवास के रूप में पानी की गुणवत्ता के संकेतक के रूप में छोटे कीड़े और जलीय जानवरों को भी एकत्र करते हैं। डेटा को जल गुणवत्ता सूचकांक में बदल दिया जाता है और इलेक्ट्रॉनिक नेटवर्क के माध्यम से अन्य छात्रों के साथ साझा किया जाता है।स्रोत: हार्ट, आर.ए. (1997) बच्चों की भागीदारी, लंदन:यूनिसेफ, अर्थस्कैन पब्लिकेशंस लिमिटेड पृष्ठ 58

बोध प्रश्न 2

i) लोकतांत्रिक समाज के लिए आवश्यक किन्हीं तीन मूल्यों की चर्चा करें।

……

……

……

ii) कुछ ऐसी गतिविधियों का उल्लेख करें जिनसे खुली मानसिकता का विकास हो सके।

……

……

iii) हम बच्चों में लैंगिक संवेदनशीलता कैसे विकसित कर सकते हैं?

……

……

iv) ग्रीन क्लब गतिविधियाँ क्या हैं?

.....

.....

.....

4.8 सारांश

सतत विकास वह विकास है जो भविष्य की पीढ़ियों की अपनी आवश्यकताएंपूरी करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताएंपूरी करता है। पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व और समावेशी विकास के लिए इसकी अनिवार्यता को देखते हुए, यह एमडीजी में से एक है। इस प्रकार के विकास के लिए मौलिक मूल्य और शिक्षा हैं क्योंकि शक्तिशाली साधन एजेंडा 21 ने शिक्षा को सतत विकास प्राप्त करने का एक प्रभावी साधन माना है और संयुक्त राष्ट्र ने 2005-2014 को सतत विकास के लिए शिक्षा दशक (ESD) के रूप में घोषित किया है। इसलिए, स्कूलों में दी जाने वाली शिक्षा और विशेष रूप से औपचारिक शिक्षा जो लाखों छोटे बच्चों तक पहुँचती है, मूल्य विकास का प्रमुख साधन है। एसडी के लिए मूल्यों की शिक्षा केवल प्राकृतिक वातावरण तक ही सीमित नहीं होनी चाहिए बल्कि इसमें सामाजिक-आर्थिक सरोकार भी शामिल होने चाहिए। यह भी भागीदारी आधारित होना चाहिए।

हालाँकि कुछ विचारधाराओं में मूल्यों को गतिशील माना जाता है, फिर भी प्रेम, करुणा, दूसरों के प्रति सम्मान, खुली मानसिकता, न्याय, शांति, तर्कसंगतता और संयम जैसे कुछ मूल्य हैं जो समय की कसौटी पर खरे उतरे हैं और प्रकृति में शाश्वत हैं। मूल मूल्यों का एक सेट - शांति, मानवाधिकार, लोकतंत्र और सतत विकास और संबंधित मूल्य जो उनका समर्थन करते हैं, एसडी के लिए आवश्यक के रूप में उनकी पहचान की गयी है।

ऐसे मूल्यों को स्थापित करने के लिए हमें बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। ज्ञान प्रदान करना ही पर्याप्त नहीं है; बल्कि बच्चों को ऐसी गतिविधियों की आवश्यकता होती है जिनमें कार्यों के लिए तैयारी करना और उसके बाद स्वयं कार्य करना शामिल हो। स्कूल के वातावरण को भी मूल्य विकास के लिए पाठ्यक्रम का समर्थन करना चाहिए। इसलिए, समावेशी शिक्षा, लैंगिक संवेदनशीलता, समुदाय के साथ जीवंत साझेदारी, विविधता को महत्व देने वाली सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि स्कूल के माहौल का अभिन्न अंग होनी चाहिए।

4.9 बोध प्रश्न के उत्तर

बोध प्रश्न 1

i) प्राकृतिक पर्यावरण को संरक्षित करने के प्रयास विफल हो जाएंगे यदि यह गरीबों से उनके जीवन और आजीविका के अधिकार को छीन लेता है। इससे सामाजिक संरचना को अस्थिर करते हुए भारी हाशिये पर जाने को भी बढ़ावा मिलेगा।

ii) सतत विकास मूल्यों के बारे में है और शिक्षा मूल्यों को विकसित करने का सर्वोत्तम साधन है।

बोध प्रश्न 2

i) खुले दिमाग वाला तर्कसंगत, सहनशीलता।

ii) अनुभव, बहस, विचार-मंथन साझा करना

iii) भूमिका संबंधी रूढ़िवादिता से बचना, महिलाओं आदि की सफलता की कहानियों को उजागर करना।

iv) ग्रीन क्लब गतिविधियाँ जागरूकता पैदा करने, दृष्टिकोण बनाने और वास्तविक दुनिया में पर्यावरणीय गतिविधियों को अपनाने में छात्रों की मदद करने का एक शानदार अवसर प्रदान करती हैं। की जाने वाली गतिविधियाँ अपेक्षाकृत सरल हो सकती हैं, जैसे स्कूल के आसपास साफ-सफाई रखना से लेकर पर्यावरण संबंधी मुद्दों का निर्धारण करने और उन पर कार्रवाई करने के लिए इलाके का सर्वेक्षण करना जैसी जटिल गतिविधियाँ।

4.10 सन्दर्भ

विकलांग बच्चों और युवाओं की समावेशी शिक्षा के लिए कार्य योजना, एमएचआरडी, 20 अगस्त 2005। http://education.nic.in/INCLUSIVE.asp#top 11.11.08 को पुनःप्राप्त।

बंधु, डी. और औलख, जी.एस. (1981) डी.बंधु और जी.एस. औलख (सं.) में 30-31 जुलाई 1979 को भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली में उच्च पर्यावरण शिक्षा पर आयोजित सेमिनार की रिपोर्ट। देहरादून: नटराज प्रकाशन। पीपी1-4.

बोस, एस.(2005)। "प्रीस्कूलों में विज्ञान पढ़ाने की पद्धति: एक अन्वेषण", शिक्षा में नए मोर्चे, 35(1)। पीपी 51-54.

बोस, एस. (2008). प्रारंभिक बचपन की देखभाल और शिक्षा के माध्यम से एजेंडा 21 को संबोधित करना: उन्हें कम उम्र में पकड़ना। शिक्षक शिक्षा.42. (1 एवं 2) पृष्ठ 48-60

बोसेल, एच. (1998)। पृथ्वी एक चौराहे पर, यूके: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस। पी7, पी87-पी97

ब्रंटलैंड, जी. (सं.), (1987), "हमारा साझा भविष्य: पर्यावरण और विकास पर विश्व आयोग", ऑक्सफ़ोर्ड, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

डेलॉरसेट अल.(1996)। सीखना: भीतर का खजाना। इक्कीसवीं सदी के लिए शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय आयोग की यूनेस्को को रिपोर्ट करें"।

शिक्षा, समावेशी शिक्षा, यूनेस्को, 2004 (http://portal.unesco.org/education/en/ev.php-URL_ID=12078&URL_DO=DO_PRINTPAGE&URL_SECTION=201.html) 20.2.08 को पुनःप्राप्त।

सतत विकास के लिए शिक्षा संयुक्त राष्ट्र दशक (2005-2014)। लैंगिक समानता

http://portal.unesco.org/education/en/ev.php-URL_ID=27549&URL_DO=DO_TOPIC&URL_SECTION=201.html(20.2.08 को पुनःप्राप्त)

ईएफए ग्लोबल मॉनिटरिंग रिपोर्ट 2008। 2015 तक सभी के लिए शिक्षा क्या हम इसे

बनाएंगे? यूनेस्को 2008.

हार्ट, आर.ए. (1997) बच्चों की भागीदारी, लंदन: यूनिसेफ, अर्थस्कैन पब्लिकेशंस लिमिटेड पी59।

हास्किन, जे. (1990) संयुक्त राज्य अमेरिका में पर्यावरण शिक्षा: वर्तमान में शिक्षण,

छात्रों को भविष्य के लिए तैयार करना। यह लेख 19 फरवरी, 1999 को टोक्यो, जापान में पर्यावरण शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत एक पेपर से लिया गया है।

होवे, रॉबर्ट डब्ल्यू. - वॉरेन, चार्ल्स आर.(1989)। गहन चिंतन को पढ़ाना

पर्यावरण शिक्षा.ERIC पहचानकर्ता: ED324193, विज्ञान गणित और पर्यावरण शिक्षा कोलंबसOH के लिए ERIC क्लियरिंगहाउस। ईआरआईसी/एसएमईएसी पर्यावरण शिक्षा डाइजेस्ट संख्या 2।

केट्स, आर.डब्ल्यू., पैरिस, टी.एम. और लीज़रविट्ज़, ए.ए. (2005).सतत विकास क्या है? लक्ष्य, संकेतक, मूल्य और अभ्यास। पर्यावरण: सतत विकास के लिए विज्ञान और नीति, 47, (3), पीपी8-21।

http://www.hks.harvard.edu/sustsci/ists/docs/whatisSD_env_kates_0504.pdf 25/8.09 को पुनःप्राप्त।

कृष्णकुमार, जी. बब्लू मोहम्मद नज़ीर। जे.एस. महादेवन, जी. (2005)। आपका परिसर कितना हरा-भरा है। द हिंदू, 13 सितंबर 2005।

http://www.hindu.com/edu/2005/09/13/stories/2005091300040100.htm27.8.09 को पुनःप्राप्त

शांति और सद्भाव में एक साथ रहना सीखना-ए यूनेस्को-एपीएएनआईईवीई सोर्सबुक

शिक्षक शिक्षा और तृतीयक स्तर की शिक्षा। एशिया और प्रशांत के लिए यूनेस्को प्रधान क्षेत्रीय कार्यालय, बैंकॉक.1998।

30-31 जुलाई, 1979 को भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली में आयोजित उच्च पर्यावरण शिक्षा पर सेमिनार की डी.बंधु और जी.एस. औलख (एड्स) में माथुर और पाल (1981) की रिपोर्ट। देहरादून: नटराज प्रकाशन। पीपी31-39.

नोम चॉम्स्की (1994)। लोकतंत्र और शिक्षा. मेलन व्याख्यान, लोयोला विश्वविद्यालय,

शिकागो. अक्टूबर 19,1994.

http://www.zmag.org/chomsky/talks/9410-education.html20.2.08 को पुनःप्राप्त

रानी, एस. (2005)। मूल्य शिक्षा के दृष्टिकोण और यू.आर.नेगी (एड.) में स्कूल और पाठ्यक्रम की भूमिका, भारत में मूल्य शिक्षा। नई दिल्ली: भारतीय विश्वविद्यालयों का संघ। पी. 49.

पर्यावरण एवं विकास पर विश्व आयोग की रिपोर्ट (1987)। हमारा साझा भविष्य: पर्यावरण और विकास पर विश्व आयोग ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, ऑक्सफोर्ड।

रॉबर्ट, एच.डब्ल्यू, और डिसिंगर, जे, एफ(1988) आउट-ऑफ़-ऑफ़ का उपयोग करके पर्यावरण शिक्षा पढ़ाना

स्कूल सेटिंग्स और मास मीडिया। एरिक पहचानकर्ता: ED320759 प्रकाशन दिनांक: 1988-00-00 लेखक: रॉबर्ट, एच.डब्ल्यू. डिसिंगर, जे, एफ. स्रोत: विज्ञान गणित और पर्यावरण शिक्षा कोलंबसओएच के लिए एरिक क्लियरिंगहाउस। ईआरआईसी/एसएमईएसी पर्यावरण शिक्षा डाइजेस्ट संख्या 1, 1988।

सतत विकास विकिपीडिया

http://en.wikipedia.org/wiki/Sustainable_development। 20.2.08 को पुनःप्राप्त

सुगरमैन (1973)। स्कूल और नैतिक विकास. लंदन: क्रूम हेल्म. पृष्ठ 11

कार्रवाई के लिए डकार फ्रेमवर्क। सभी के लिए शिक्षा: हमारी सामूहिक प्रतिबद्धताओं को पूरा करना। यूनेस्को, 2000।

ग्रीन एक्शन गाइड, पर्यावरण सुधार की योजना और प्रबंधन के लिए एक मैनुअल

परियोजनाएं। पर्यावरण शिक्षा केंद्र, अहमदाबाद। 1997.पी1

ग्रीन क्लब: पर्यावरण के लिए क्लब स्थापित करने और चलाने के लिए एक गाइड, केंद्र

पर्यावरण शिक्षा के लिए, अहमदाबाद 1997.पीपी1-39

एक स्थायी विश्व के लिए प्रयासरत। कार्यशालाओं से सिफ़ारिशें, शिक्षा के लिए

सतत विकास: मूल्य और परिप्रेक्ष्य टिकाऊ भविष्य के लिए शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 18-20 जनवरी, 2005 को अहमदाबाद में पर्यावरण शिक्षा केंद्र।

उमा देवी, डी. और रेड्डी, पी.ए. (2007)। ग्रामीण आबादी के लिए पर्यावरण शिक्षा। नया

दिल्ली: डिस्कवरी प्रकाशन। पीपी 1-3.

यूनेस्को, http://www.unesco.org/en/esd/ 21/9/09 को पुनःप्राप्त